

Vol. I  
No. 1



*Tuesday*  
*9th March, 1951*

**HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY**  
**DEBATES**  
**Official Report**

**PART II—PROCEEDINGS OTHER THAN QUESTIONS  
AND ANSWERS**

**CONTENTS**

	<b>PAGES</b>
Budget General Discussion . . . . .	<b>529-587</b>

GOVERNMENT PRESS  
HYDERABAD-DN.  
1951



# THE HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY

Tuesday, the 9th March, 1954.

The House met at Half Past Two of the Clock

[ *Mr. Speaker in the Chair* ]

## QUESTIONS & ANSWERS

(SEE PART I.)

### BUDGET—GENERAL DISCUSSION

*Mr. Speaker* : We shall now proceed to the other item on the agenda.

శ్రీ గోపిడి గంగారెడ్డి (నిర్దేశ-జనరల్) :

పూజనీయ సభాపతి, స్వామీ!

నిన్న నేను అటవీశాఖ గురించి మాట్లాడుతూ సమయం అయిపోవడంవల్ల మరల నేడు....

మీస్టర్ స్పీకర్ - ఆరీబిల్ మمبر یہ ملحوظ رکھیں کہ کل وہ کافی وقت لے چکے ہیں۔

శ్రీ గోపిడి గంగా రెడ్డి :—काफी बक्त नहीं लिया हूं लेकिन कल के अितना बक्त में आज नहीं लूंगा।

मिस्टर स्पीकर - آپ تو ہندی میں تقریر کر سکتے ہیں .. اگر آپ یہ چاہتے ہیں کہ بعض آئریبل ممبرس آپ کی تقریر سمجھنے سے محروم رہیں اور آپ کی تقریر ان کے لئے دلچسپی کا باعث نہ ہو تو یہ اور بات ہے لیکن اگر آپ ایسا نہیں چاہتے تو ہندی میں کہیں۔

श्री गोपिडी गंगा रेड्डी :—चीफ मिनिस्टर तेलगु जान सकते हैं जिस लिये कैरा ब्याब देने में उनको दिक्कत नहीं होगी।

میسٹر اسپیکر - خیر آپ کو شش تو کہجئے۔

श्री गोपिडी गंगा रेड्डी :—हिंदी में बोझों की कोशिश करूंगा तो कुछ जनपार्लियामेंटरी ( ) के मत के विचार बाव, जिसका मुझे डर मालूम होता है। दूसरी बात यह है कि मैं हिंदी में बात कर के नहीं बोल सकता।

डेप्युटी मिनिस्टर फॉर अज्यूकेशन अँड लोकल गवर्नमेंट ( श्रीमती संपतरलक्ष्मीयाणी ) :— तेलंगू में बहुत खराब बोलते हैं अिमलिये आपको हिंदी में ही बोलना चाहिये।

श्री. गोपिडी पंगारेडुडी :—अध्यक्ष नहोदय, कल मैं जंगलात के बारे में कह रहा था अुतने में ही सभा का समय खतम हो गया। जंगलात के अंदर जो खराबियां हैं वह बहुत बड़ी नहीं हैं अैसा समझना बड़ी गलती होगी। जंगलात का जब गुत्ता दिया जाता है तो लकड़ी काटने के बाद वहां जो कचरा पड़ा रहता है अुसको साफ करने की जिम्मेदारी गुत्तेदार पर होती है। लेकिन गुत्तेदार अिस काम को नहीं करते, क्योंकि गुत्ते में अुनको जितना पैसा मिलता है अुससे ज्यादा अिस सफाअी में ही निकल जाता है। अिसकी तरफ गवर्नमेंट तबज्जह नहीं देती। गुत्तेदार सौ दो सौ रुपये अमीन साहब, या मददगार साहब को देता है और अुस सफाअी की जिम्मेदारी अुन पर डाल देता है। अमीन साहब या मददगार साहब सब कचरा अेक जगह जमा करते हैं, अुसको आग लगा देते हैं। नतीजा यह हो जाता है कि कभी कभी सब जंगल को आग लग जाती है और अुस में जो छोटे छोटे झाड़ों के पीदे होते हैं वे भी जल जाते हैं और अिस तरह से पूरे जंगलात की खराबी होती है। हर बजट सेशन में हम गवर्नमेंट का ध्यान अिस तरह की चीजों की तरफ दिलते हैं लेकिन गवर्नमेंट अुनकी तरफ ध्यान नहीं देती। गवर्नमेंट को चेहरा माना जाता है और अपोजीशन को आयना माना जाता है। चेहरा आयने में देखा जाता है, लेकिन अपना चेहरा ठीक न होने वाले लोग आयने को फेंक देते हैं, वे नहीं समझते कि अुनको चेहरा ठीक नहीं है, आयने का अुसमें दोष नहीं है। अुसी तरह से अपोजीशन जो हुकूमत की खामियां बतलती है अुनकी तरफ हुकूमत को तबज्जह देनी चाहिये।

तामीरात के बड़ बड़े अिजीनिअर्स होते हैं और अुनको हृद से ज्यादा नतस्वाह दी जाती है लेकिन आज तक अुन्होंने प्रोजेक्ट्स के लिये जो अेस्टीमेट्स बनाये अुनमे से कौनसे सही रहे हैं? हमेशा गलत अेस्टीमेट्स किये जाते हैं। जहां दो रोड का अेस्टीमेट किया जाता है वहां १२ करोड खर्च करने पड़ते हैं। ये अेस्टीमेट्स बनाते वक्त अुनको काविलियत न जाने कहां जाती है। अेक अनपढ़ और अैलाडी किसन जिसको आप कहते हैं वह भी अपनी खेती को सुधारने के लिये दो रुपये का जहां अंदाजा लगाता है वहां ८ रुपये खर्च नहीं करता। अुसका अंदाजा अिनसे कअी गुना ज्यादा सही होता है। लेकिन ये लोग जितनी तनस्वाह पाते हैं अुससे २० गुना ज्यादा भत्ता लेते हैं लेकिन अेस्टीमेट्स बराबर नहीं करते। अिस तरह से हमारी हुकूमत को जंग लगा दिया गया है लेकिन हमारी गवर्नमेंट अिसकी तरफ ध्यान नहीं देती।

अिसके बाद मैं हुकूमत से पूछना चाहता हूं कि डेप्युटी कलेक्टर, डेप्युटी मिनिस्टर यह सब डेप्युटी, डेप्युटी का ओहदा किस लिये रखा गया है। किसी काम के लिये जाओ तो ये लोग हमको अिधर जाओ, अुधर जाओ कहकर सिर्फ रास्ता बतलते हैं जैसे कि चौरहे पर अेक कान्स्टेबल साअिड बताता है। तहसीलदार के पास जाओ तो वे कलेक्टर की तरफ साअिड बताते हैं, डेप्युटी मिनिस्टर की तरफ जाओ तो वे मिनिस्टर की तरफ साअिड बताते हैं। अैसा क्यों हो रहा है? बड़े बड़े जागीरदारों में से डेप्युटी कलेक्टर्स बनाये गये हैं और नाहक हमारे खजाने पर बार डाला गया है। यह लोग मजा अुड़ाते हैं। अिस तरह से आमदनी से ज्यादा खर्चा रखकर हमारी हुकूमत किस तरह से सही सलामत रहेगी यह सवाल सामने आता है।

तलफेमालके बारे में मैं कहूंगा कि एक तारीख मुकर्रर की गयी है, लेकिन हुकूमत करनेवालों का यह मालूम नहीं है कि हैदराबाद स्टेट में जो तरह तरह की फसल पैदा होती है वह कितने महीने में होता है और कब कटाई जाती है। तारीख खतम होनेके बाद वे पंचनामा करने के लिये वहां जाते हैं। कुछ फसल ऐसी होती है जो तीन महीने के बाद काटी जाती है, कुछ ऐसी होती है जो दो महीने के बाद काटी जाती है। वह कभी भी काटी जानेवाली हो अफसर लोग मुकर्रर तारीख के बाद ही वहां जाकर फसल काटने के लिये जाते हैं, और उनके बैलों को चराने के लिये जो धान होता है उसको भी वे काट लेते हैं। ये डेप्यूटी कलेक्टर लोग बड़े बड़े खानदान से लिये हुये हैं, बड़ी बड़ी मिनीस्ट्रीयों से हुये हैं, लेकिन कास्तकारी को वे जान नहीं सकते। हमारे जैसे मानवों को वे अनुको जान सकते हैं क्योंकि हम किसान तबके से आये हुये हैं। हमारे मिनिस्ट्रान भी भुम्मी तबके से आये हैं, वे भी अस्तक सज्जया रखते हैं लेकिन मिनिस्ट्री की नशा में वे भी अिन सब चीजों को भूल गये हैं। बैल को मिशानी रखकर आपने घोट हासिल किये लेकिन किसान के बैलों के लिये चारा रहता है या नहीं इसकी भी उन्हें आज कदर नहीं है। तलफेमाल के भी अिन तरीके के बारे में गुजिस्ता साल चंफ मिनिस्टर साहब के सामने देने यह चीज रखी थी, लेकिन तेरा के दम और दस के सोला की फिकर में वे शायद अिनको भूल गये। खुद का मकान संभालने की फिकर में शायद वे बाहर की चीजों का ख्याल भूल गये। हर आदमी जानता है कि कौनसी फसल तीन महीने में निकलती है और कौनसी छः महीने के बाद निकलती है। जो धान निकलता है उसके बारे में तलफेमाल को दरखास्त दे तो गिरदावर, या डेप्यूटी कलेक्टर साहब या तहसीलदार साहब अपनी मुकर्रर तारीख के बाद ही वहां जायेंगे तो अुस वक्त वहां क्या रहनेवाला है ?

आबकारी शाखा में भी अिसी तरह से अंदाधुव कारोबार है। मद्रास सिस्टम के मुताबिक हमारे यहां जिन बैठकों को निकाल दिया गया है अनुको बरकरार रखने का फैसला किया गया है। अेक गांव में बैठक नहीं है और अुसके पास के गांव में बैठक है तो अेक गांव के लोग दूसरे गांव में जाकर शराब पीते हैं और गुनेदारां के जेब गरम हो जाते हैं। जिस गांव में बैठक नहीं है अुस गांव में बैठक रखी जाय तो कम से कम गवर्नमेंट की कुछ आमदनी बढेगी, लेकिन अिसकी तरफ ध्यान नहीं दिया जाता। अिसको दुखत करने के लिये हर बजट सेशन के वक्त हम कहते हैं लेकिन अिसकी तरफ ध्यान नहीं दिया जाता। अिसके संबंध में तेलंगु में अेक लोकोक्ति है—

“ ఎదుకైనాని ఏడాది దెప్పిన  
మాట తెలిసి నడుచు మర్చిపోగీ,  
మొప్పై తెలియలేదు ముప్పదొండ్ల కు నైన ”

फर्ज कीजिये किसी बैल के साथ हम हमेशा रहे और अुसको कुछ बोलते गये तो कुछ सालों के बाद वह भी हमारे अिचारों को समझने लगता है, लेकिन अब क्या बोलू मैं अपने विचारों को हिंदी में समझा नहीं सकता, लेकिन साल व साल हम यहां बोलते रहते हैं फिर भी आप अुसको नहीं समजते। कलेक्टर साहब, तहसीलदार या गिरदावर वगैरा दौरे पर जाते हैं, अनुको भत्ता मिलता है लेकिन अनुका भार किसानों पर पडता है। ये अफसर लोग अनुकी दिक्कतों को दूर करने के लिये कौनसा रास्ता नहीं निकालते।

अिसी तरह से फूड अिन्स्पेक्टर्स ( Food Inspectors ) किस लिये रखे गये हैं यह भेरो समझ में नहीं आता। हम देख रहे हैं दो साल से अिनके जरिये से कौनो काम नहीं

हो रहा है। जैसी हालत में जिन लोगों को बरकरार रखते हुये अउनकी तनख्वाह बढ़ाते रहने में क्या फायदा है। शायद आप कहेंगे कि जिनको निकाल दिया जाय तो बेरोजगारी बढ़ेगी, लेकिन जिन लोगों को निकालने से बेरोजगारी का मसला कोअी ज्यादा बढ़नेवाला नहीं है। गिर-दावर और फूड अन्स्पेक्टरों को निकाल दिया जाय तो बेरोजगारी नहीं बढ़ेगी। आप सिर्फ पढे लिखे लोगों की बेरोजगारी की तरफ ही ध्यान देते हैं, लेकिन आपकी हुकूमत आने के बाद जो रक्या अख्तियार किया गया है उसकी वजह से देहातों के गरीब तबके में जो बेरोजगारी बढ़ी है उसको दूर करने की तरफ आप तवज्जह नहीं देते। आप जरा देहातों का दौरा करके देखिये। पुलिस अक्शन के पहले की हालत क्या थी और आज की क्या है उसको जरा देखिये। आपने जो ट्रेक्टरों और दीगर जिजिन्स वगैरा देहातों में चलाये हैं अउनकी वजह से कितने लोग बेरोजगार हो गये हैं। जो लोग पहले हाथ से काम करते थे और अपनी रोजी कमाते थे आपके ट्रेक्टरों की वजह से अउनकी रोजी बंद हो गयी है। देहात के कुछ लोग दूसरों का अनाज पीस कर आटा बना देते थे और रोजी कमाते थे। अब आपने बड़े बड़े लोगों को चक्की चलाने के परमिट देकर अउनकी रोजी बंद कर दी है। मशीनों के में खिलाफ नहीं हूं, लेकिन अउनका अिस्तेमाल सोच समझकर किया जाना चाहिये। आप कहते हैं कि ट्रेक्टरों से बेरोजगारी दूर होगी, लेकिन क्या आप ट्रेक्टर सब लोगों में तकसीम कर सकते हैं। अगर आप वैसा कर सकते तो मुझे मशीनों के खिलाफ बोलने की जरूरत न होती, लेकिन जहां हाथों से काम किये जाने चाहिये वहां आप मशीनरी और जिजिन लगाकर देहातों में बेरोजगारी बढ़ा रहे हैं। आखिर में अेक लोकोक्ति कहकर मे अपना भाषण समाप्त करूंगा—

కానివానిచేత గాను వినంతిచ్చి

వెంట దీరుగువాడె పెరిగివాడు

విట్టి తిన్న కోడి పిటిపిసలుకుమా,

విశ్వుదొభిరామ విసురవేమా !

శ్రీ గోకా రామలింగం (ఘనవగీరి) :

అధ్యక్ష మహాశయూ,

ఇక్కడ బడ్జెట్ మీద రెండు రోజులనుంచి డిస్కషన్ జరుగుతోంది. రాజప్రముఖ్ అడ్రెసు మీద కూడా చర్చలు జరిగాయి. బడ్జెటుమీద, రాజప్రముఖ్ అడ్రెసు మీద యిక్కడ చేసిన ప్రసంగాలు విన్నాము. ఆ రాజప్రముఖ్ అడ్రెసుమీద ఇచ్చిన స్పీచెస్ ( Speeches ) కూడా స్టేటు రికార్డు చేసి ఇక్కడ పెట్టినట్లయితే బాగుంటుంది.

ఇప్పుడు బడ్జెటుమీద మాట్లాడేటప్పుడు రెండుమూడు సంగతులున్నాయి. మనవద్దకు రకము ఎట్లా వస్తోంది. దానిని ఏ విధముగా ఖర్చు పెట్టాలి, మనకయ్యే ఖర్చుకన్న వచ్చే ఆదాయము తక్కువైనది. తక్కువ ఎట్లా అయినదని చెప్పి నిన్న చినకొండ్లూరు గౌరవ సభ్యులు మాట్లాడారు. నేను దానిని పూర్తిగా వ్యతిరేకిస్తున్నాను. ఇంకా సోర్సెస్ ( Sources ) ఎక్కడ చేసి ఆదాయాన్ని ఎక్కువచేసి దేశాన్ని బాగు చేయడానికి మనం ప్రయత్నం చేయాలి. నేను చెప్పే డేముంటే త్యాండు రెవెన్యూ, ఎక్సైజు, వేల్పుటాక్సు పీటీ బకాయాలు (అరీయర్లు) (Arrears) వసూలు కావలసినవి చాతా వున్నాయి. వాటిని గురించి గౌరవ మంత్రులు ఎక్కడ ప్రశ్న తీసుకొని ఆయా శాఖలలో ప్రభుత్వం ఎక్కువ డబ్బును సహజీవీరని ఆశిస్తున్నాను.

తీడరు ఆఫ్ ది ఆఫ్టిజేషన్ (ప్రతివక్షనాయకుడు) మన పంచవర్ష ప్రణాళిక (Five year plan) సరించి మాట్లాడుతూ, దానిలో గుర్తేదార్లు పని చేస్తున్నారని అదే గుర్తేదార్ల మీద ఆధారపడి వున్నదేగాని ప్రజలనుంచి రెస్పాన్సు (Response) రావడం తేదని చెప్పారు. ఆఫ్టిజేషన్ పార్టీవారేకాదు. మనమంతా, పదిమందేమీ కలిసి చేస్తేనే అది జరుగదమౌతుంది. ఆ పంచవర్ష ప్రణాళికనేదీ ప్రజల బెంచెస్ మీద కూర్చున్నవారే చేస్తారని అనుకోకూడదు. మన మంతా ప్రజలలో చొచ్చుకొనిపోయి వారి సహకారముతో చేయవలసిన భాగ్యత మన అందరిమీద వున్నదే.

తక్కావీ లోన్సు జమీందార్లకు, జాగీర్దార్లకే యిస్తున్నారంటున్నారు. తక్కావీ లోన్సు వారికే యివ్వవలసి వుంటుందని గుర్తించాలి. ఎందుచేతనంటే ధూమి ఎవరికీ వున్నది? ధూమిగలవారికే తక్కావీలోన్సు యిస్తే ధూమియందు ఎక్కువ ధాన్యము పండించి దేశాన్ని వృద్ధిలోకి తీసుకు రాగలరు. వారికి తక్కావీ లోన్సు ఎందుకు ఇవ్వకూడదంటున్నారో నాకు అర్థము కావడములేదు.

### [MR. DEPUTY SPEAKER IN THE CHAIR]

రకునాథ్ ఆర్. టి. డి. బడ్జెటు ౧౯౫౩-౫౪ లో 3౭ లక్షలు ఎక్సిమేషన్ వున్నది. కాని ౧౭ లక్షలే వచ్చింది. దీనికి కారణం మనకు తెలిసే వున్నది. కాని ఈ సంవత్సరం ౨౪ లక్షలు మాత్రమే పేశారు. దీనికి కారణం ఏమిటి? ౨౪ లక్షలనుండి 3౦ లక్షలు ఎందుకు కాలేదో నాకు తెలియడం లేదు.

హరిజన్ పెట్రోల్ క్రింద ౨౭ లక్షల ౨3 పేల ౨ పందలున్నది. దీనిలో (యఫ్. ఎ.) లో త్యాగవార్లు క్లాసెస్ కూడా కలిసి వున్నది. దానిలో తప్పింపులు ఏమిటో నాకు తెలియుట లేదు. దానినికూడా గుర్తిస్తారని చెప్పి నేను ఆశిస్తున్నాను.

మనదేశంలో పంటలు సమృద్ధిగా పండినందువలన కరువుకాటకాలను మనం దూరం చేసు కొన్నాము. ఇప్పుడు కంట్రోల్స్ కూడా ఎత్తివేయబడ్డాయి. దానివలన మనకు భవిష్యత్ (Future) బాగుంటుందని ఆశిస్తున్నాను.

ఇంకొక విషయం, తా అండ్ ఆర్డర్ విషయంలో, ఈ రెండు సంవత్సరములనుండి ఎక్కడా ఏమీ ఇబ్బందులు లేకుండా వున్నందుకు ప్రజలకు ధన్యవాదములర్పిస్తున్నాను.

శ్రీ పెండెం వాసుదేవ్:— తా అండ్ ఆర్డర్ బాగుంటే పోలీసు ఖర్చు తక్కువచేయమని చెప్పండి.

శ్రీ రామలింగం: చేస్తారు, యింకా తక్కువగుతుంది.

ఇంకొక విషయం, చేనేత పరిశ్రమకు ౧౬ లక్షల రూపాయలు గవర్నమెంటువారు యిచ్చారు. ఈ ౧౬ లక్షల స్కీము మన ఆర్మైజరి బోర్డు ముందు వున్నది. దానివలన మన చేనేత పరిశ్రమ చాలా ముందుకు తీసుకు రాబడుతోంది. ఇంకా గవర్నమెంటు మనకు సహాయం చేస్తుంది. ఇది కూడా ఒక ముఖ్య విషయమని మనము గుర్తించ వలసియున్నది.

ఈ రుంగధర ప్రాజెక్టు ఏప్రిల్ వున్నదో దానిని 3౦, ౪౦ సంవత్సరాలనుంచి కట్టవలెనని అనుకుంటున్నారు. ౧౯౪౫ నుంచి కట్టబడుచున్నది. కొంత వరకు పని జరిగింది. దానిక్రింద

అనేక స్కీములున్నవి. దానిలో రాజలబండ్ స్కీము ఆగిపోయినది. దీని మీద హైదరాబాదు గవర్నమెంటుకు, ఆంధ్ర గవర్నమెంటుకు కొంత సంధి జరుగ వలసియున్నది. అందుకని అది అట్లాపడి వున్నది. దాని విషయం ప్రభుత్వంవారు వెంటనే గుర్తించినట్లయితే బాగుంటుంది. ఇట్లా అనేక విషయాలున్నాయి. వాటన్నింటి మీద ప్రభుత్వము వారు తగిన క్రెడెన్స్ తీసుకొని దానిని త్వరలో పూర్తి చేస్తారని ఆశిస్తున్నాను.

ల్యాండ్ ఇంప్రూవ్మెంట్ బోర్డు ఒకటున్నది. మనం ల్యాండ్ ఇంప్రూవ్మెంట్ బిల్లు ఒకటి ప్యాస్ చేశాము. దానివలన దేశానికి చాలా లాభం వున్నది. స్టేటుకూడా లాభ వడుతుంది. ఆ బోర్డు సరిగా పనిచేస్తుందని ఆశిస్తూ యింతటితో ముగిస్తున్నాను.

శ్రీ ఆరుట్ల రామచంద్రారెడ్డి (రామాయంపేట):

అధ్యక్ష మహాశయా,

౧౯౫౪ సం. నుంచి ౧౯౫౫ సం. వరకు ప్రభుత్వం ఒక బడ్జెటు ప్రవేశ పెట్టింది. ఆ బడ్జెటు పైన నిన్ను, యివ్వాలి చర్చలు జరుగుతున్నాయి. బడ్జెటును ప్రవేశపెడుతూ ఆర్థిక శాఖామంత్రి గారు వ్యాఖ్యానం చేస్తూ ఒక ఉపన్యాసం గావించారు. రాజప్రముఖ్ ఈ శాసన సభాసమావేశం ఆరంభమైనప్పుడు ఒక ఉపన్యాసము గావించారు. ఆ ఉపన్యాసమును, ఈ బడ్జెటును, దృష్టిలో వుంచుకొని బడ్జెటులోని ముఖ్యాంశాలు ఆధారం చేసుకొని, నా అభిప్రాయాలు, నా యొక్క సూచనలు, విమర్శలు యివ్వదలచుకొన్నాను.

౧౯౫౪-౫౫ నకు ప్రభుత్వానికి ౨౭ కోట్ల ౯౬ లక్షల ౪౦ పేలు ఆదాయం వస్తుందని, ౨౯ కోట్ల ౭ లక్షలు ఖర్చు అని బడ్జెటులో చెప్పబడింది. ఈ విధంగా ఆదాయ వ్యయాలు దృష్టిలో వుంచుకొని చూస్తే ఈ సంవత్సరం ప్రభుత్వానికి ౧ కోటి ౩౧ లక్షల ౭౦ పేల కొరత ఏర్పడుతుందని ఈ బడ్జెటు తెలుపుతోంది. అయితే గత సంవత్సరం ప్రభుత్వానికి ౨౫ కోట్లకు పైన ఆదాయం వచ్చిందని ఈ బడ్జెటులో చెప్పబడింది. ఈ సంవత్సరం ౨ కోట్ల ౯ లక్షల వన్ను వివిధ రూపాలలో రైతాంగంపై ఎక్కువపేసి వసూలు జేయబడుతుందని బడ్జెటు చూసిన తరువాత తెలుస్తున్నది. రాజప్రముఖ్ యిచ్చిన ఉపన్యాసంలో ఈ సంవత్సరం క్రొత్త పన్నులు పేస్తారని ఆ పన్నులు భరించడానికి ప్రజలు సిద్ధంగా వుండాలని సూచించారు. ఈ నాడు అధికారంలో వున్న కాంగ్రెసు పార్టీలోని కొందరు ప్రతి పక్షముతో ఉన్న, మాతోవున్నవారు కొందరు కలిసి ఆంధ్ర, మహారాష్ట్ర, కర్ణాటక సభలు స్థాపనచేశారు. ఆ రోజుల్లో హైదరాబాదులో రైతుపైన మోయరాని పన్నుల భారం వుందని దానిని తగ్గించాలని ఆంధ్ర, మహారాష్ట్ర, కన్నడ పేదీకలమంచి ఎన్నో తీర్మానాలు చేశారు. ఎన్నో మెమోరాండములు ఆనాడు అధికారంలోవున్న ప్రభుత్వానికి, పంపారు. వారు ఈ నాడు అధికారములోకి వచ్చినతరువాత ఆంధ్ర, మహారాష్ట్ర, కన్నడ పేదీకలమంచి చేసినతీర్మానాలు, ప్రభుత్వానికి పంపిన మెమోరాండాలు అన్నీ మరచి పోయి వాటిని బట్టదాఖలు చేసి రైతులపైన క్రొత్త క్రొత్త పన్నులు పేసి వసూలు చేస్తున్నందుకు నా యొక్క మహారాష్ట్ర తెలుపుతున్నాను. హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో దాదాపు ౬౦౦ జాగీర్దార్లు, హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో ౨౫ పేల గ్రామాలలోని దాదాపు ౭ పేల గ్రామాలకు పైన జాగీర్దార్లు నిరంకుశ



పరిపాలన సాగించారు. జాగీర్దార్లకు వ్యతిరేకంగా అక్కడ జాగీరు రైతులు సంఘటిత పడి పోరాట మార్గాలను సాగించారు. ఆ రోజులలో రాజకీయపార్టీలన్నీ జాగీర్దార్ రైతులలో కుల సహాయాన్ని సాగించడం, ఆ పోరాటాల సరితంకా వారుకొన్నికూక్కలు సాధించారు. ఆ విధంగా చుట్టూను ముందు ఈ ప్రమా ప్రభుత్వమని చెప్పకూడే ఈ కాంగ్రెసు ప్రభుత్వము గుర్తించుకుంటున్నది. గాంధీజీ సహాయమును యివ్వగలను. ఇప్పుడు ఒకటి రెండు ఉదాహరణ లిస్తాను. రాజప్రముఖ్ బిల్లుకుందా తొల హక్ మున్నగు జాగీర్లున్నాయి. ఆ జాగీర్దార్లు, ఐరిషులవలె రెండు దానిని ప్రభుత్వంగా వచ్చి వదిలించుకొన్నారు. ౧౯౪౩-౪౪ లో జాగీర్ రైతులు అప్పుడప్పుడు రాజప్రముఖ్ బిల్లును ఇషారు. ఆ పోరాట ఫలితంగా జాగీర్దారు మోచ్చించిన ౧౦౦౦ ఎకరాలను ప్రభుత్వం వాడు. ౧౯౪౦-౪౧ వరకు జాగీర్ రైతుల జాగీర్ దారునికే మాఫీగావచ్చును. ౧౯౪౧-౪౨ నుంచి వచ్చుకొని తప్పిన వస్తును చెల్లించుచువచ్చారు. ఈ ప్రభుత్వం అధికారం లోకివచ్చాక జాగీర్దార్లను ఇప్పుడు చేశారు. అప్పటినుంచి ఈ నాటి వరకు కొంచెమాక గ్రామంలో తిరిగి ౧౯౫౦ నుంచి జాగీర్దార్లకే మాఫీ గావించబడిన డబ్బు రైతుల నుంచి నిర్బంధంగా వసూలు చేస్తున్నారు. ఇంకొక ఉదాహరణ ఇస్తాను. మేదక్ జిల్లా నార్సీంగ్ గ్రామంలో ఐదారువేల జనాభావున్నది. కమల్ యార్ బెంగ్ ౨౦ సంవత్సరముల క్రింద దవాఖానా ఏర్పరచి ఉచితంగా మందులు యిచ్చే ఏర్పాటు చేశాడు. జాగీర్దార్ విధానం రద్దు ఐనతరువాత గత సంవత్సరం అక్కడ వున్న దవాఖానాను ఈ ప్రభుత్వం తీసేశారు. ఈ లాటివి ఎన్నో ఉదాహరణలున్నాయి.

రాజప్రముఖ్ ఉపన్యాసంలో ౧౯౦౦ జాగీర్ గ్రామాలలో ఖాల్సా ప్రాంతములో వసూలు చేయ బడుచున్న వస్తులు వసూలు చేస్తున్నారు. ఈ స్టేట్ లో మొత్తం ౭ వేల జాగీర్ గ్రామా లున్నాయి. ఆ ౭ వేల గ్రామాలలో ౧౯౦౦ గ్రామాలనుండి మాద్రాసు ఖాల్సా వస్తులు వసూలు చేస్తున్నామని రాజప్రముఖ్ తెలియజేశారు. రక్తిని ౭ వేల గ్రామాలలో ఈ నాటివరకు అక్రమ వస్తులు వసూలు చేస్తున్నారని, బడ్డెటును చూస్తే, బడ్డెటుపై గావించిన ఉపన్యాయను చూస్తే బోధపడుతుంది. అయితే ఈ జాగీర్దార్ విధానం రద్దుచేస్తామని కాంగ్రెసుపార్టీ అధికారంలోకి రాకపూర్వం ఎన్నో తీర్మానాలు చేసింది. ఉపన్యాసాలు గావించారు. కాని వారు అధికారం లోకి వచ్చిన తరువాత జాగీర్దార్ విధానం రద్దుచేయలేదని, ఏదో నామ మాత్రంగా చేశారని ఘంటావధంగా చెబుతున్నాను. నామమాత్రంగా ఎందుకు చేశారంటే రజాకార్లు కాలంలో జాగీర్దార్లకు వస్తులు చెల్లించడానికి జాగీరు ప్రజలు నిరాకరించారు. పోలీసుయాక్టును తరువాత ఆ గ్రామాలకు జాగీర్దార్లు పెట్టి వసూలు చేయలేకపోయారు. జాగీర్దార్ విధానం రద్దుచేయమని ప్రభుత్వం ప్రకటించింది. అంతకు పూర్వం జాగీర్ అధికారుల రైతులనుండి వస్తులు వసూలు చేసేవారు. ఇప్పుడు కాంగ్రెసు ప్రభుత్వం వస్తులు వసూలు చేస్తున్నారు. ఈ మార్పు తప్ప అక్కడ వేరే మార్పు లేదని చెబుతున్నాను. కాంగ్రెసు ప్రభుత్వం ఉచ్చిత తరువాత జాగీరు రైతులకు ఏలాంటి మేలు కలగలేదు. అనాటి ౬౦౦ జాగీర్దార్లలో పెద్ద జాగీర్దార్లైన సైజాము సవాలును గద్దెపై కూర్చుండబెట్టి వర్సెఖాన్ పైన సంవత్సరమునకు ౫౦ లక్షలు, రాజప్రముఖ్ పేర భరణములో ౫౦ లక్షలు మొత్తం సంవత్సరానికి ౧ కోటి రూపాయలు యిస్తూ ప్రజలపై పై కూర్చుండబెట్టినందుకు ఏలాంటి తిరుగులేదు. రాజప్రముఖ్ ను గద్దెపైనుంచి దించే అధికారము ప్రజలకుందన్నాడు.

కాంగ్రెసు ప్రధాన మంత్రి పండిట్ నెహ్రూ, సర్దార్ వల్లభాయీపటేల్ ఇక్కడికివచ్చి ప్రకటించారు. వాటినన్నింటిని బుట్టదాఖలుచేసి సైజాము నవాబును గద్దెపై కూర్చుండబెట్టి సంవత్సరానికి ౧ కోటి రూపాయలు యివ్వడం సహించరాని పని. ఈ సైజాం నవాబు రజాకార్ల కాలంలో ఎందరో స్త్రీల మానభంగాలు చేయడం, ఎన్నోవేలమంది అన్నదమ్ములను కాల్చి చంపడం పెద్దరాజాదు ప్రజలు ఎన్నటికీ మరువలేదు. ఇలాంటి వానిని గద్దెపై కూర్చుండబెట్టి సంవత్సరానికి కోటి రూపాయలు యివ్వడం పెద్దరాజాదు ప్రజలు సహించరు. అదే విధంగా జాగీర్దార్లకు సంవత్సరానికి ౧ కోటి 3౯ లక్షల, ౯౬ పేలు నష్టపరిహారమనిచెప్పి యిస్తున్నాడు. చిన్నచిన్న జాగీర్దారులుంటే అటు వంటివారి కుటుంబ పోషణకు యిస్తే నాకు ఆక్షేపణ తేదు. సంస్థానాధీశులు, పెద్దపెద్ద జాగీర్దార్లు నవాబ్ జింగులు, గద్వాల రాజా, వనపర్తి రాజా మున్నగు వారికి నష్టపరిహారం యివ్వడం సహించరాని పని. ఆ విధంగా నష్ట పరిహారంగా యిస్తున్న డబ్బును తగ్గించాలని నేను కోరుచున్నాను.

ఈ కాంగ్రెసు ప్రభుత్వం అధికారానికి రాకపూర్వం దున్నేవానికి భూమి యిస్తామని చెప్పి ఎన్నో సార్లు ప్రకటించారు. ఈ ప్రభుత్వం అధికారంలోకి వచ్చి రెండు సంవత్సరాలైనది. మూడవ సంవత్సరం ఆరంభమయినది. ఈ కాంగ్రెసు ప్రభుత్వం అధికారంలోకి వచ్చిన తరువాత ఎక్కడైనా రైతాంగానికి ఒక్క ఎకరమైనా భూమి యిచ్చిందా అని నవాలు చేస్తున్నాను. ఎక్కడా యివ్వలేదు. సైజాము నవాబుకు ౨౦ వేల ఎకరాలభూమి వుందని ప్రభుత్వమే అంగీకరించింది. సైజామునవాబు అలాంటి పెద్దపెద్ద జాగీర్దార్ల భూములను తీసుకొని ప్రజలకు ఈ ప్రభుత్వం యిచ్చిందా అంటే తేదు. విస్నూరు దేశముఖ్, సూర్యాపేట దేశముఖు, జన్నారెడ్డి కుటుంబాలు, కల్లూరు రాజేశ్వరరావు మున్నగు వారికి వేలకు వేల భూమి వున్నది. అటువంటివారి కుటుంబములకు సరిపోయే భూమిని వదిలి మిగతా భూమిని తీసుకొని బీద రైతాంగానికి యిచ్చేటందుకు యీ ప్రభుత్వం సంసిద్ధంగా లేదు. ఇస్టారీసే నమ్మకం ప్రజలకు కూడా పోయింది. దున్నేవానికి భూమి యిస్తామని చెప్పి గత శాసన సభలో ఒక భూసంస్కరణల చట్టమును-పాస్ చేసింది. ఆ భూసంస్కరణల చట్టము దృష్టిలో వుంచుకొని భూములు లేని వారికి భూములు యిస్తామని ప్రభుత్వం చెప్పింది. కాని ఆ చట్టాన్ని చూస్తే ఒక్కరికీ కూడా దానివలన భూమి దొరకదని ఘంటావధంగా చెప్ప వచ్చును. ౬ లక్షల కొలుదొర్లకు యింతకు పూర్వం వున్న చట్టప్రకారం రక్షిత కొలు ఫారాలు యిచ్చారు. ఈ రక్షిత కొలుదొర్లు చేసుకుంటున్న భూమి అయినా దక్కుతుందనే నమ్మకంలేదు. స్వంత నేవ్యం, పేరుతో జమీన్దార్లు, జాగీర్దార్లు నోటీసులు యిచ్చి రక్షిత కొలుదొర్లు చేతుల్లోనుంచి భూములను స్వాధీన పరచుకొనే అవకాశం ఆ భూసంస్కరణల చట్టముతో వున్నదని నేను వేరే తెలిప నవసరం లేదు. ౧౯౪౮ నుంచి యీ నోటీసులకు జాగీర్దార్లు వేలకు వేల భూముల నుండి రైతులను బేదఖలుచేసి స్వంత నేవ్యముచేసు కొనడమొ, లేక అమ్ము కొనడమొ జరిగినది. బేదఖల్లు ఆపేందుకు ఒక ప్రత్యేక ఆర్డీ నెప్పును చేశామని రాజప్రముఖ్ చెప్పాడు. ఆర్డీ వెన్ను వున్నప్పటికీ వేలకు వేల భూములనుండి రైతులను, గూండాల, పోలీసుల సహాయముతో జాగీర్దార్లు, జమీన్దార్లు బేదఖలు చేశారు. అమ్ముకొని లక్షల డబ్బును నేకరించారు. జనాదు తాలూకా దేవరవుల గ్రామంలో విస్నూరు దేశముఖు కాశింరజ్య్ కి కడ్డీ భుజంగా వుండి రజాకార్ల కాలంలో ఎంతోమంది అన్నదమ్ముల ప్రాణాలను గైకొన్నాడు. ఒక లక్ష రూపాయల విలువగల భూమిని దేవరవుల గ్రామములోనే అమ్ముకొన్నాడు. ఈ విధంగా ఎన్నో ఉదాహరణ లివ్వవచ్చును.

చేయకుండా ప్రత్యేక ఆర్డీనిచ్చి చేశామని చెప్పి కాంగ్రెసు ప్రభుత్వం మహా గొప్పం చెప్పుకుంటున్నది. కాని ఆ ఆర్డీనిచ్చి కాగిరాలమీద వున్నది గాని దానివలన ప్రజలకు పేలు కలుగలేదు. ఈ ప్రభుత్వముచే చేయబడిన చట్టాలన్నీ కాగిరాలపైననే వుండి పోవుచున్నవి.

3 కోట్ల, ౨౯ లక్షల, 3౯ వేల రూపాయలు పోలీస్ పైన ఖర్చు పెడతామని ప్రభుత్వం బడ్జెటులో చూపించారు. ఈనాడు పోలీసు ఏమీ చేస్తోంది ? దేశంలో శాంతి భద్రతలను కాపాడేందుకు పోలీసులు వుంటారా ? నిన్నమొన్న హింసామినిష్టరు, తక్కిన కొందరు, సభ్యులు, యిచ్చుడు మాట్లాడిన భవనగిరి సభ్యులు ఈ నాడు పెద్దరాబాదు రాష్ట్రములో తా అండ్ ఆర్డరు చాలా బాగుందని అంటున్నారు. నల్లగొండ జిల్లాలో చూచినట్లయితే 30, ౪0 పోలీసు క్యంపులున్నాయి. వీటిని శాంతి భద్రతలను కాపాడడానికి వుంటారా ? లేదు. ప్రతిపక్షం వారిని అణిచే ఉద్దేశంతో ఈ పోలీసులను వుంచారు. ఈ పోలీసుపై 3 కోట్ల, ౨౯ లక్షల, 3౯ వేలు ఖర్చుపెట్టడం సహించరాని పని. దీనిని చూస్తే యిదే ప్రజాప్రభుత్వం బడ్జెటు కాదని పోలీసు బడ్జెటు అని చెప్పగలను. ఈ పోలీసుమీద ఖర్చు పెడుతున్న డబ్బును చూసి నేను చెప్పగలను. పెద్దరాబాదు రాష్ట్రంలో, విద్యార్థులు సాగించే పోరాటము అణచడానికి, కార్మికుల పోరాటం అణచడానికి, రైతాంగం పోరాటములను అణచడానికి ఈ పోలీసులను వినియోగిస్తున్నారే గాని శాంతి భద్రతలను కాపాడడానికి కాదు. రెండు సంవత్సరాలనుంచి ఈ శాసన సభ ఆరంభమైనప్పటినుంచి చూస్తున్నాము. శాసనసభ నలుపై ఫల పోలీసులుంటారు. అవరణ మధ్య సి. ఐ. డి. లుంటారు. ఏ శాసన సభ్యుడు ఎవరితో ఏమీ మాట్లాడేదీ నోట్ చేస్తారు. ప్రజలు కష్టసుఖాలు చెప్పుకునేందుకు ఇక్కడకు రాదలచుకుంటే ఈ శాసనసభ చుట్టూ ౪00 గజాల దూరంలోగా ఎవరూ రాకూడదని హింసా మినిష్టరు ఆర్డరు పేస్తారు. విద్యార్థులు, కార్మికులు, రైతులు సాగిస్తున్న పోరాటాలు అణచేందుకు పోలీసుపై కాంగ్రెసు ప్రభుత్వం కోటానకోట్ల సొమ్ము ఖర్చు చేస్తున్నారు. రజాకార్ల కాలంలోవలె ప్రజలు పోలీసులంటే భయపడుతున్నారు. గామీమాలలో పోలీసులు దొంగతనం, లంజతనం సాకుతో ప్రజలమీద కేసులు పెడుతున్నారు. ఖానూన్ ప్రకారం అరెస్టు చేసిన ౨౪ గంటలలోగా నేరస్థుని కోర్టులో హాజరు పెట్టాలి. అదీ లేకుండా రోజుల కొద్దీ పోలీసులు కష్టడిలో వుంచి హింసించడం, అనేక బాధలు పెట్టడం చేస్తున్నారు. ఈ బాధలుపడలేక అనేక మంద చనిపోయారు. ఈ విషయం ఈ శాసనసభలో ఎన్నోసార్లు ప్రభుత్వ దృష్టికి తీసుక వచ్చాము. అడ్జర్నెమెంటు మోషన్లు తొచ్చాము. హింసా మినిష్టరులో కఠినీకాని చెప్పాము. మెమోరాండూలు సమర్పించాము. ఈ కేసుల గురించి ప్రత్యేక విచారణ కొరకు ప్రత్యేక కమిషన్ పేయమని కోరినప్పటికీ, ప్రభుత్వం యింతవరకు కనీసమైన యూకోర్టును గుర్తించలేదు. పోలీసులచేత ప్రజలు హింసించబడుతున్నారు. పోలీసులు శాంతి భద్రతలను కాపాడేందుకు వున్నారని కాంగ్రెసు చెప్పి మాట్లాడు ఎవరూ నమ్మడం లేదు. గత రజాకార్ ప్రభుత్వానికి వ్యతిరేకంగా ఆయుధాలు చేతబట్టి పోరాడేవారు పోలీసు యాక్టును తరువాత అరెస్టు గానింప బడ్డారు. వారంతా యూనాటివరకు జైల్లో మృశ్యులున్నారు. నాలుగైదు సంవత్సరాలనుంచి పోలీసులు వారిపై అనేక హత్యకేసులు, లూటీ కేసులు పెట్టారు. ఆ పిట్టలు పూర్తిచేసుకొని జైలునుంచి బయటకు వచ్చిన వెంటనే తిరిగి వారిని అరెస్టుచేసి క్రాన్త్ కేసులు పెడుతున్నారు. పూడూరు మల్లయ్య అను నరుడు గత ౫ సంవత్సరముల నుంచి జైలులో వున్నాడు. అతని మీద కేసులు కొట్టేసినందువలన వెంట్రులు జైలు నుంచి బయటకు రావడంలోనే

కొత్త కేసులు కల్పించి పెట్టేందుకు తిరిగి అరెస్టు చేసినట్లు ఇప్పుడే నాకు రీఫార్టు వచ్చింది. ప్రభుత్వం జైల్దార్లపై ౨౫ లక్షల, ౨౨ వేల వరకు ఖర్చు పెడుతోంది. కాని ఈ జైల్దార్ల సరక కూపాలూ వుంటున్నాయి. రజాకారు ప్రభుత్వంలో అందరం ఆ జైల్దార్ల వుండి వచ్చిన వారే. అవి ఏ విధంగా వుంటాయో అందరికీ తెలుసు. ఇప్పుడుకూడా జైల్దార్ల పరిపాలనలో మార్చేమీ రాలేదు. ఈ నాడు జైల్దార్లలో మృగ్గుతున్నవారితో శాసన సభ్యులమైన మేము కలిసి డిఫెన్సుకు ఏర్పాటు చేయాలంటే హోం మినిస్టరు అనుమతి హోం కంట్రీటరీ అనుమతి తీసుకొని పోవలసియుంటుంది. ఈ నాడు హైదరాబాదు జైల్దార్ల వుండి డిటెన్యూలు, అండర్ ట్రయల్స్ (Under-trials) లో మాట్లాడాలంటే ప్రత్యేక అనుమతిని తీసుకోవాలి. దానికి ప్రత్యేక ఫారముల నిషి ప్రభుత్వ అనుమతి పొందాలి. పోనీ తరువాతైనా వారితో కలిసి ప్రత్యేకంగా మాట్లాడనివ్వరు. మధ్య ఇసుప తొర వుంటుంది. సి. ఐ. డి. లుంటారు. డిఫెన్సు విషయమై మాట్లాడడానికి పెట్టి నప్పుడు అక్కడ సి. ఐ. డి. లుంటే డిఫెన్సు విషయం ఏ విధంగా మాట్లాడగలము? ఈ విషయం ప్రభుత్వంవారు తీవ్రంగా ఆలోచించాలి. జైల్దార్లలోవున్నవారిని అక్కడనుంచి కోర్టులకు తీసుకు వెళ్తారు. అప్పుడు కాళ్ళకు చేతులకు బేడీలు, సంకెళ్లు వేసి తీసుకు వెళ్తారు. ఇప్పుడు కమ్యూనిస్టు పార్టీ పాలనలో మార్పు వచ్చిందని తెలుసు. అటువంటప్పుడు కారాగారాలనుంచి కోర్టుకు తీసుకు వెళ్లేటప్పుడు బేడీలు, సంకెళ్లు వేసి తీసుకు వెళ్లడం సహించరాని విషయం. ఈ విషయమై యిక్కడ అనేక సార్లు ఆసెంబ్లీలో ప్రశ్నలు పేశాము. ఆ విధంగా తీసుకుపోవడం లేదని శుద్ధ అబద్ధం చెప్పారు. ఆరోగ్యము కోల్పోయిన పేషంట్లు, అండర్ ట్రయల్ పేషంట్లును దవాఖానాలందు గొలుసులతో మంచానికి కడుతున్నారంటే అదీ శుద్ధ అబద్ధమని ఆసెంబ్లీలో చెప్పారు. ఎన్ఫోస్టార్లు మెమోరాండాల పెట్టాము. ఈ నాటివరకు సెంట్రలు జైలులో జరుగుతున్న వాటిని చెప్పతాను. బి. నరసింహారెడ్డి, తిరుమలరావు మున్నగు వారిని తక్కిన క్లైడిలనుంచి పేరు చేశారు. ఇతర క్లైడిలలో మాట్లాడేందుకు వీలు లేదు. స్వంత ఖర్చులతో కారాగారములో వున్నవారు అధ్యుడయి సాహిత్యం తెప్పించుకొనే అవకాశం లేదు. రోజుకు ఏడు, ఎనిమిదో అక్షాలు బత్తా యిస్తారు. ఇలాంటి పరిస్థితులున్నప్పుడు రాజప్రముఖ్ శాసన సభాప్రారంభంలో చేసిన ఉపన్యాసంలో ఒక్క డిటెన్యూకూడా లేడని చెప్పారు. ఈ నాడు రజాకార్లకు వ్యతిరేకంగా పోరాటం జరుపుటచే ప్రజలచే ప్రజానాయకులని గుర్తించ బడ్డవారు ఆరు, ఏడు వందలమంది వుంటారు. వారు రాజకీయ క్లైడిలు కారని, హత్యలు చేశారని, లూటీలు చేశారని ప్రభుత్వం వ్యాఖ్యానిస్తోంది. ఈ నాడు ట్రెజరీ బెంచెస్ మీద కూర్చున్న మీరే చెప్పండి. ఉమీఖ్యాంకు ఎవరు లూటీ చేశారు? వాళ్ళను, సైజాము మీద బాంబులు వేసి శిక్షలు వడ్డ నారాయణరావు గండయ్యలను ఏడుదల చేశారు. మేము చేత ఆయుధాలు పట్టుకొని రజాకార్లకు వ్యతిరేకంగా పోరాడిన ఫలితంగా కక్షను సాధించుకొనవలయుననే తలంపుతో కేసులు పెట్టి నిర్బంధించి వారు రాజకీయ క్లైడిలు కాదని చెప్పడం జరుగుతున్నది. ఒకప్పక్క సైజాముమీద బాంబులు పేయగోడారే శిక్షలు వడ్డ వారిని ఏడుదల చేయడం, యింకొకప్పక్క రజాకార్లకు వ్యతిరేకంగా పోరాడినవారిని రాజకీయ క్లైడిలు కాదని చెప్పి కక్షలు సాధించడం జరుగుతోంది. ఒక్కమాటలో చెప్పాలంటే రజాకార్ ప్రభుత్వం పోనీ ఈ ప్రభుత్వంకూడా అవలంబిస్తోందని చెప్పవచ్చును. ఈ క్లైడిల డిఫెన్సుకు ప్రభుత్వ సహాయంలేదు. రాయ్ ఆలీ, ఖాశిం రషీఫైన-బీబీనగర్ కేసులకు ప్రభుత్వం ఆ ఒక్కకేసుపై ౬౦ లక్షలు ప్రభుత్వం ఖర్చు పెట్టారు. కాని ఈ క్లైడిలకు

ప్రభుత్వము ఏమీ సౌకర్యాలు చేయలేదు. ఒక్కొక్క హాల్స్ కేటర్ ౫౦ రూపాయలు యిస్తుంది. ఫ్రాంచి రజ్యేపైన ౬౦ అక్షలు ఖర్చుపెట్టారని ప్రభుత్వం అంగీకరించింది, పత్రికల్లో చదివాము. కమ్యూనిస్టులకు న్యాయస్థానముతో సరైన న్యాయము జరుగుతు లేదు. ౬౫ ఉదాహరణ చెబుతాను. బి. నరసింహారెడ్డి, తిరుమలరావు, దొడ్డ నరయ్య, లక్ష్మీనారాయణ, మేదరమట్ల మట్టయ్య, కృష్ణమూర్తి మున్నగు ౧౧ గురి మీద వారంటువు వున్నవా ? అని ౧౧-3-౧౯౫3న ఆనెంట్లీలో ప్రశ్న పేశము. వారిమీద వారంటువు కేసులు తేవని హెళాం మినిస్టరుగారు చెప్పారు. అదే ప్రకటించిన మూడు రోజున, రహస్య జీవితం గడుపుచున్నట్లు వంటి, చెట్లల్లో, గుట్టలలో తిరుగుతూ ఎన్నో కష్టాలకు గురీఅవుతున్నవారు ఒహిరింగంగా వస్తే వారు హత్యలు చేశారని, లూటీలు చేశారని క్రొత్తగా కేసులు పెట్టి జైలులో పెట్టారు. దానిపైన చీఫ్ మినిస్టరుగారిని, హెళాం మినిస్టరు గారిని మాఫాస్తీనాయకులు కలిశారు. మెహెరాండును తీర్చారు. దానిపై అలోచించి విడుదల చేస్తామని, ఏలాంటి ప్రరతులు తేకుండా విడుదల చేస్తామని హామీలు యిచ్చి యంతవరకు విడుదల చేయలేదు.

అదే విధంగా కమ్యూనిస్టులు ఆయుధాలు వప్పగిస్తే బేషరతుగా కేసులు ఎత్తిపేసి, వారంటు ఉపసంహరించుకుంటామని చీఫ్ మినిస్టరుగారు వాగ్దానం చేశారు. ఆ ప్రకారం మావర్తనున్న ఆయుధాలు వప్పగించాము. ఒకటిన్నర సంవత్సరాలయినది. ఈ ప్రభుత్వం పాలసీతో మార్పు వచ్చిందని ఉద్దేశపడి ఆయుధాలు వప్పగించాము. కాని మానదవ్వే శం ప్రభుత్వం దృష్టిలో పెట్టుకొనలేదు. తేనిపాని క్రొత్తక్రొత్త కేసులు కల్పించి మాఫైన మోపి జైళ్ళలో పెట్టి ప్రతి వక్షాన్ని అణచాలని ప్రజాపారాటాన్ని అణచాలని ఈ ప్రభుత్వం కంకణం కట్టుకొన్నదని చెబుతున్నాను.

ఈ నాడు జైలు శాఖపై ౨౫,౮౨,౦౦౦ ఖర్చు పెట్టుచున్నది. కారాగారాలలో శిక్షలు అనుభవిస్తున్న రాజకీయ వైదీలను గాని రాజకీయేతర వైదీలనుగాని విడుదల చేయాలని కోరుతున్నాను.

شری سری هری (کنوٹ) - آنریبل ممبر ایسے کیس کا حوالہ دے رہے ہیں جو عدالت میں زیر دوران ہیں - رول نمبر ۳۳ کلاز ی کی رو سے ایسے کیس کا حوالہ اسپچ میں نہیں دیا جاسکتا -

شری عبدالرحمن (ملک پٹھ) - کسی ایسے مقدمہ کا انہوں نے حوالہ نہیں دیا ہے جو عدالت میں فی الوقت زیر دوران ہو - آنریبل ممبر کو یہ غلط فہمی شاید اسلئے ہو رہی ہے کہ وہ تلنگی نہیں سمجھ سکے یا محض اعتراض کی خاطر یہ اعتراض کیا گیا ہے -

شری سنگی ریڈی وینکٹ ریڈی (نستلا پور) - گذشتہ سال جو مقدمات چل رہے تھے اس کے بارے میں یاد دلا رہے ہیں -

مسٹر ڈپٹی اسپیکر - جو مقدمات عدالت میں چل رہے ہیں انکو ریفر (Refer) کیا جائے -

శ్రీ ఆరుట్ల రామచంద్రారెడ్డి : గౌరవ పథ్యులు ఏవో కోర్టులో కేసులు వడుస్తున్నాయని వాటి విషయం మాట్లాడకూడదని అధ్యంతరం చెబుతున్నారు. నేను మాట్లాడే విషయాలు వారు ఆర్థము చేసుకొనుట తేదని తెలుస్తోంది.

ఈ విధంగా హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో వున్న పేలకు పేల రాజకీయ, రాజకీయేతర ఖైదీలందరినీ విడుదల చేసిన ప్రభుత్వ ఖజానాపై ౨౫ లక్షల, ౮౫ పేల భారం తగ్గుతుందని చెప్పగలను. ప్రక్కనవున్న ఆంధ్ర రాష్ట్రము ఏర్పడగానే ఆంధ్ర ప్రభుత్వం వివిధ జైళ్ళలో వుండే ౬, ౭ పేల మంది ఖైదీలనందరినీ విడుదల చేశారు. ఇక్కడ రజాకార్ ప్రభుత్వం పోయి ప్రజాప్రభుత్వం వచ్చినా ఆ విధంగా ఎవరినీ విడుదల చేయలేదు. రాజకీయవ్యూహాలను సంబంధించని వారినీకూడా ఆంధ్ర ప్రభుత్వం వదిలేసింది. ఆ విధంగా యిక్కడ కూడా చేస్తే ఖజానాపై భారము తగ్గుతుందని మనవి చేస్తున్నాను.

ఇంకాక విషయమేమంటే హైదరాబాదు రాష్ట్రములో వున్న ౨౨ పేల గ్రామాలలోని నేత్ నేండ్లు గ్రామంలో ౨౮ గంటలూ పనిచేయాలి. ప్రభుత్వాధికారులకు, ఉద్యోగులకు రాత్రింబవళ్లు సేవ చేయాలికాని ప్రతి వాక్క నేత్ నేండ్కి ప్రభుత్వం మాసానికి మూడురూపాయలు మాత్రం జీతం యిస్తుంది. ఈ మూడు రూపాయలలో వాళ్లు జీవితం ఏవిధంగా గడపాలో ఆలోచించండి. ఈనాడు ఈ బూగ్గల రామకృష్ణారావు ప్రభుత్వం ఈ నేతు నేండ్ల విషయం ఏమీ ఆలోచించడం లేదు. రాజప్రముఖులకు కోటిరూపాయలు ఇంకా జాగీదార్లకు లక్షలకొలది రూపాయలు యివ్వడానికి అలా యివ్వకున్న ఎడల వారు గుండె పగిలి చస్తారని ఆలోచిస్తూ ఆ నేత్ నేండ్ల మీద ఏమీ దయాదాక్షిణ్యాలు చూపుట లేదు.

ఈ నాడు హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో వున్న పటేలు పట్వారీల మౌరూసీ వద్దతీని రద్దు చేయాలని ఆందోళన వున్నది. ఈ పటేలు పట్వారీల మౌరూసీ వద్దతీని రద్దుచేసి వారినీకూడా ప్రభుత్వోద్యోగులుగా గుర్తించి మాసానికి ౬౦, ౭౦ రూపాయలు జీతం యిచ్చి, గిర్దావర్ల మోస్తరుగా ట్రాన్స్ఫర్ చేయాలని కోరుతున్నాను. ఈ నాడు గ్రామాలలో పటేలుపట్వారీలు ఖాసా సారములు నింపేటప్పుడు, మాలీ గుజారీ చేసేటప్పుడు, టిపి వసూలు చేసేటప్పుడు ప్రజలవద్ద ఎన్నో పేర్లు చెప్పి డబ్బు వసూలు చేసుకుంటున్నారు. కాబట్టి పటేలుపట్వారీ వద్దతీని రద్దు చేసి, వారికి పేటనాలు యిచ్చి ఆ విధంగా ట్రాన్స్ఫర్లు కూడా చేయడం అవసరమని చెబుతున్నాను.

ఇంకోసంగతి; మన హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో ఒక తారతమ్యం చూస్తున్నాము. హైదరాబాదు ప్రభుత్వంతో పెద్ద పెద్ద ఉద్యోగులు ఉన్నారు; సెక్రటరీలు ఉన్నారు; ఐ.జి.పి.లు ఉన్నారు వీరికి ఒక్కొక్కరికి మాసానికి పేలకుపేలు జీతాలు ఇవ్వడం జరుగుతోంది. రెండు పేల నుంచి మూడు పేల వరకు ఇస్తున్నారు. వారికంటే ఎక్కువ పని కష్టము ఉండే సిపాయిలకు, చప్రానీలకు 3౦ రూపాయలు ఇస్తున్నారు. ఈ 3౦ రూపాయలు జీతం తీసుకొని వారు ఏవిధంగా జీవితం గడుపు తున్నారన్న పంజీ అయితే కాంగ్రెసు ప్రభుత్వము గమనించడం లేదు.

శ్రీమతి సంగం లక్ష్మీబాయి :- మీ ఇంట్లో ఉండే నౌకరుకు ఎంత జీతం ఇస్తున్నారు ?

శ్రీ ఆరుట్ల రామచంద్రారెడ్డి :- మా ఇంట్లో నౌకరు లేడండీ. మా ఇంట్లో పనిఅంతా మేమే స్వయంగా చేసుకొంటాం. ఇప్పుడు డెప్యూటీ మంత్రిగారు మీ ఇంట్లో నౌకరుకు ఎంత

జీతం ఇస్తున్నారని అంటున్నారు. మా ఇంట్లో ఎంతమంది నౌకర్లు ఉన్నారో, వారికి ఎంత జీతం ఇస్తున్నారో మా ఇళ్లకు వచ్చి చూస్తే తెలుస్తుంది. మేము ఏమీ ఆనందభాగ్య భాగ్యములనుభవించడం లేదు. మాకు గాని, మా పార్టీవారికిగాని, లేదా మా పార్టీ నాయకులకు గాని, లేదా మా పార్టీ పక్షంనుంచి ఎన్నుకోబడ్డ సభ్యులు ఎవరైతే ఉన్నారో వారికి ఎంతమంది నౌకరులు ఉన్నారో వాళ్ల ఇంట్లకు వెళ్లి చూడండి. మా ఇళ్లలో మాకు వచ్చే ఆదాయాన్ని దృష్టిలో ఉంచుకొని స్వంతంగానే పనులు చేసుకొంటాం. మేం కప్పపడి మా పనులు స్వయంగా చేసుకొంటాం. ఇప్పుడు, నెక్సేటరీలకు, పెద్ద ఆఫీసర్లకు ఉద్యోగులకు రెండువేలనుంచి మూడు వేల వరకు వేతనాలు ఇస్తున్నారు. ఇప్పుడు మనం శాసనసభలో ఉన్నాం. ఇక్కడ స్పీకరుగారు ఉన్నారు. మంత్రీలు ఉన్నారు. ఉపమంత్రీలున్నారు. వారికి ఎంతెంత వేతనాలు ఇస్తున్నారో ఇక్కడ జరిగే సమావేశం ఆరంభమైన మొదటి నుండి చివరవరకు చేతులు కట్టుకొని నిలబడి ఏ ఏస్తున్న చూసీసీలకు ఎంత జీతం ఇస్తున్నారో ఆలోచించండి. కిరింది ఉద్యోగులకు చూసీసీలకు 30 రూ. ఇవ్వడం పై ఉద్యోగులకు 3 వేల రూపాయలు ఇవ్వడం, యీ తారతమ్యం సహించ రాసింది. ఒక చూసీసీ బీడిముక్కకు ఆశపడి చిన్న తప్పు చేస్తే వాడిని బర్లరఫ్ చేస్తున్నారు. పెద్దపెద్ద ఉద్యోగులకు రెండు వేలనుంచి మూడు వేలవరకు ఇస్తున్న వేతనాలను తగ్గించవలసి ఉన్నది. ఇప్పుడు మంత్రీలు తీసుకొంటున్నటువంటి వేలకువేలు జీతాలను తగ్గించవలసి ఉన్నదని ఒక్క మాటలో మనవి చేస్తున్నాను.

అదేవిధంగా భాషాప్రియుక్తరాష్ట్రాలు గురించి రాజప్రిముఖ్ తన ఉపన్యాసములో ఏమాత్రం చెప్పలేదు. బడ్జెటు స్పీచ్ సందర్భములో కూడా, బడ్జెటును ప్రవేశపెడుతూ పైనాను మినిస్టర్ గాని దానిని గురించి చెప్పలేదు. హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో తెలంగాణాలో ఒక కోటికి పైన తెలుగు వ్యజలు ఉన్నారు. అలాగే ర, ౫ జిల్లాలలో మహారాష్ట్రలు, 3 జిల్లాలలో కర్ణాటకులు ఉన్నారు. వీరందరూ హైదరాబాదు స్టేటులో ఉన్నారు. ఇదంతా కలగూరగంపలాగా ఉండి ఈ విధంగా విశాలాంధ్ర, సంయుక్తమహారాష్ట్ర, ఐక్యకర్ణాటక ఏర్పడడం అవసరమని ప్రతి పక్షాలవారే కాకుండా కాంగ్రెసు పక్షంవారు కూడా ఎలుగెత్తి చాటుతున్నారు. విశాలాంధ్ర సంయుక్తమహారాష్ట్ర, ఐక్యకర్ణాటక వద్దనే వారు ఎవరూలేరు. అవి వద్దని ఏ మంటి అనడం లేదు. భాషారాష్ట్రాలకు వ్యతిరేకంగా మాట్లాడేందుకు ఏ మంటికి ధమ్ములు లేవు. గత ౨౫ సంవత్సరాలనుండి కాంగ్రెసు పార్టీలో ఉన్నప్పుడు ఆనేక సిద్ధాంతాలను పెల్లడించాం. తీర్మానాలు చేశాం. అయినప్పటికీ భాషారాష్ట్రాల గురించి ప్రభుత్వముయొక్క పైఖరి ఏమిటో ప్రభుత్వముయొక్క పాలనీ ఏమిటో రాజప్రిముఖ్ యొక్క ఉపన్యాసంలోగాని, బడ్జెటు ఉపన్యాసంలో గాని చెప్పలేదు కాబట్టి ప్రభుత్వముయొక్క పాలనీని చెప్పవలసిఉన్నదని భావిస్తున్నాను. ఆంధ్ర రాష్ట్రం దానంతట అదే రాలేదు. ఆంధ్ర రాష్ట్రాన్ని అచ్చటి వ్యజలు ఏరోచిత పోరాటాల ద్వారా సాధించుకొన్నారు. వ్యజలు పోరాడిన పోరాటాల ఫలితంగా కేంద్రప్రభుత్వం లోంగి రాలినట్లవుచింది. టెగ్జరీబెంచెస్లో ఉన్న కాంగ్రెసువాదు “హై వర్ డిమాండ్ చేశారు; వారు విశాలాంధ్ర, సంయుక్తమహారాష్ట్ర, ఐక్యకర్ణాటక ఏర్పాటు చేస్తారు;” అని అంటున్నారు. ఈ రాష్ట్రంలో ఉన్నటువంటి మహారాష్ట్రలు, కర్ణాటకులు, తెలుగువారు అందరూకూడా ఎడతెగని పోరాటాలు చేస్తేనేగాని యీ భాషారాష్ట్రలు ఏర్పడవు. హైదరాబాదు పట్టణమును ఇండిపెండెంటు పట్టణము చేయాలని, డిమాండ్ పట్టణము చేయాలని

కొంతమంది అభిప్రాయము తెల్పుతున్నారు. హైదరాబాదు పట్టణమును కమిషనర్ పట్టణమే చేయాలనడం, విశాలాంధ్రకు నిజాం రాజప్రముఖ్ గా ఉండాలనడం తెలంగాణా ప్రజలుగాని ఆంధ్రప్రజలుగాని ఏ మాత్రం సహించరని ఒక మాటలో చెబుతున్నాము. ప్రజలు తమ యొక్క ఐక్యతారాటల ద్వారా భాషారాష్ట్రాలను నిర్మించుకొంటారు. ఈ భాషారాష్ట్రాలను గురించి యీబడ్జెటు ఉపన్యాసముతో ఎక్కడా కనపడటంలేదు. ప్రభుత్వం తన పాలనీని ప్రకటించవలసి యున్నది.

అదే విధంగా, నందికొండ ప్రాజెక్టు గురించి రాజప్రముఖ్ ఉపన్యాసంలో ఎక్కడాలేదు. ఈ ప్రాజెక్టు క్రింద ౬౦ లక్షల ఎకరాలు నేవ్వం అవుతుందని ఇంజనీయర్లు నిపుణులు తెలుపుతున్నారు. ౬౦ లక్షల ఎకరాలు భూమి నేవ్వం అయి, అందులో పంట పండితే, ఆ పంటపైదాగా బాదు స్టేటులో ఉండే అందరికీ సరిపోతుందని చెబుతున్నాను. మన దేశంలో బంగారం పండి భూములు ఉన్నాయి. పెద్దపెద్ద నదులు ఉన్నాయి. ఏటిని అరికడితే దేశంలో ఎంతో పంట పండించగలుగతాం. బంగారం పండించే భూమి ఉన్నప్పుడు, కృష్ణా గోదావరి మొదలైన పెద్దపెద్ద నదులు ఉన్నప్పుడు కాంగ్రెసు ప్రభుత్వం అమెరికా పైపు అహారధాన్యాల కోసం చేతులు కొప్పుతున్నారు. అమెరికానుంచి గోధుమలు తెప్పిస్తున్నారు. ఈ నందికొండ ప్రాజెక్టు ప్రాముఖ్యతను యీ ప్రభుత్వం గుర్తించడంలేదు. ఈ బడ్జెటులో దానిని చేర్చి, దానియొక్క విస్తీర్ణానికి పెంటచే పూనుకోవాలని కోరుతున్నాను. గ్రామాలలో అనేక కుంట అన్నాయి. చెరువులున్నాయి. అనేక చెరువులకు రూములకు గండ్లు పడి ఉన్నాయి. ఈ కుంటలను చెరువులను సరియైన మరమ్మతులు చేయించవలసివుంటే. ఇందుకు ప్రజలయొక్క సహకారం ఉందని చెబుతున్నాను. ఇంతకుముందు భువనగిరి సభ్యులు మాట్లాడుతూ ప్రజల యొక్క సహకారం వుందని చెబుతున్నారు. చెరువులను, కుంటలను ప్రజలయొక్క సహకారంతో మరమ్మతులు చేయించగలుగతాము. రజాకారు ప్రభుత్వపుకాలంలో రజాకారుకు వ్యతిరేకంగా పోరాడుతూ ప్రజల సహకారంతో చెరువులను, కుంటలను మరమ్మతులు చేయించాం. చెరువులకు గట్టు వేయించాం. తూములు పూడ్చించాం. ప్రజలయొక్క సహకారంతో యీ పనులు చేయగలమని చెప్పటానికి యీ ఉదాహరణలు ఇస్తున్నాను. ప్రభుత్వం డబ్బులేదని అంటున్నారు నందికొండ ప్రాజెక్టు కట్టాలన్నా, రోడ్లు వేయించాలన్నా, టూకానాలు ఎక్కువచేయించాలన్నా డబ్బులేదని దివాళాకోరు ప్రభుత్వం చెబుతోంది. డబ్బులేదని మాకూతెలుసు. కాని డబ్బును రాబట్టి విధానాలు ఉన్నాయి. సైజాం దగ్గర కోట్ల కొలది డబ్బు మూలుగుతోంది. ఆ డబ్బును స్వాధీనపర్చుకొనే ధైర్యం లేకుండాఉంటే, కనీసం రాజప్రముఖ్ వద్దనుంచి ఆ డబ్బును అప్పుగానైనా రీసుకోవచ్చును. ఈ ప్రాజెక్టుల నిర్మాణం చేయవచ్చును. ఈ చేతగానిప్రభుత్వం డబ్బులేదని అంటున్నదే గానీ, డబ్బు వచ్చేందుకు సరియైన మార్గములు ఆలోచించడం లేదు. మేముచెప్పే మాటలన్నింటినీ ప్రభుత్వపక్షం కాదనడం, ప్రతిపక్షంవారు ఏదీ చెబితేఅది వారు వ్యతిరేకించడం ప్రభుత్వపక్షంవారు నేర్చుకొన్నారు. అదే వారికి అలవాట్లైపోయింది. మా సహకారం లేదని అంటున్నారు. మేము ప్రజలకు మేలు చేసేందుకు అన్నివిధాలా సహకరించడానికి సిద్ధంగాఉన్నాం. ఆహార, ఆర్థిక సమస్యలను పరిష్కరించడానికి, రాష్ట్రంలోని చెరువులు కుంటలు మరమ్మతులు చేయించడానికి మేం సిద్ధంగానే ఉన్నాం. అదే దృష్టిలో ప్రశ్నలు పేస్తున్నాం. సప్లయ కమిటీలో, ప్లానింగ్ కమిటీలో, ఎక్స్‌జిజి కమిటీలో మొదలైనవి ఎవరినీ



ప్రశ్నలు అడిగితే ప్రభుత్వం కప్పిపుచ్చడానికి ప్రయత్నం చేస్తోంది. గాంధీర్థాల్లో స్వల్పము కమిటీలు ఉన్నాయి. ఎద్వైజరి కమిటీలు ఉన్నాయి. అఫీషియల్, నాన్ అఫీషియల్ ఎడిటర్లు ఉన్నారు ఇటువంటి కమిటీలు ఉన్నాయి.

श्री रतनलाल कोटेचा (पाटोदा) :—सप्लाय कमेटी के मंत्रियों से यहां क्या ताल्लुक है वह मेरी समझ में नहीं आता ।

شرعی - راجہ رام ( ریسر ) - اے آئی اے کے لیے سب سے زیادہ تعلق ہے۔

శ్రీ ఆరుట్ల రామచంద్రారెడ్డి : కాబట్టి మేము ప్రభుత్వముతో సహకరించడానికి సిద్ధంగానే ఉన్నాం. మీరు భూసంస్కరణల బిల్లు తీసుకవచ్చినపుడు మేము చర్చించాం. మేము ఆ చర్చలలో పాల్గొన్నాం. ఎక్కడైతే మేము ఏకీభవించడానికి ఇష్టపడలేదో అప్పుడు వాకౌట్ చేశాం, చట్టములోగల పాజీటివ్ సైడును తీసికొని సహకరించి పనిచేస్తాము. ఆ దృష్టిలోనే ల్యాండ్ కమిషన్ కు మా పి. డి. ఎఫ్ పక్షం తరపున అధ్యక్షిని నిలబెట్టాం. ఇప్పుడు అధికారంలో ఉన్న పార్టీ ఏవిధంగా మా అధ్యక్షిని ఓడించడానికి ప్రయత్నంచేసింది, ఏ విధంగా కుట్ర పన్నింది చెప్పనక్కరలేదు. ల్యాండు కమిషన్ ఏర్పడింది. ప్రభుత్వంవారు నిజంగా ప్రతిపక్షాల వారి సలహాలను కోరుతున్నట్లయితే ఎప్పుడైనా యీ ౧౬ మంది మంత్రులలో ఒకరైనా మమ్మల్ని పిల్చి విషయాలు మాట్లాడాారా? అనెంట్లీ, ఫ్లోర్ మీదకు వచ్చి స్పేజీ మీదకు వచ్చి “మీరు సహకరించడంలేదు; మీరు సహకరించడంలేదు” అని ఊతపదాలు వాడుతున్నారు. ఈ విధంగా చెప్పడం సరైందేకాదు. ఏ విషయంలో మీలో సహకరిస్తున్నామో, ఏ విషయంలో సహకరించలేక పోతున్నామో మీకూ తెలుసు. మేము సహకరించాలను కొన్నప్పుడు సహకరిస్తానే వున్నాము. మేము సహకరించడములేదని రాజప్రముఖ్ కూడా అంటున్నారు. అన్నిపార్టీలవారు సహకరించి పని చేయవలసిన అవసరం వచ్చింది. యుద్ధ ప్రమాదం మన దేశానికి ఏర్పడింది. యు. యస్. పాకిస్తాన్ సైనికసంఘీతో మన దేశానికి యుద్ధ ప్రమాదం ఏర్పడింది. ఈ యుద్ధ ప్రమాదాన్ని ఎదుర్కొడానికి, అవసరమైతే ఆయుధాలు పెట్టుకొని అమెరికాకు వ్యతిరేకంగా యుద్ధరంగంలో నిలబడి పోరాడుతామని మా పార్టీ ప్రకటించింది. ఆంగ్లో అమెరికన్ సామ్రాజ్యవాదులతో మన ప్రభుత్వం ఆర్థిక సంబంధాలు పెట్టుకొంది. మన దేశం ఆహారధాన్యాలకు, గోధుమల కోసం, బియ్యం కోసం, అమెరికాపైరు చూస్తున్నాం. చివరకు, యుద్ధపరికరాల్లోన ఆయుధాలకు, సైనికులకు కావలసిన తుపాకులకు కూడా అమెరికా పైవే చూస్తున్నాం. ఈ విధంగా మనం అన్ని రంగాల్లో అమెరికాతో సంబంధాలు పెట్టుకొంటే, అమెరికా యుద్ధం ప్రకటిస్తే మన దేశ రక్షణకు కావలసిన ఆయుధాలు యుద్ధసామగ్రి ఎక్కడనుంచివస్తాయో? మన దేశ స్వార్థక్ర్యాన్ని రక్షించుకోవలసిన బాధ్యత మనపై ఉంది. మనదేశాన్ని యుద్ధంనుంచి రక్షించుకోవాలంటే మనదేశం స్వయంపోషకం కలిగిఉండాలి. దేశ రక్షణ విషయంలో ఆయుధాలు గొని, తుపాకులుగొని, ఆర్ మ్స్ ఎమ్మ్యునిషను లో గొని మనం స్వయంపోషకం కలిగిఉండాలి. మనదేశాన్ని సైనికంగా స్వయంపోషకం చేసుకొనేందుకు, అహారవిషయంలో స్వయంపోషకం చేసుకొనేందుకు దేశాన్ని పారిశ్రామికంగా అభివృద్ధి చేయడానికి ప్రతిపక్షం అన్ని విధాలా లోభదులను ఘంటాపధంగాచెబుతున్నాను.

श्री लखमाजी घोडीबा पाटिल (आष्टी) :—आनरेबल मॅबर अगर पूरे दिन बोलें तो हूयें  
बुझर नहीं है लेकिन वे कम से कम हिंदी में बोलें तो अच्छा होगा यही मेरी अपील है ।

శ్రీ ఆరుట్ల రామచంద్రారెడ్డి :—అయితే, మధ్య మధ్య మిత్రులు లేచి మాట్లాడుతున్నారు. నేను మాట్లాడేభాష కొందరి సభ్యులకు తెలియక పోవచ్చును. నేను హిందీలోగాని ఉర్దూలోగాని మాట్లాడితే వా భావాలను పూర్తిగా తెలియజేపు లేను కనుక వా భావాలను పుష్పంగా తెలియజేసేందుకు తెలుగులోనే మాట్లాడుతాను. ఈ నాడు అనేక విషయాలు చూస్తున్నాము. కాశ్మీర్ లో స్వాతంత్ర్య పోరాటంతో సహాగారికి కుడిభుజంగా నిలబడి పోరాడి పేరుగాంచిన షేక్ అబ్దుల్లాను ఏమిచేశారో చూశాము. ఆంగ్లో అమెరికన్ సామ్రాజ్యవాదులు ఆ షేక్ అబ్దుల్లాను బుట్టలో పేసుకున్నారు. ఇరాన్ లో సాదీఖ్ ప్రభుత్వాన్ని కూలద్రోశారు. అరేబియన్ దేశాలందు అనేక కుట్రలు పన్నబడుచున్నవి. ఆంగ్లో అమెరికన్ సామ్రాజ్యవాదులు ఏ విధంగా కుట్రలు పన్నుతున్నారో, యీ ప్రభుత్వము, దేశంలోని అన్నిపార్టీలు వెయ్యి కండ్లతో చూడవలసి యున్నది. అమెరికన్ సామ్రాజ్యవాదుల ఏజెంట్లు హైదరాబాదు స్టేటులో తేరని అంటే పొరపాటు పడుతున్నారు అని చెప్పక తప్పదు. కాంగ్రెసు పార్టీవారు, ప్రజలు అందరు వారి కుట్రలను వెయ్యి కళ్ళతో కనిపెట్టి చూడటం అవసరమని మనవి చేస్తున్నాను.

శ్రీ—శ్రీ సంవత్సరమునకు ప్రవేశ పెట్టబడిన బడ్జెటును చూస్తే, అది ప్రజల మేలును దృష్టిలో పెట్టుకొని తయారు చేసిన బడ్జెటు కాదని తెలుస్తుంది. హైదరాబాదులో వుండే పెద్ద పెద్ద జమీందార్లయొక్క జాగీర్దార్లయొక్క ప్రయోజనాలను దృష్టిలో వుంచుకొని వారి ప్రయోజనాలను కాపాడటానికి కంకణం కట్టుకొని వారికి మేలుచేసే దృక్పథంతో వారి ప్రయోజనాలను కాపాడే దృక్పథంతో అటువంటి మొదడుతో ఆలోచించి తయారు చేసిన బడ్జెటు అని చెబుతున్నాను. ఈ బడ్జెట్టు జాగీర్దారీ, జమీందారీ బడ్జెటుని ఒక మాటలో చెబుతున్నాను. ఇది ప్రజల మేలును ప్రజల యొక్క ఆర్థిక పరిస్థితిని దృష్టిలో వుంచుకొని చేసినది కాదు. ఈ బడ్జెటు ప్రజలను దృష్టిలో వుంచుకొని తయారుచేసిందా అని ఆలోచిస్తే యీ ప్రభుత్వములోని బూర్గులవారు రంగారెడ్డిగారు ఎవరికి ప్రాతీనిధ్యం వహిస్తున్నారో చెప్పనక్కరలేదు. జమీందార్లకు జాగీర్దార్లకు ప్రాతీనిధ్యం వహించి వారిని కాపాడటానికి కంకణం కట్టుకొన్న బూర్గుల ప్రభుత్వము తయారు చేసిన యీ బడ్జెటును అంగీకరించడానికి మేము సిద్ధంగా లేము. రజాకార్లు ప్రభుత్వం స్థానంలో యీ ప్రభుత్వం వచ్చింది. ఆ రజాకార్లు ప్రభుత్వం యీ ప్రభుత్వానికి, వీరు అధికారానికి వచ్చినప్పుడు ౭౦ కోట్ల రీజర్వు ఫండును అప్పగించారు. ఈ ప్రభుత్వం గత ౬, ౭ సంవత్సరాలనుంచి పరిపాలన చేస్తూ వారిచ్చిన రీజర్వు ఫండునంతా హరింపజేసి ఇప్పటికి ౬౪ కోట్లు అప్పులున్నాయని చెబుతున్నారు. ఇంకా ఈ ప్రభుత్వం ఒక సంవత్సరం ఊండవచ్చు; లేదా రెండు సంవత్సరాలు ఊండవచ్చు. ఈ ప్రభుత్వం నిలబడటానికి డెఫ్యూట్ మంత్రిలనే కాకుండా ఇంకా ఎక్కువ పార్లమెంటరీ సెక్రటరీలను కూడా వియమించుకోవచ్చు. ఏమైనా కొద్ది రోజులలోనే యీ ప్రభుత్వం గద్దె నుంచి తీగక తప్పదు. ఈ ప్రభుత్వం గద్దె నుండి దిగినప్పుడు అప్పుడువచ్చే మాతన ప్రభుత్వానికి ౭౦ కోట్లు అప్పు అప్పుగిస్తుందని చెబుతున్నాను. వీరి స్థానంలో వచ్చే క్రొత్త ప్రభుత్వానికి ౭౦ కోట్లు రూపాయలు అప్పు అప్పుగిస్తే ఆ ప్రభుత్వము యీ డబ్బును గురించి మీ దగ్గర నుండి సమాధానం కోరుకుంటుంది చెబుతున్నాను. ముప్పల్ని అడిగేవారెవరని అనుకుంటున్నారు. కాబట్టి మీరు



be charged to or which will be met from the Consolidated Fund. We will not be asked to say anything on the Public Account. But it is very necessary for us to take all these three into account, so that we can have a very correct picture of the finances of the State—not only of the finances directly concerned with the State, but also finances concerning other sphere.

A close analysis of the Budget will reveal that in these three years about 13,24,00,000 have been taken out from our cash balances. We can say that this has been due to fall in collection of revenues or due to increase in other expenditure. Whatever it may be, our balances have been expended to the extent of Rs. 13 crores and odd. If we turn the pages of the Memorandum we find that about Rs. 14 crores of cash balances were handed over (or brought forward), *i.e.* the opening balance in 1952-53 was about Rs. 14 crores. But we are informed that there will be a closing balance of Rs. 225 lakhs at the end of this year. From 14 crores to 225 lakhs. That is the downward trend of the graph of the cash balance. But I would like to know from Government whether this is true. In my calculation I found that this cash balance will be reduced to an effective cash balance of—1.21. I may be questioned 'how'. The hon. Finance Minister said, Rs. 150 lakhs, would be necessary to keep as a deposit in the Reserve Bank towards facilities for small coins. I have not found that item in any of these accounts affecting our cash balance.

In the speech of the hon. Finance Minister it is clearly said that a crore and fifty lakhs have to be arranged to be deposited in the Reserve Bank of India. If I am mistaken, I may be corrected later on. If it is true that it has not been shown here, it may be taken it will affect our cash balances. As it has been already admitted out of this a crore and 97 lakhs were held up in London. I am therefore not pessimistic or I am not discouraged in the matter of the solvency of the State but I am a bit worried about the cash balances. What we should be most concerned with is about the ways and means position.

One of the hon. Members from the Opposition has complained about the deficit character of the budget. I have to congratulate the hon. Minister for Finance for having closed the revenue account with only 1 crore 6 lakhs deficit. All the while, I was expecting the Hyderabad State Budget should have at least a deficit of 3 to 4

crores. There should be nothing surprising in our budgets everywhere as they have been linked up to the Five-Year Plan. When once we accept the Five-Year Plan and when once when we have committed that we expend about 50 crores of rupees—that is what I take to be the size of our Five-Year Plan; it is not 40 crores—our budget must be so framed to meet the plan. So there won't be any surprises in any budget excepting the taxation proposals and I complain why the hon. Finance Minister did not take to more taxation. This is a charge against the Government. The Members are not going to be satisfied with the orthodox type of a surplus budget: what the Members demand is whether the expenditure year to year is in conformity with the proposals of the plan; and we have not had any statement which can give us a picture of the Five-Year Plan as it has been implemented in these three years—what the expenditure in these past 3 years has been, what the proposals were and what the gap is. In my opinion, it might be missing by a margin of about 7 to 8 crores of rupees easily. I would like to put a straight question whether those 7 to 8 crores of rupees are going to be expended in the year 1955-56. Even though we might find money the administrative machinery will not be able to expend so much money. Therefore, it is better that the Government would inform the House where we stand in respect of the Plan.

Certain States, particularly in the South, have been showing great deficits in their budgets. For instance, Andhra has shown 2 crores 99 lakhs deficit, in the revenue account; Mysore has shown 3 crores 10 lakhs deficit; and U.P. has shown 3.91 crores deficit. West Bengal has shown 12.43 crores deficit. So we should not be surprised or carried away if there is any deficit. So I must conclude from this that if there has not been more deficit we have been hesitating to spend more; and even in the matter of taxation I do not think we have reached the peak as many hon. Members complain. I ask them to examine the budget receipts. The revenues from the Hyderabad State as collected by the State Government are only 23 crores. In 1952 it is 23 crores and in the year 1954-55 also it is 23 crores. If we have seen any increase in the figure it is because of Central Grants. The Central grants have been in the year 1952-53, for which we have got actuals, is 3.81 crores—a few lakhs this side or that; and the Central grants in 1954-55 as expected

would be 4.98 crores. So if there has been any increase in the receipts compared to 1952-53 it is because of central assistance but not of any greater realisations from our people. So the sum total of the revenue collections either through taxes or commercial income in whatever shape it is, is only 23 crores. So the complaint that we have been taxing heavily and that we have reached a saturation point may not be correct. If that is the case, can we carry out the estimated expenditure with this income? Already, one hon. Member from the Opposition—I think the hon. Leader of the Opposition—has complained about the non-realisation from the agricultural income-tax. It is a very pertinent remark and I am sure the Government would take note and reduce the limit still lower. Instead of Rs. 10,000 they should make it Rs. 5,000. They should see that proper collections are made.

شری کے - وینکٹ رام راؤ (چنا کوٹڈور) - مجھے ایک چیز کہنا ہے - فینانشل کمیشن کو جو میمورنڈم پیش کیا گیا تھا اس میں خود حکومت حیدرآباد نے مان لیا ہے کہ ساجو ریشن پوائنٹ (Saturation point) پہنچ گیا ہے میں سمجھتا ہوں کہ شاید آپ اس وقت منسٹر نہیں تھے -

*Shri V. B. Raju* : There are other ways of taxation. What I mean is that the capacity to pay tax is not a static matter. As prosperity grows—we should admit that it is growing gradually though not very rapidly—the capacity to pay tax also grows. We have to find new avenues. I have not said that we have to tax the cultivator, just now just that is to say, any further assessment of the land revenue. Wherever there is surplus wherever there is capacity to pay, we have to tax; otherwise, we cannot depend upon mere borrowing. If we analyse the budget we find that the amount towards debt charges and other liabilities is taking a major slice. Therefore, let us be not very sentimental when we speak about finances. There is neither party nor policy nor sentiment when we speak about rupees, annas and pies. When we want money we must find money. I do appreciate when it is said that the Nizam should be approached. But do not take it that the Nizam has not been approached. He had been sounded in all possible manners. Do not think that the Congress party is so dumb or is so hard-hearted as not to respond to the remarks and appeals of the Opposition. We too, in our own way, have been bringing pressure on the Government and the

result is the reduction of 25 lakhs of rupees in the Sarf-e-khas compensation. As a matter of fact, we refused to vote; it might not have come to the notice of the opposition as it is a party matter. I do appreciate that suggestion but mere appreciation is no good. The Rajpramukh or the Nizam must feel the necessity; and he must be made to feel it. We have to find a way, a method and let us try. But apart from that, I would say that we have got to find new ways of taxation. Hon. Members might have noted that some of the other States have taken to levy a surcharge on land revenue, enhancement in the water rate, etc. In Hyderabad, we are trying to talk too much with sentiment. We speak that people need not pay taxes further with the idea that more votes will be cast for us, etc. Votes are not going to be cast on these points or on a consideration of these matters. People cast votes to those or to that party or to that Government when things are done to their requirements. That is why we should see to whichever party we may belong, that we fulfil the commitments that are made in the Five-Year Plan and we keep up to the targets.

In the current year's accounts, I have found one item, that is about 5 crores of rupees as being lent to the State Bank. That affects the cash balances. We have borrowed from outside (bazaar) at 4 per cent and I do not know what interest we get from the State Bank. That is a thing that might have missed the notice of the Government. They have not placed it before the House in the current year's accounts. About this 5 crores of rupees which have been lent from our cash balances to the State Bank, I want to ask why it was necessary to lend and at what rate it was lent? This must be made known to the House. If those 5 crores of rupees are with us, we may not experience any troubles. So this point the Government have to clarify.

Then about the proportion between the nation-building items and other administrative items. In 1954-55 if we take the road transport accounts and the electricity department accounts as being the accounts for development departments, the proportion is 50 to 50. It is not bad. But if we take away those two items the proportion is 45 to 55. I have been trying to know whether the Government has been trying to endeavour to reduce the percentage of expenditure on the administrative departments. I have not been convinced of

the seriousness about it because in the new items of expenditure out of the provided amount of 80 lakhs 40 thousands 58 lakhs go for nation-building departments and 27 lakhs are allotted to the other administrative departments. So, this must be taken note of that while we reduce the expenditure in one administrative department we are compelled to add to the other administrative departments. In the process of working in these three years, every year there has been a savings made in the nation-building departments, while there is more expenditure in the non-nation-building departments. I do not know whether it has been the habit of the Finance Department to show little amounts while taking sanction on the administrative departments and showing greater amounts on the nation-building departments and then come to the House with supplementary demands and ultimately showing savings in the nation-building departments and more expenditure in the non-nation-building departments. I have seen in these three years and for the benefit of the hon. Members of the House I may tell that savings have been shown in 1952-53 as under: Irrigation 15 lakhs, education 13 lakhs and agriculture 15 lakhs, and civil works 43 lakhs. When we complain there is not much work being done in the departments which contribute to the nation-building activities we find here that savings are made and the complaint is made in the end that they have not been able to expend. There must be something wrong somewhere. I am informed that sanctions are made very late in the months of January and February and the concerned departments are not able to spend the amount. When there is so much demand for more primary schools or there is so much demand for extra teachers, I do not know how there should be a saving in the education department. Similar is the case with the agriculture department or any other nation-building department. As a matter of fact, they should spend more than what is already provided in the budget, because we are already behind. This should be taken note of.

One common feature I have found in the States of Madras and Mysore is this:- They have levied additional sales tax on the mill made cloth—0-2-0 in a rupee and 0-1-8 in a rupee respectively. It is very healthy approach. It conforms to the policy of encouraging rural industries. In my opinion, if there should be any good relations or if there should be any balancing between the large scale industries and the small scale industries cottage industries and their products should be encouraged. The products in the large scale industries should be



subject to heavy excise duties and export duties should be reduced on them so that the manufacture of our large scale industries can find export market and all taxation particularly excise duties shall not be levied on hand-loom cloth and other cottage products and the local consumer should consume the latter. In my opinion, this would be a correct policy and if I recall the Japanese adopted the same approach before the war While Japanese goods sold cheaper in other countries they sold in their home country at a higher rate. So the large scale manufacturer has to find outside market and home market should be reserved completely to the small scale industries.

That can be achieved by levying a heavy excise duty on the manufactured products coming from large scale industries. If Mysore and Madras have done this, I think it is in the right direction. Our State Government also would have considered about this. We passed an enactment for betterment levy. We do not find any income from the recoveries. Even the present sales tax realisations, so surprising it is, have not reached even the two-crore target. On one side there has been pressure from the people of Hyderabad and on the other from the Government of India to abolish export customs. We hear from the Government that they have been able to impress upon the Government of India the need to allow us to continue this for one more year. 1 crore and 35 lakhs from export customs, 65 lakhs of surcharge, thus 2 crores of rupees have to be made up. In what way are we going to make it up? It is only through realisation of sales tax. If sales tax realisations have not reached that mark, our deficits in future will be much more. Therefore I hope the Finance Minister will find ways and means to see that realisation of sales tax is enhanced. Is this laxity in realization due to the increase in the rate of taxation or is it due to the reason that the Department has not been able to build up an organisation, particularly in district areas? What are the difficulties?

There are certain things done in 1953, which should be appreciated. One thing we should appreciate or we should thank nature (for its kindness) which has been responsible for lifting controls on food stuffs. But lifting of controls has its repercussions also. As has been remarked by one of the hon. Members from Opposition, the producer-cultivator may be put to some difficulty in paying back the taccavi loans if the prices go down. But control does not mean pegging prices at the floor level. It is only the ceiling prices that are controlled. So it will not be possible for us to keep the floor

prices of any commodity and compel the consumer to purchase. But it happened that the system of controls resulted in hoarding and restriction on movement; thereby the commodity had a price. That thing is not now available. So there are apprehensions that the prices may still go down. Before the controls were removed, there were apprehensions that the prices may go up, but now the apprehension is that it may go down. If the prices start coming down, particularly agricultural produce, there will be a terrible crisis in the rural sector. Our industries will also suffer, because the cultivator will not be able to purchase the industrially manufactured goods. In this context I would like to answer the remark made about deficit financing or deficit budgetting. This year's deficit of a crore or two cannot be called deficit financing. This subject is for the Centre to look to and the State's deficit has somehow or other to be covered up, either by taxation or by trying to draw upon the balance of reserves or by central assistance. We do not have control over currency, *i.e.*, the power to issue further notes. As I just said, the prices of commodities are showing a downward trend. There is no fear that there would be inflation and the prices would shoot high and the purchasing power will come down. The prices in June 1953 reached a peak level and they have been gradually coming down since. Therefore any deficit in our budget is not going to affect much. We need not worry about our deficit budget.

Certain good things have happened, last year, as I said. One such is the lifting of controls. The next is the constitution of the Land Commission which is going to work. Then the National Extension Services have been started. In future our economic development will be related to four sectors: one, certain items under the first five-year-plan, and subsequently with the second five year plan; second, community development; third, the National Extension Services and fourth, the local development works. I am glad that 1953 has been the year for starting these National Extension Services. We are going to have a Land Improvement Board also which may do some good work, particularly in Marathwada where bunding is necessary. Industrial Laboratories have been opened and in this connection I want to say that it is a white elephant on us. Of course, industrial research is necessary, but any research that will be made will not be confined to Hyderabad's frontiers alone and as such the Government of India should bear the expenditure. Otherwise, the State's funds would not be able to cope with its requirements.

Another happy incident that has taken place is the Nizam's voluntary reduction of 25 lakhs of rupees. I do not know why this has not been mentioned in his address. I also find in the loan and debt account, that some interest is going to be paid to the loans of the Nizam. I do not know what the constitutional position is; whether this House has anything to say on this point of borrowing and the determination of interest on the loans. I do not find any mention of this in the Constitution. That is one of the most important things that does not come before us, *i.e.*, the amount or quantum of loan the Government desires to borrow, the terms on which it likes to borrow and the terms on which it wants to repay. This is not a matter that comes before us. But anyhow we are indebted to the Nizam. We have borrowed from him more than 18 crores of rupees—it may have exceeded even 20 crores and if he begins to charge interest and demand interest, then it will be a heavy liability on us. I am afraid, when I compare this budget with last year's, on one item—particularly the miscellaneous item—I find  $2\frac{3}{4}\%$  being entered there and on about 4 crores and 40 lakhs of rupees some 12 to 13 lakhs of interest is to be paid. Then, I find that no benefit has come out by the reduction of 25 lakhs of rupees. The Nizam may do it from the front door and take 11 to 12 lakhs of rupees from behind. Anyhow this is a very knotty affair particularly for us to square up with the Nizam. The hon. Members may say 'Let us borrow', but I am not very anxious to borrow for the reason that the re-payment of the loan and the interest charges we have to pay will take away all the current receipts. So, some effort has to be made of compounding the Nizam's loans. We have been only catching the tail, *i.e.*, 50% Sarf-e-khas compensation. But the main burden is the huge loan that he has kept on our shoulders to carry and I am afraid and I am not sure that we can pay back in a reasonable period. Therefore, some effort will have to be made in sitting with the Rajpramukh and then coming to certain terms and in this regard I submit before the House that about  $4\frac{1}{2}$  crores of rupees have been given as a loan just after police action for running the administration. That is the information we have. Because the treasury was emptied by the Government before Police Action. It was not given for any beneficial or development work. The Rajpramukh can sympathize with the condition of the State and sit with the Government to see that the loan amount is reduced by an appreciable extent. Otherwise, the tax-payer in the State will not be able to better his condition.

To improve our finances, we have got to sell the property in the city itself, *i.e.*, the City Improvement Board's buildings. I do not know why the Government is hesitating to sell these buildings. That money can be rolled up. Even the sale of the buildings at Delhi and the sale of property at Bombay have taken a lot of time. If we can dispose all such properties which are not very useful to us, we can improve our ways and means and balance our position. The money that is held up at London (1.97 crores) has not been settled and it has also taken a long time. Of course, I know it is not within our purview or capacity to set it right but anyhow some sort of an effort will have to be made in this direction.

An Industrial Finance Corporation has been set-up this year. It is a very good thing. It is a happy beginning. The small scale industries can look forward to this Corporation for funds and the industrial development of the State will make some rapid strides. But I would like to say one thing, about the Chairman of the Corporation. In my opinion, the Chairman of such a Corporation should not be an industrialist. I would always plead that a legislator should not be a vakil. I do not want to cast an aspersion on the lawyers' profession. Similarly an industrialist should not be at the helm of a Corporation, particularly a Corporation which lends money. The industrialist himself may have certain interests in the industry. Such a thing has happened at Delhi also and I wish the Government will keep this in view atleast when a change is necessary sometimes after.

We have lost nearly 25 to 30 lakhs of rupees this year for not having acted expeditiously. The first is levying full assessment on Inam lands. The second is the abolition of Mansabs to the extent that we could. The state's finances have lost 28 to 30 lakhs of rupees under these two items. The Government does things according to admitted policies. The Congress party also has laid down this policy as any other party has done. Particularly in Hyderabad we have these 4 or 5 items before us like the abolition of Jagirs and Crown lands and paying only the minimum compensation, then the abolition of Inams and abolition of Mansabs and also the Watandari, which is an administrative reform. There is no difference of opinion on these things. The Congress party is also anxious that these relics or past evils must be eradicated at the earliest so that the economic and social development could go ahead rapidly. But what happened is that by not

doing things in time, the grace of it is lost and the persons sitting on the left get the credit. We are losers both ways. We have the same views as the members of the other side. We quarrel with our leaders and voice our feelings in the party, whereas the members on the other side take the advantage of saying things from this platform and the Congress party is deprived of the credit that should go to it. This may be taken note of by the leaders of the Congress party and the things that needs to be done may be done in time and with grace.

*Mr. Deputy Speaker :* How much more time does the hon. Member require ?

*Shri V.B. Raju :* Without taking any more time, I request the Government to pay attention and throw more light on the following matters: Firstly, the Five-year Plan and its working, *i.e.* the activities carried out the plan in the three years should be made available. Second the nature of the community development schemes and the targets that have been achieved. Third, the arrears that Government have to realise from certain departments like Forests and Abkari. A statement of loans that have been given to various institutions should be given. I would like a committee of experts to be set up, as the Centre has done (though the work is entrusted to an individual), with a view to see how the expenditure under the Five-year Plan has secured returns ; whether the unit cost has exceeded the standard minimum or whether there is any extravagance. There is no use in spending the money, unless the targets are realised and for that purpose a committee should be set up.

I would say that the Government has done its best in not taxing the people and on this account, the Opposition has no complaint. But the Government will be doing a mistake, if it will not tax now. It will be missing the bus because there is a downward trend of prices.

The House then adjourned for recess till Thirty Five minutes Past Five of the Clock.

The House re-assembled after recess at Thirty-Five minutes past Five of the Clock.

[ MR. DEPUTY SPEAKER IN THE CHAIR ]

شری سید اختر حسین ( جنگاؤں ) جناب اسپیکر صاحب - آج ہم جمہوری زندگی کے تیسرے سال میں داخل ہوئے ہیں - جو نیا بجٹ ہمارے سامنے آیا ہے اسکے بارے میں یہاں اپوزیشن کی جانب سے خاص طور پر یہ سمجھا جاتا ہے کہ حکومت اور حکمران طبقہ کو کچھ ایسے مشورے دئے جائیں جن سے وہ کمزوریاں اور خامیاں دور ہو سکیں۔ و اس وقت موجود ہیں - لیکن موازنہ پر گفتگو کرنے سے پہلے میں یہ ضروری سمجھتا ہوں کہ جس دیش میں ہم رہتے بستے ہیں وہاں کے خارجی حالات کس قسم کے ہیں۔ کس قسم کا نیا سماج پیدا ہو رہا ہے اور وہ کونسے طبقات ہیں جنکی کشمکش بڑھ رہی ہے اسکے بارے میں کچھ عرض کروں - جیتک ان سوالات پر نظر نہ ڈالی جائے ظاہر ہے کہ ہم موازنہ کو صحیح طور پر سمجھ سکتے ہیں اور نہ اصولی طور پر کوئی صحیح رہنائی کر سکتے ہیں - کسی حکومت کا موازنہ صرف اعداد و شمار کا مجموعہ نہیں ہوا کرتا بلکہ وہ عکس ہوتا ہے آئینہ دار ہوتا ہے اوس سماج کا اوس سوسائٹی کا اور اوس طرز زندگی کا جس سے کہ وہاں کا حکمران طبقہ آگے بڑھتا ہے یا اسے پسپا ہونا پڑتا ہے - میں آج دیش کی حالت کو پیش نظر رکھتے ہوئے اور خاص طور پر حیدرآباد کے تعلق سے عرض کروں گا کہ ہم یہ کہنے اور یہ محسوس کرنے پر مجبور ہیں کہ پچھلے دو ڈھائی سال کے دوران میں جو توقعات اور جو امیدیں اس حکومت سے وابستہ تھیں اور عوام نے جو توقعات وابستہ کر رکھی تھیں اور جس طرح لوگ سوچ رہے تھے کہ نئی زندگی کی جانب وہ آگے بڑھ سکیں گے افسوس کہ حکمران طبقے کی جانب سے اس میں نہ صرف رکاوٹیں ڈالی گئیں بلکہ باوجود اون کوششوں کے جو عوامی جدوجہد کے ذریعہ جمہوری طاقتوں کو آگے بڑھانے کے لئے کی گئیں کچلنے کی مسلسل کوشش کی جاتی رہی - چونکہ ان کوششوں کے باوجود وہ تمنائیں پوری نہ ہو سکیں - اسلئے ہم کو جائزہ لینا ہوگا کہ وہ کونسے اسباب تھے وہ کونسی بنیادی باتیں تھیں جنکی وجہ سے یہ رکاوٹیں پیش آئیں - ہم دیکھتے ہیں کہ ساری دنیا اور خاص طور پر ایشیا اور ایشیا کے وہ دیش جہاں سامراجی اثرات ہیں یا (Colonial or semi-colonial countries) ہیں ان میں ایک ابھرتی ہوئی قوت آگے بڑھ رہی ہے - ہم دیکھتے ہیں کہ پچھلے چند سال میں ایشیا کے بڑے بڑے دیشوں میں وہاں کے عوام نے اپنی جدوجہد کے راستہ کو کاسیابی کے ساتھ طے کیا ہے اور یقین کیا جاسکتا ہے کہ انکا اپنی منزل پر پہنچنا مشکل نہیں ہے - ۱۰ - اگست سنہ ۱۹۴۷ع کو انگریز ہندوستان سے چلے گئے اور ہمیں آزادی مل گئی - لیکن کیا فرق ہے اوس آزادی میں جو ہمیں حاصل ہوئی اور اوس آزادی میں جو ہمارے پڑوسی ملک چین کو حاصل ہوئی - اسی فرق کو سمجھنے کے بعد ہم کسی نتیجہ پر پہنچ سکتے ہیں - میں اشارتاً مختصر الفاظ میں عرض کروں گا کہ جب تک سیاسی اقتدار عوام کے حقیقی نمائندوں کے ہاتھ میں نہیں آتا اون طبقوں کے ہاتھ میں نہیں آتا جو محنت کش عوام سے تعلق رکھتے ہیں - جو کسان اور مزدور

ہیں جنہیں ساج کی ریڑھ کی ہڈی کہا جائے تو بچا ہے۔ درمیانی طبقے کے وہ لوگ جو محنت کش ہیں جب تک انکے ہاتھوں میں اقتدار نہ آئے ان کے مسائل کو بھی جمہوری طور پر حل نہیں کیا جاسکتا۔ مکسڈ اکائی (Mixed economy) مخلوط معیشت کی جو باتیں کہی جاتی ہیں انکے صرف یہی معنی ہیں کہ انگریز تو یہاں سے چلے گئے لیکن انکا انداز فکر انکا انداز معیشت اور انکا سامراجی طریقہ ورثے کے طور پر باقی رہا۔ ہمارے نیتاؤں نے انہیں راستوں کو اختیار کیا اور انہیں راستوں پر مضبوطی کے ساتھ قائم ہیں۔ جن گورے آقاؤں کے خلاف ہم نے بڑی طویل جدوجہد کی تھی آج ان ہی کے راستوں کو ان ہی طریقوں کو کانگریسی نیتا باقی رکھنا چاہتے ہیں۔ ہمیں غور کرنا چاہئے کہ آخر ہماری معیشت میں کیوں اغطاط پیدا ہو رہا ہے۔ دن بدن ہمارے کچلے ہوئے طبقات کا معیار زندگی کیوں گرتا جا رہا ہے اور کیوں لوٹ کھسوٹ کرنے والے طبقات پرانی سامراجی طاقتوں کو اپنے ساتھ ملا کر لوٹ کھسوٹ میں برابر آگے بڑھ رہے ہیں تو ہم کو لازماً اس نتیجے پر پہنچنا پڑتا ہے کہ جب تک ہم اس بنیادی سبب کو دور نہیں کریں گے اپنی منزل مقصود تک نہیں پہنچ سکیں گے اوس منزل تک نہیں پہنچ سکیں گے جو جلو جہد کے زمانے میں ہمارے پیش نظر تھی اور آج بھی ہمارے سامنے ہے۔

اس مختصر سی تمہید کے بعد میں اس موازنہ کی جانب آتا ہوں جو ہمارے سامنے پیش کیا گیا ہے اور جس کے اعداد و شمار اور خاص مددات کے بارے میں کل سے آج تک مختلف تقریریں ہوئی ہیں۔ اس موازنہ میں آمدنی اور خرچ کی جو رقمیں بتلائی گئی ہیں ان پر نظر ڈالنے سے پتہ چلتا ہے کہ گزشتہ سال اور پیوستہ سال کے مقابلہ میں اس سال کوئی بڑا فرق پیدا نہیں ہوا ہے۔ ہاں تھوڑا بہت فرق جو نظر آتا ہے وہ پانچ سالہ منصوبہ کے تحت ہے۔ لیکن پانچ سالہ منصوبہ ہمارے ملک میں کس طرح چل رہا ہے میں اس جانب ایوان کی توجہ مبذول کراؤں گا۔ ہمیں یہ بھی دیکھنا پڑیگا کہ اس کا اگلا راستہ کیا ہے۔ اور یہ کہ فائیو ایر پلان کے جو اہم مددات ہیں ان کا تعلق کس نظام سے اور کس طبقہ سے ہے۔ میں یہ کہوں تو بیجا نہوگا کہ یہ پانچ سالہ منصوبہ ایسی حقیقت ہے جس کو سر نہ بل کھڑا کر دیا گیا ہے۔ کسی جمہوری منصوبہ بند معیشت کے لئے یہ چیز ضروری ہے کہ لوگوں کی ضروریات اور ملک کے وسائل کے لحاظ سے منصوبہ بندی کی جائے۔ لیکن جس طرح کی منصوبہ بندی ہمارے سامنے آئی ہے وہ ہمارے ساج کے ایک ہی پہلو کو لیتی ہے۔ اوو اس میں بہت سی بدعنوانیاں ہیں اس کی ورکنگ میں کئی خرابیاں اور نقائص ہیں۔ اور تین سال گزرنے کے باوجود ہمارے سامنے اس کا کوئی واضح نقشہ نہیں آیا ہے۔ اور اس سے عوام کو کیا فائدہ ہوا نظر نہیں آتا۔ مرکزی حکومت کے فیٹانس منسٹر نے اپنی بجٹ اسپینچ میں کہا کہ ہماری ہر کیا پٹیا (Per capita) (انکم پچھلے سال سے بڑھی ہے۔ لیکن ہر کیا پٹیا انکم نکالنے کے طریقہ کا بھی جائزہ لینا پڑیگا۔ اس لئے کہ ایک طرف ہمارے ملک میں وہ امیر طبقہ ہے۔ وہ بڑے بڑے راجہ مہاراجہ ہیں۔

وہ جاگیردار ہیں جن کے لاکھوں اور کروڑوں روپیوں کی آمدنی ہے اور دوسری طرف وہ غریب کسان اور مزدور ہیں جن کو دو وقت روٹی نہیں ملتی۔ ان دونوں طبقات کی آمدنیوں کو ملا کر اوسط نکالا جانا ایک منطقی مغالطہ سے زیادہ اہیت نہیں رکھتا۔

مثال کے طور پر راج پرمکھ خزانہ سے سالانہ ایک کروڑ روپیہ حاصل کرتے ہیں۔ اور بڑے بڑے جاگیردار عہدہ دار اور وزرا لاکھوں کی تعداد میں سالانہ روپیہ حاصل کرتے ہیں۔ ان کے مقابلہ میں بہت بڑی تعداد ان کلرکوں اور چپراسیوں کی ہے جو دفتروں میں کام کرتے ہیں اور کم معاوضہ پاتے ہیں۔ ان دونوں کو ملا کر اگر اوسط نکالا جاتا ہے تو اس طرح صحیح صورت حال کیوں کر معلوم ہو سکتی ہے کہا جاتا ہے کہ حیدرآباد کا اوسط

پر کیا پیٹا انکم ۱۹۸ یا ۲۰۰ آتی ہے۔ لیکن میں پوچھتا ہوں کتنے لوگوں کو اتنی آمدنی میسر ہوتی ہے۔ کتنے لوگ اس طرح اپنی نیشنل انکم سے فائدہ حاصل کرتے ہیں۔ جب کبھی نیشنل انکم کا سوال آتا ہے ہمارے قومی کاموں کو ترقی دینے کا مسئلہ حکومت کے آرباب مقتدر کے سامنے رکھا جاتا ہے تو سب سے بڑا عذر جو ہمارے سامنے کیا جاتا ہے

وہ یہ ہے کہ ہمارے پاس روپیہ کی کمی ہے۔ میں اس مختصر وقت میں جو مجھے حاصل ہے زیر بحث بحث کے اس حصہ سے زیادہ تر بحث کروں گا جس کا تعلق اس امر سے ہے کہ ہمارے پاس روپیہ کی کمی کیوں ہے۔ اور یہ سوال کہاں تک درست ہے۔ اور اس کمی کو کس طرح دور کیا جاسکتا ہے۔ اس جانب کے ایک آنریبل ممبر نے یہ فرمایا کہ متبادل ذریعہ بتلائے جانے چاہئیں۔ اسی صورت میں گورنمنٹ ان سے فائدہ اٹھا سکتی ہے

اور اپوزیشن کا تعاون حاصل کر سکتی ہے۔ اسی لئے میں صاف صاف لفظوں میں چند ایسے پہلوؤں کی جانب اشارہ کروں گا جن پر اگر واقعی سنجیدگی اور خلوص نیت کے ساتھ غور کیا جائے اور کوشش کی جائے تو نہ صرف ہماری قومی آمدنی میں اضافہ ہو سکتا ہے اور بجٹ کا خسارہ دور ہو سکتا ہے بلکہ ہم ان کاموں کی طرف بھی آگے بڑھ سکتے ہیں جو ہمارے تعمیری کام ہیں اور جنہیں اولیت حاصل ہے۔ میں ان تفصیلات میں جانا نہیں

چاہتا کہ بجٹ کا کتنا حصہ تعمیری کاموں پر صرف ہونا چاہیے۔ لیکن میں یہ ضرور

اشارہ کروں گا کہ آنریبل ممبر فرام سکندر آباد نے ابھی ابھی اپنی تقریر میں فرمایا کہ ہمارے

پاس کیاش بیلنس) Cash balances (کی اس وقت

ضرور کمی ہے۔ لیکن یہ کوئی تشویشناک بات نہیں ہے۔ اور یہ کہ ہم بحیثیت مجموعی

آگے بڑھ رہے ہیں۔ ہمارا معیار زندگی بڑھ رہا ہے۔ لیکن اس کے ساتھ ساتھ انہوں نے یہ بھی

کہا کہ ہمارے بجٹ کو ایک خصوصیت پچھلے دو سال سے حاصل ہے وہ یہ ہے کہ ہم

تعمین کے کاموں پر جتنا روپیہ منظور کرتے ہیں۔ سال کے ختم ہونے پر پتہ چلتا ہے کہ

اتنا روپیہ خرچ نہیں ہوا ہے اور انتظامی امور اور سیکورٹی سروس کے لئے جو روپیہ منظور

کرتے ہیں وہ سال کے آخر پر نہ صرف ختم ہو چکتا ہے بلکہ اس میں مزید اضافہ کا مطالبہ

بھی پیش ہو جاتا ہے۔ یہ چیز اس بات کا پتہ دیتی ہے کہ ہم جس طریقہ سے سوچتے

ہیں کہ ہمارا معیار زندگی بڑھ رہا ہے ہماری آمدنی کے وسائل بڑھ رہے ہیں وہ صحیح



نہیں ہے۔ بلکہ اس ڈھانچے میں جو ہمارے سامنے ہے اس کی جو حقیقت ہے وہ اس طریقہ سے سب کے سامنے عیاں ہو جائے کہ ہماری آمدنی اور خرچ کا اصل رخ کس طرف ہے اور پھر ہمیں یہ بھی پتہ چل جاتا ہے کہ قومی تعمیر کے کاموں سے جو آمدنی ہونی چاہیئے و کیوں نہیں ہو رہی ہے۔ اسلئے کہ اس مد پر پورا روپیہ صرف بھی نہیں ہو رہا ہے اور دوسری جانب جس طرح سے منصوبہ بندی ہونی چاہئے اس میں بہت کچھ کمزوری اور خامی ہے۔ خسارہ کا بجٹ یقیناً قابل مبارکباد اور قابل خیر مقدم ہوتا ہے بشرطیکہ ہم یہ معلوم کر سکیں کہ ہمیں جو خسارہ نظر آ رہا ہے اس کی وجہ رقومات کا قومی تعمیر کے کاموں پر خرچ ہے۔ لیکن جیسا کہ میں نے ابھی کہا قومی تعمیر کے کاموں پر خرچ کا جتنا ہم اندازہ کرتے ہیں اتنا بھی ہم خرچ نہیں کرتے۔ ایسی صورت میں خسارہ قابل تشویش ہو جاتا ہے۔ پھر آخر یہ خسارہ کیوں ہوتا ہے۔ ہمیں اس کے متعلق غور کرنا ضروری ہے۔ اگر یہ کہا جائے کہ ہمارا معیار زندگی بڑھ رہا ہے اور ہماری

خوشحالی میں اضافہ ہو رہا ہے اور اس بات کو مان لیا جائے تو یہ سوال پیدا ہوتا ہے کہ جن مددات میں خسارہ نظر آ رہا ہے اسکی کیا وجہ ہے۔ کیا لوگوں کی قوت خرید اتنی کم نہیں ہوئی ہے کہ وہ اپنی ضروریات اور مطالبات کے بموجب روپیہ صرف نہیں کر رہے ہیں اور قومی آمدنی کو بڑھانے میں حصہ نہیں لے رہے ہیں؟ کیا لوگوں کے پاس روپیہ کی اتنی کمی ہے کہ وہ ایسے محاصل جو ان پر عائد کئے جاتے ہیں ادا نہیں کر سکر رہے ہیں؟ جن مددات میں خسارہ بڑھ رہا ہے انہیں دیکھنے سے تو یہی پتہ چلتا ہے کہ لوگوں کا معیار زندگی گھٹ رہا ہے۔ پنج سالہ منصوبہ کے تحت کہا جاتا ہے کہ پیداوار بڑھ رہی ہے۔ لیکن جب ہم اس کا تجزیہ کرتے ہیں کہ بڑھتی ہوئی پیداوار کا ہمارے ملک کے لوگوں کی آمدنی کے ساتھ کیا تناسب ہے تو ہم دیکھتے ہیں کہ پچھلے چند سالوں کے مقابلہ میں یقیناً صنعت اور زراعت کے بعض گوشوں میں ترقی ہوئی ہے لیکن اس پیداوار کے بڑھنے کا بوجھ کن طبقات پر پڑ رہا ہے

اس کو بھی دیکھنا ہوگا۔ اور اسکے ساتھ ہمیں یہ بھی غور کرنا ہوگا کہ آمدنی بڑھانے کے کیا نئے وسائل ہو سکتے ہیں۔ اور کس طریقہ سے ہم اپنی آمدنی کے وسائل کو مستحکم کر سکتے ہیں۔ میں اس موقع پر بجٹ کے ایک پہلو پر خاص طور سے متوجہ کروں گا جس کا تعلق ہماری صنعتی زندگی سے ہے۔ پنج سالہ منصوبہ میں زیادہ تر زور زراعت اور ہرجکتس پر دیا گیا ہے۔ اور جیسا کہ میں نے پہلے عرض کیا یہی وہ بات ہے جس کے بارے میں میں یہ سمجھا ہوں کہ حقیقت کو سر کے بل کھڑا کر دیا گیا ہے۔

یقیناً ہمارا ملک ایک زرعی ملک ہے۔ اور ہمارے زرعی وسائل بنیادی چیزیں ہیں۔ جب تک کسان کو زمین نہ ملے اس کے قرضوں کا بوجھ ہلکا نہ ہو اس وقت تک دیش کی ترقی کا راستہ نہیں کھلتا اس وقت تک پیداوار میں اضافہ نہیں ہو سکتا۔ اس وقت تک ہمارے وسائل نہیں بڑھ سکتے۔ لیکن اس کے ساتھ ہی ہم یہ بھی جانتے ہیں کہ ہماری زمین پر میان پاور (Man power) کا بوجھ زیادہ ہے۔ ہم یہ بھی سمجھتے

ہیں کہ کسان سے زیادہ آمدنی کا حصہ ہم کو حاصل نہیں ہو سکتا۔ اور اسکو ریلیف دیا جانا چاہئے۔ جس کے لئے ہمیں اس پر سے محاصل کے بوجھ کو کم کرنا ہوگا۔ اس لئے ہمیں اپنی صنعتوں کی جانب دیکھنا پڑتا ہے۔ جب تک دونوں مل کر ساتھ ساتھ آگے نہ بڑھیں ہمارا یہ پانچ سالہ منصوبہ کامیاب نہیں ہو سکتا۔ اسی پہلو کو ہم نے سب سے زیادہ نظر انداز کر دیا ہے۔ حیدرآباد ہی کو لیجئے۔ حیدرآباد میں جو قدرتی

وسائل ہیں جو میان پاور حاصل ہے وہ یقیناً ایسی دولت ہے جس سے بہت کچھ فائدہ اٹھایا جاسکتا ہے۔ اس سے ہم اپنی آمدنی کے وسائل کو بڑھا سکتے ہیں۔ میں مختصر الفاظ میں چند خاص خاص صنعتوں کی جانب اشارہ کرونگا جو آج حیدرآباد میں قائم ہیں یا جو قائم ہو سکتی ہیں۔ اور یہ ثابت کرنے کی کوشش کرونگا کہ ہماری حکومت کی صنعتی پالیسی ترقی پسند پالیسی بن سکتی ہے۔ اگر ہماری حکومت یہ سوچے کہ پبلک سیکٹر (Sector) کو ترقی دینا ہے تو ایسی صورت میں ہماری

بعیشت آگے بڑھ سکتی ہے۔ اس کے لئے ہمیں اس امر کو پیش نظر رکھنا ہوگا کہ ہمارے پاس لوگوں کی کیا ضروریات ہیں اور انکے کیا کیا مطالبات ہیں اس لحاظ سے ہمیں اپنی صنعتی پالیسی کو ترقی پسند خطوط پر بڑھانا ہوگا۔ اور آج دیش میں جو صنعتیں موجود ہیں انہیں ترقی دینے کے لئے اور انہیں باقی رکھنے کے لئے کوشش کرنی

ہوگی۔ حیدرآباد میں پچھلی جنگ کے دوران میں کچھ صنعتیں قائم ہوئی تھیں۔ لیکن پچھلے چند سال کے اندر ہمیں یہ دیکھ کر افسوس ہوتا ہے کہ بہت سی صنعتیں نہ صرف بند ہو گئی ہیں اور بہت سی صنعتیں ایسی ہیں جنکی حالت دن بدن بدتر ہوتی جا رہی ہیں۔ آخر اسکی کیا وجہ ہے۔ اس بارے میں میں یہ بتانا چاہتا ہوں کہ خود کانگریس کی مقرر کردہ پلاننگ کمیٹی نے صنعتوں کے متعلق جو مختلف سفارشات کئے تھے۔ آج کانگریس نے برسر اقتدار آنے کے بعد ان سفارشات کو گردوغبار کے ڈھیر میں ڈال دیا۔ اگر ان سفارشات کو سامنے رکھا جاتا جو لوگوں کے اپنے مطالبات کے لحاظ سے مرتب کی گئی تھیں تو یقیناً کافی کامیابی حاصل ہوتی۔ اس میں ایک سفارش یہ کی گئی تھی کہ مینیجنگ ایجنسیز کا

جو طریقہ رائج ہے وہ صنعتوں کے لئے مضر ہے اس کو ختم کرنا چاہئے۔ لیکن آئی۔ ٹی۔ ایف کی جانب سے ہماری صنعتوں میں جو روپیہ لگا ہوا ہے وہ ساری صنعتیں مینیجنگ ایجنسیز کے ذریعہ چلتی ہیں۔ مینیجنگ ایجنسیس اپنے منافعہ کے لئے اپنی دولت بڑھانے کے لئے صنعتوں کی ترقی کی جانب اتنا زیادہ دھیان نہیں دے سکتے جس طرح کہ انہیں دینا چاہئے۔ ہمارا تجربہ بھی یہی بتلاتا ہے کہ حیدرآباد میں جتنی صنعتیں مینیجنگ ایجنسیس کے ذریعہ چلتی ہیں ان کا

دیوالیہ نکلتا جا رہا ہے یا وہ اور کیا پیٹالائیز (Over capitalize) ہوتی جا رہی ہیں۔ ان میں کرپشن (Corruption) بڑھتا جا رہا ہے۔ اس لئے سب سے پہلی بات یہ ہے کہ مینیجنگ ایجنسیز کے سسٹم کو ختم کیا جانا چاہئے۔ اور جو منافعہ بخش صنعتیں ہیں انہیں حکومت کو خود اپنے ہاتھ میں لیکر چلانا چاہئے۔ ہم دیکھتے ہیں کہ حکومت نے سرپر اور سرسلک انڈسٹریز کو پرلا کے حوالہ کر دیا محض اس عذر پر

بنا، پرکہ اس کو چلانے کے لئے چند لاکھ روپیوں کی ضرورت ہے۔ اور حکومت کے پاس ان صنعتوں میں لگانے کے لئے اتنا روپیہ نہیں ہے۔ از بسٹاس اور آلون اس قسم کی صنعتیں ہیں جن کو ترقی اور منافع کے راستے پر چلایا جاسکتا ہے اور مینجنگ ایجنسیز کے طریقے کو ختم کر کے ان کی خرابیاں دور کی جاسکتی ہیں۔ وہ نہ صرف نفع بخش بن سکتی ہیں بلکہ ان کی وجہ سے ہماری قومی آمدنی میں کافی اضافہ ہو سکتا ہے۔ آلون کے بارے میں آنریبل فینانس منسٹر جو صنعت و حرفت کے منسٹر بھی ہیں ان سے مجھے یہ کہنا ہے کہ اس صنعت میں ریفریجریٹرس سکشن (Refrigerators Sections) بھی موجود ہے اس کے لئے مشینری آکر پڑی ہوئی ہے۔ اگر اس سکشن کو چلایا جائے اور استعمال کیا جائے تو ماہرین کی یہ رائے ہے کہ یہ صنعت ہندوستان میں سب سے بڑی صنعت بن سکتی ہے۔ اور سب سے زیادہ نفع بخش صنعت بن سکتی ہے۔ لیکن مینجنگ ایجنٹس نے اس پر کوئی توجہ نہیں دی ہے۔ گورنمنٹ کو چاہئے کہ اس کو رو بہ عمل لائے۔ اسی طرح سے اسبطاس کی صنعت ہے جو ہندوستان میں صرف دو مقامات پر پائی جاتی ہے۔ ایک کارخانہ بمبئی میں ہے اور ایک حیدرآباد میں۔ بمبئی کے کارخانہ میں انگریزوں کا سرمایہ ہے اور اسکا مال یہاں کے مال سے بہتر ہوتا ہے اسکی وجہ یہ ہے کہ وہاں اچھے ماہرین موجود ہیں اور جنوبی افریقہ سے جو رامیٹریل منگایا جاتا ہے وہ سستا پڑتا ہے۔ اس وجہ سے وہ کامپیشن میں بھی ہم سے آگے ہیں۔ اس کے برخلاف ہمارے پاس کینڈا سے رامیٹریل منگایا گیا جو گراں بھی تھا اور وہ اس قسم کا تھا کہ وہ استعمال نہیں کیا جاسکتا تھا۔ آنریبل وزیر صنعت اسکو جانتے ہوئے اور اس سے پہلے جو لیبر منسٹر صاحب تھے وہ بھی جانتے ہیں کہ اس مال کی نسبت یہ تصفیہ ہوا کہ وہ استعمال نہیں کیا جاسکتا۔ بہت دنوں کے بعد ایک اٹالین اکسپرٹ نے یہ رائے دی کہ دوسرے طریقہ سے اسکو استعمال کیا جاسکتا ہے لیکن اس پر عمل نہیں کیا گیا اس قسم کا ہماری صنعتوں میں جو سس مینجمنٹ اور کرپشن ہے اسکو ختم کر کے بہت بڑا فائدہ اٹھایا جاسکتا ہے۔

اسی طریقہ سے یہاں اور دوسری صنعتیں ہیں۔ اس میں سب سے بڑی صنعتیں سونے اور لہے کی ہیں۔ ہٹی گولڈ مائنس کے بارے میں میں ایوان کو یہ بتلانا چاہتا ہوں کہ اس میں پورا روپیہ حکومت کا لگا ہوا ہے لیکن وہاں کی مینجنگ ایجنٹس انگریزوں کے ہاتھ میں ہے اور اسکا مینجر بھی انگریز ہے کولار گولڈ فیلڈس سے بھی تعلق ہے۔ اسکی وجہ سے یہ ہو رہا ہے کہ ایک تو انتظامات میں بہت زیادہ روپیہ خرچ ہو جاتا ہے اور پھر ایسی خبر بھی ملی ہے کہ اگرچہ یہاں سونے کا پروپورشن (Proportion) زیادہ ہے لیکن یہاں سے اسمگلنگ (Smuggling) ہوتی ہے۔ اسکی جانب حکومت نے کوئی توجہ نہیں کی۔ اسکو اپنی نگرانی میں لیا جائے اور اچھے طریقہ سے کام کیا جائے تو یہ ہمارے بہت بڑے فائدہ کی صنعت بن سکتی ہے۔

اسی طرح کوئلہ جو سنگارینی کالریز میں ہوتا ہے اسکے بارے میں عام طور پر سمجھا گیا ہے اور اکسپرس نے یہ رائے دی ہے کہ یہاں کا کوئلہ بہ نسبت دوسرے مقامات کے بہتر ہوتا ہے لیکن یہاں اس صنعت کو کس طرح ترقی دی جاسکتی ہے اسکے بارے میں توجہ نہیں کی گئی ہے۔ مثال کے طور پر یہ چند صنعتیں ہیں جو ہمارے ملک میں موجود ہیں لیکن مینجنگ ایجنسی سسٹم کی وجہ سے اور اسکی وجہ سے جو کرپشن ہے جیسا کہ آلوین وغیرہ میں ہے ترقی نہیں کر سکیں۔ جب حکومت کو اس جانب توجہ دلائی جاتی ہے تو حکومت کے متعلقہ عہدہ دار اور منسٹر صاحب ان چیزوں کی گہرائی میں جا کر تحقیقات کرنے کی بجائے یہ جواب دیتے ہیں کہ ہمارے پاس روپیہ نہیں روپے کی کمی کی وجہ سے ہم انکا انتظام نہیں سنبھال سکتے۔ انکو نہیں چلا سکتے۔ اس وجہ سے صنعتیں بند ہوتی جا رہی ہیں۔ مزدور بیکار ہوتے جا رہے ہیں معاشی بحران بڑھتا جا رہا ہے۔ لیکن اس سلسلہ میں کسی منظم اسکیم کو رو بہ عمل لانے کا نام نہیں لیا جاتا۔

ان صنعتوں سے ہٹ کر حیدرآباد میں جو بڑے بڑے معدنی وسائل ہیں ان کو پیش نظر رکھیں تو اس ریاست میں ایسی صنعتیں قائم ہو سکتی ہیں جو نہ صرف منافع بخش بن سکتی ہیں بلکہ ان سے حیدرآباد میں رہنے بسنے والے ایک کروڑ ۸۰ لاکھ لوگوں کی مختلف ضروریات کی تکمیل ہو سکتی ہے۔ ہماری ریاست میں آئیل سیڈس اتنی بڑی مقدار میں پیدا ہوتے ہیں کہ اگر تیل کی صنعتیں یہاں قائم کی جائیں تو وہ نفع بخش بن سکتی ہیں۔ اسی طرح سے کپاس بھی بہت بڑی مقدار میں پیدا ہوتی ہے۔ لیکن یہ دونوں چیزیں باہر چلی جاتی ہیں اور ان سے ہم اس طرح سے فائدہ نہیں اٹھا رہے ہیں جس طرح کہ ہم کو اٹھانا چاہیے۔

اس کے علاوہ ایسی چھوٹی چھوٹی صنعتیں ریاست حیدرآباد میں قائم ہو سکتی ہیں جو ایک طرف ہماری ضروریات کو پورا کر سکتی ہیں۔ دوسری طرف بیروزگاری کو ختم کر سکتی ہیں اور تیسری طرف قومی دولت میں ان سے اضافہ ہو سکتا ہے۔ مثال کے طور پر یہاں لیدر کی صنعت قائم ہو سکتی ہے جو دباغت کر کے باہر بیہجا جاتا ہے اور جس سے ہماری قومی آمدنی کا کئی لاکھ روپیہ باہر چلا جاتا ہے۔ اگر لیدر کی صنعت کو یہاں قائم کر کے یہ فائدہ اٹھا یا جائے تو یہ بات بالکل ممکن ہے۔ حیدرآباد میں تقریباً ۲۰ لاکھ روپے سالانہ چمڑے کی اشیا کی کہتے ہیں جو باہر سے آتی ہیں اگر لیدر کی صنعت یہاں قائم ہو جائے تو ہماری قومی آمدنی کو بڑھانے کا باعث بن سکتی ہے۔

اس کے علاوہ ہماری قومی آمدنی کو بڑھانے کے اور بہت سے طریقے ہو سکتے ہیں اور یہ جو رونا رہتا ہے کہ ہمارے پاس خیارے کا بیج ہے۔ ہم قومی کاموں پر زیادہ روپیہ صرف نہیں کر سکتے یہ دقت اور مشکل ختم ہو سکتی ہے۔

ریاست میں ایک روڈ ٹرانسپورٹ ڈپارٹمنٹ قائم ہے۔ یہ ایک منافع دینے والا ڈپارٹمنٹ ہے۔ لیکن اس جانب حکومت نے پچھلے تین سال میں کوئی توجہ نہیں کی۔ لوگوں کی تکلیف اور ان کے مطالبات کو اگر نظر انداز بھی کر دیا جائے اور صرف معاشی نقطہ نظر سے قومی آمدنی کو بڑھانے کے نقطہ نظر سے بھی دیکھا جائے تو بھی یہ ضروری تھا کہ اس محکمہ کی جانب زیادہ سے زیادہ توجہ کی جاتی اور زیادہ سے زیادہ نئے راستوں پر نئی بسیں چلا کر آمدنی حاصل کی جاتی۔

اسی طرح سے جب ہمارا فینانشیل انٹگریشن سنٹر سے ہوا اس وقت حیدرآباد سے جتنا روپیہ گیا ہے اور اس کے جواب میں سنٹر نے جو کچھ روپیہ دیا ہے وہ بہت مایوس کن ہے۔ جب سنٹر کی طرف سے بھاری صنعتیں قائم کرنیکی اسکیمیں آتی ہیں تو ان کے لئے دوسری ریاستوں کی جانب سے پر زور مطالبہ ہوتا ہے اور اکثر ان کے مطالبات کو تسلیم کرتے ہوئے یہ صنعتیں ان ریاستوں میں قائم بھی کی گئی ہیں یعنی یہ ریاستیں اپنے مطالبات کو منوانے میں کامیاب ثابت ہوتی ہیں لیکن ہمارے پاس سے اب تک کبھی بھی شدت کے ساتھ یہ مطالبہ نہیں گیا کہ یہاں بھی بھاری صنعتیں قائم کی جائیں۔ حالانکہ ہمارے پاس اس کی گنجائش موجود ہے۔ آندھرا کی سرحد پر ہم کو لوہا ملتا ہے۔ کوئلہ تو ہمارے پاس ہے ہی۔ ٹرانسپورٹ کے قاضی پیٹھ جنگشن پر اور اس علاقہ میں پن بجلی کوئلہ اور لوہا یہ تمام وسائل موجود ہیں۔ ہمیں یہ چیزیں میسر ہیں۔ اس لحاظ سے یہاں بھاری صنعتیں زیادہ سے زیادہ قائم ہو سکتی ہیں۔ اگر سنٹر کو توجہ دلا کر بھاری صنعتیں ہمارے پاس قائم کی جائیں تو یقیناً ترقی کر سکتے ہیں۔ اس کے ساتھ ساتھ مقامی سرمایہ داروں کو جس میں بڑے سرمایہ داروں سے لیکر خود راج پرکھ تک شامل ہیں اس پر مائل کیا جائے کہ وہ باہر روپیہ لگانے کی بجائے خود یہاں کی صنعتوں میں لگائیں تو یقیناً اس سے بہت بڑا فائدہ ہو سکتا ہے

صنعتوں کے اس سوال پر میں زیادہ زور دیرا ہوں کیونکہ جیسا کہ میں نے پہلے کہا جب تک ہمارے پاس صنعتیں قائم نہ ہوں ہاری ترقی رکی رہیگی منجمد رہیگی اور اس وقت تک ہمارے قومی آمدنی کے وسائل بھی جنکی ہم تلاش میں رہتے ہیں حاصل نہیں کر سکتے۔ ایک طرف ہاری صنعتی ترقی اور دوسری طرف زمین کے مسئلہ کا حل یہی دو معاشی پہلو ہاری سماج کے ایسے ہیں جو نہ صرف ہاری معیشت کو بڑھا کر قومی دولت کو بڑھا سکتے ہیں بلکہ بیروزگاری کے مسئلہ کو بھی دور کر سکتے ہیں اور ملک کو خوشحال بنا سکتے ہیں۔

زمین کے مسئلہ پر دوسرے ساتھیوں نے بہت کچھ کہا ہے اور اس مسئلہ پر یہاں بہت بحثیں ہوئی ہیں اور ایک قانون بھی پاس ہوا ہے لیکن میرا یہ کہنا ہے کہ یہ اطمینان بخش قانون نہیں ہے اور نہ اس سے اطمینان بخش طریقہ پر زمین کا مسئلہ حل ہو سکتا ہے۔ اس

قانون سے کسان کو زمین نہیں مل رہی ہے جو اناج کا پیدا کرنے والا ہے جو ہمارا ان دانا ہے۔ اور جب تک اس کی قوت خرید اس کی اپنی زمین پر زیادہ اناج پیدا کرنے کی وجہ سے نہیں بڑھتی وہ ہماری صنعتی زندگی کا ایک جز نہیں بن سکتا۔ ہماری مجموعی ترقی اور خوشحالی میں شامل نہیں ہو سکتا۔ جب تک ہماری زرعی ترقی صنعتی ترقی کے ساتھ نہ مل جائے اس کے ساتھ نہ چڑ جائے اس سے ایک طرف کسان کی خوشحالی نہ بڑھے اور دوسری طرف مزدور اور درمیانی طبقہ کو کام نہ ملے ہمارے یہاں ایک خوشحال سوسائٹی اور سماج پیدا نہیں ہوتے اور نہ اس وقت تک ظاہر ہے کہ ہم اس منزل پر پہنچ سکتے ہیں جو ٹھیک اس زمانہ میں جبکہ قومی تحریک چل رہی تھی اس مسئلہ کو حل کرنے کے لئے اور ملک کو خوشحال بنانے کے لئے عوام کے سامنے رکھ رہے تھے۔ ورنہ اس قسم کی باتوں سے ہماری قومی آمدنی بڑھی ہے نظام کو ایک کروڑ روپیہ ملنا ہے۔ بڑے بڑے برلاؤں اور ٹائٹوں کو اتنی زیادہ دولت اور منافع ہوتا ہے کہ اگر اس کو سلا کر یہ کھا جائے کہ فی کس آمدنی ۲ سو ہے۔ ۴ سو ہے یا ۴ ہزار ہے تو یہ صحیح نقشہ نہیں ہے اس تصور کو بدلنے کی ضرورت ہے۔ ہم کس قسم کا سماج قائم کرنا چاہتے ہیں اور کونسا طرز زندگی اختیار کرنا چاہتے ہیں اس کو دیکھنے کی ضرورت ہے۔ ایک ایسا طرز زندگی جو ایک بیدار اور باشعور انسان کا مطالبہ ہے میں سمجھتا ہوں کہ اس کو سامنے رکھتے ہوئے آگے بڑھنے کی ضرورت ہے۔ آیا ہم اس طرز زندگی کو باقی رکھنا چاہتے ہیں جو سامراج نے ہمیں ورثہ میں دی ہے اور جسے ہم آج بھی باہر کے سرمایہ دارانہ نظام میں دیکھ رہے ہیں یا اسے بدلنا چاہتے ہیں۔ ایک طرف اس سوال کو حل کرنے اور دوسری طرف اس سے پیدا ہونے والے جو مسائل ہیں ان کو صحیح پر سپکٹیو (Perspective) کے ساتھ غور کرنیکی ضرورت ہے۔ لیکن کلاش (Clash) اور تصادم اس جگہ پیدا ہوتا ہے کہ کانگریس کے حکمران۔ کانگریس کے نیتا جو گدیوں پر بیٹھے ہوئے ہیں ان سے جب یہ مطالبات کئے جاتے ہیں اور ان کو یاد دلایا جاتا ہے کہ ۶ سالہ قومی تحریک کے زمانہ کی چلائی ہوئی جدوجہد پر نظر ڈالیں اور پھر سوچیں کہ آزادی کی ان لڑائیوں کا یہ مقصد نہ تھا کہ ایک سامراج چلا جائے تو ایک دوسرا سرمایہ دارانہ نظام اس کی جگہ لے لے اور اس پر اس سامراج کی چھاپ بدستور قائم رہے۔ انہیں یاد دلایا جاتا ہے کہ آپ نے خود اپنے پلیٹ فارم سے جو کہتا تھا اور جو قرار داد دیں پاس کی تھیں اگر ان کو مشعل راہ بنایا جائے تو ایک خوشحال سماج کو قائم کرنے کے سلسلہ میں ہم آگے بڑھ سکتے ہیں۔ اگر آپ ہمارے ساتھ ہیں تو ہمارا بھی دمت تعاون آپ کے ساتھ ہے۔ اس طرف سے جب یہ کہا جاتا ہے تو کہا جاتا ہے کہ حالات بدل گئے ہیں اور حالات کے ساتھ ساتھ تصورات بھی بدلتے ہیں اور معیشت بھی بدلتی ہے۔

بہر حال مجھے یہ کہنا ہے کہ اس طریقہ کے عذرات اور اپنے آپ کو ڈیفنڈ (Defend) کرنے کے جو طریقہ ہیں ان سے کانگریس کے نیتاؤں اور حکمرانوں کو کسی کا تعاون بھی حاصل نہیں ہو سکتا۔ عوام کا جو غصہ حکومت کے خلاف بڑھ رہا ہے۔

اس کا اس طرح مقابلہ کر کے اس کو ختم نہیں کیا جاسکتا۔ عوام کا غصہ جو بیروزگاری اور بھوک اور ننگدستی بڑھانے کی وجہ سے پیدا ہو رہا ہے اس کی دور کرنا ہے تو دوسرے طریقے اختیار کرنے ہون گئے اور جب تک ایک خیرشحال سروسائیٹی فائٹم نہ ہو عوام مطمئن نہیں ہو سکتے اور اس وقت تک یہ انقلابی سیلاب یقیناً بڑھنا رہیگا۔ اگر کانگریس عوام کا اعناد حاصل کرنا چاہتی ہے تو اس کی صاف صاف میدان میں آنا چاہیئے۔ لگی لپی سے کام نہیں چلے گا۔ پانچ سالہ پلان بنانے سے یا بڑی بڑی اسکیمات بنانے اور انہیں شاندار نام دے دینے سے مسائل حل نہیں ہوتے۔ بلکہ سرچنا چاہئے کہ ہمارے چھوٹے چھوٹے مطالبات کیا ہیں۔ سروسائیٹی کا ہر فرد زندہ رہنے کا حق رکھتا ہے اور ساج میں اپنا صحیح مقام حاصل کرنا چاہتا ہے پہلے اس کو سوچنا چاہیئے۔ ایک ایسا پلان بنالینے سے جس کا محض نام شاندار ہو لیکن اس کے راستے اتنے محدود ہوں کہ جس سے عام انسان کی زندگی پر کوئی خاص اچھا اثر نہیں پڑتا اور نہ اس سے اسے فائدہ ہو سکتا ہے۔ اور پھر ان اعتراضات کے جواب میں یہ کہنا کہ پہلے پانچ سال تو بہت دقتوں کے ہوں گے اس لئے کہ ان میں انٹرسٹمنٹ ہو گا۔ روپیہ لگے گا اور روپیہ لگانے کے لئے لوگوں سے محصول اور قرضہ لینا پڑیگا اس کے بعد دوسرا پانچ سالہ پلان بنے گا اس میں تھوڑی سی سہولتیں حاصل ہوں گی اور پھر تیسرا پانچ سالہ پلان بنے گا تو کہیں پندرہ سال کے بعد ایک خوشحال ساج کی ابتدا کر سکیں گے۔ ایک ولفیر اسٹیٹ کو جنم دے سکیں گے جیسا کہ آنریبل چیف منسٹر صاحب نے اپنی ایک تقریر میں اورنگ زیب کا حوالہ دیتے ہوئے فرمایا کہ انہوں نے اپنے بیٹے کو ایک خط میں یہ نصیحت کی کہ۔

آہستہ خرام بلکہ خرام

زیر قدم تہزار جان است

تو یہ آہستہ خرامی ہو یا خرامی ہو اس سے اب کام نہیں چلے گا۔ لوگوں کے مصائب اور مشکلیں ان کی قوت برداشت سے باہر ہو گئی ہیں۔ لوگ فوری اپنے مسائل کا کچھ نہ کچھ حل چاہتے ہیں اور فوری حل نکالا بھی جاسکتا ہے۔ انہیں مسائل کو حل کرنے کے لئے ہم نے اپنے خیالات رکھے ہیں کہ کانگریس کا حکمران طبقہ اور ان کے نیتاؤں کو معلوم ہو کہ ہم کیا چاہتے ہیں۔ کس طور پر ان مسائل کو آپ حل کر سکتے ہیں۔ کس طرح چین میں یہ مسائل حل کئے گئے ہیں میں روس کی مثال نہیں دوں گا۔ چین ہمارا ایک پڑوسی اور زوعی ملک ہے وہاں کے حالات ہندوستان کے حالات سے ملتے جلتے ہیں وہاں پچھلے تین سالوں کے اندر ان مسائل کو اس طرح حل کر لیا گیا کہ وہاں کی پیداوار اتنی زیادہ بڑھ گئی ہے کہ آج وہ دوسرے ملکوں کو اکسپورٹ کر رہا ہے۔ وہاں بیروزگاری نہیں ہے۔ وہاں کا بجٹ نہ صرف متوازن ہے بلکہ اس کا ۶۰ فیصد سے زیادہ پبلک سکٹر اور قومی تعمیر کے کاموں پر صرف ہو رہا ہے۔ وہاں کے کسانوں پر محصول کم کر دیئے گئے ہیں اور یہ ایسی

حقیقتیں ہیں کہ جن سے انکار نہیں کیا جاسکتا - جنہیں جھٹلایا نہیں جاسکتا - چین سے ہمارے دوستانہ تعلقات ہیں - ہندوستان اور چین کے کچھ تعلقات دن بدن زیادہ مضبوط ہوتے جا رہے ہیں - یہاں سے وہاں اور وہاں سے یہاں لوگ پچھلے دو تین برسوں میں آتے جاتے رہے ہیں - وہاں کے حالات کا سب پارٹیوں نے مطالعہ کیا ہے - اور وہ سب ایک زبان اور ایک آواز ہو کر کہتے ہیں کہ چین میں بلاشبہ ایسا نظام قائم ہو چکا ہے جسے ایک مستحکم ساج کا آئندہ دار کہا جاسکتا ہے یعنی صحیح معنوں میں اوس کو عوامی ساج کہا جاسکتا ہے - جس میں اکسپلائیشن کا سوال باقی نہیں رہا - لوٹنے والا طبقہ ختم ہو رہا ہے - لٹنے والا طبقہ آگے بڑھ رہا ہے ہر شخص تعلیم حاصل کر رہا ہے - ابتدائی تعلیم سے لیکر یونیورسٹی کی تعلیم تک کا سب کو موقع دیا جا رہا ہے - اور پوری تعلیم مفت ہے وہاں کا بجٹ اس قدر مستحکم ہو رہا ہے کہ آج وہاں یہ خطرہ باقی نہیں رہا کہ ان کا بجٹ دیوالیہ ہو سکتا ہے یا ان کی حکومت دیوالیہ ہو جائیگی - لیکن یہاں ایسا خطرہ ہمارے سامنے آ رہا ہے - وہاں زمین اور صنعتوں کا مسالہ خیر و خوبی کے ساتھ حل کر دیا گیا ہے - یہ متفقہ طور پر سب کہہ سکتے ہیں - اس میں کسی پارٹی یا گروپ کا سوال نہیں ہے میرے پاس وقت نہیں ورنہ میں اون کانگریس کے لوگوں کے کوئیشنس پڑھتا جو وہاں جا کر آئے ہیں لیکن کیا وجہ ہے کہ آج ہمارا دیش ویسی ترقی نہیں کر رہا ہے - ہمارے حالات چین

کے حالات سے ملتے جلتے ہیں بلکہ وہاں کے پہلے کے حالات سے بہتر ہیں کیونکہ چین تو مسلسل جدوجہد اور لڑائیوں کے دور سے گزرتا رہا ہے - اوس کو مسلسل سامراج کے خلاف لڑنا پڑا ہے وہاں مسلسل ہنگامے چلتے رہے ہیں - جب اس دور سے نکل کر بھی چین ترقی کر سکتا ہے تو کیا ہمارے عوام محنت نہیں کر سکتے کیا ہمارے عوام کو اپنے ملک سے محبت نہیں ہے - کیا ہمارے کسان - ہمارے مزدور ہمارا محنت کش طبقہ اور درمیانی طبقہ اپنی اور اپنے ملک کی خوشحالی نہیں چاہتا

یقیناً چاہتا ہے - لیکن فرق اتنا ہی ہے کہ جو ہر سراقندار طبقہ ہے وہ ایک دوسرے نقطہ نظر سے سوچ رہا ہے - یہاں حکومت ایک مکسڈ اکائی لانا چاہتی ہے - ایک صف میں برلا کو کھڑا کیا جاتا ہے اور بظاہر اسی کے ساتھ کسان کو بھی کھڑا کیا جاتا ہے گویا ”ایک ہی صف میں کھڑے ہو گئے محمود و ایاز“ کرنا چاہتے ہیں لیکن جب صف سے نکلتے ہیں تو محمود محمود رہتا ہے اور ایاز ایاز - آج ہماری حکومت کی جانب سے بڑے بڑے جاگیرداروں - راج پر مکھوں اور رجواڑوں اور سرمایہ داروں کی سرپرستی ہو رہی ہے - اور بڑے زور و شور سے ہو رہی ہے - ایک طرف تو اون کے حقوق کا تحفظ کیا جاتا ہے اور دوسری طرف کہا جاتا ہے کہ کسانوں کے فائدہ کے لئے ہم قانون بنا رہے ہیں - قومی صنعتی ترقی کے لئے روپیہ صرف کر رہے ہیں پیروزگاری کا مسئلہ دور کرنے کے لئے پانچ سالہ منصوبہ ہے اور دوسرے مختلف کام کر رہے ہیں - لیکن جو نتائج ہمارے سامنے آ رہے ہیں وہ مایوس کن ہیں - کیونکہ پیروزگاری دن بدن



بڑھ رہی ہے۔ گرانی بڑھ رہی ہے۔ کہیں سے چند اعداد و شمار لیکر یہ بتانا کہ حیدرآباد میں پچھلے چند مہیوں میں پیداوار اچھی ہو گئی ہے اور اسکی وجہ سے قیمتیں گر رہی ہیں یہ دھوکہ اور خود فریبی ہے۔ جس میں ہمارے عوام اور جنتا آنے والی نہیں۔ پیداوار اگر کچھ اچھی ہو گئی ہے تو وہ بارش کی وجہ سے۔ بارش اگر اچھی طرح نہیں ہوتی ہے تو پیداوار خراب ہوتی ہے۔ لیکن دیکھنا یہ ہیکہ ہمارے زمین کو سونا اگلنے والی زمین بنانے کے لئے ہم نے کیا کیا۔ اس کا جواب نفی میں ہے۔ ہماری آمدنی کے وسائل کو کیا اس طرح استعمال کیا گیا کہ ہمارے دیش کا مالیہ مضبوط ہوسکے۔ اس کا جواب بھی نفی میں ملتا ہے۔ مجھے پانچ سالہ منصوبہ میں اس کا جواب نہیں ملتا۔ میں نے اس کو پڑھا ہے۔ اوسکا دیباچہ بھی پڑھا ہے۔ اس پر پچھلے تین سال سے عمل ہو رہا ہے پانچ سال میں سے تین سال گزر چکے ہیں۔ حیدرآباد میں پندرہ سولہ کروڑ روپیہ خرچ ہو چکا ہے۔ لیکن وہ کس طرح خرچ ہوا ہے کیا اس کا رٹرن ہم کو ملیگا۔ اگر پندرہ بیس سال کے بعد ہم کو اس کا رٹرن ملنے والا ہے تو میں خاص طور پر کانگریس پارٹی سے یہ کہنا چاہتا ہوں کہ اس عرصہ میں یہ دنیا بدل جائیگی۔ انقلابی راستہ جس کی طرف عوام بڑھ رہے ہیں وہ اون مفادات کو اپنے راستہ سے ہٹا دیگا۔ اون لوگوں کو ہٹا دیگا جو لیت و لعل میں پڑے ہوئے ہیں جو پس و پیش کی باتیں کر رہے ہیں۔ جو کہتے ہیں کہ ہتیلی پر ہم سروس نہیں جاسکتے۔ آہستہ آہستہ چلنا چاہتے ہیں۔ میں کہوں گا کہ آپ اس رفتار سے اوس مقصد تک نہیں پہنچ سکتے جو عوام کے سامنے ہے۔ انقلاب کے نام سے ڈرنے والوں کو میں یہ بتا دینا چاہتا ہوں اون کو وارننگ دینا چاہتا ہوں کہ وہ دنیا کے حالات پر نظر ڈالیں اپنے ارد گرد کے حالات پر نظر ڈالیں اپنے دیش کے حالات پر نظر ڈالیں۔ جنوبی ہند میں کیا ہو رہا ہے ٹراونکور کوچین۔ آندھرا اور حیدرآباد میں کیا ہو رہا ہے۔ دو سال قبل اگرچہ کانگریس ووٹ لیکر یہاں آئی تو ہے لیکن اپنے پروگرام۔ اپنی پالیسی اور اپنے کارناموں کو لیکر آج اگر وہ لوگوں کے سامنے جائے اور پوچھے کہ آپ کانگریس کے متعلق کیا رائے رکھتے ہیں۔ کیا تاثرات ہیں آپ کے کتنے آدمی کانگریس سے خوش ہیں تو اس کا جواب مایوس کن ملے گا۔ اسلئے میں کانگریس پارٹی۔ کانگریس کے حکمرانوں اور خاص طور پر حکومت کے منسٹروں سے جو ان امور کو سر انجام دینے والے ہیں یہ عرض کرنا چاہتا ہوں کہ اب بھی آپکو موقع ہے کہ اگر وہ اپنی حب الوطنی کا اظہار کرنا چاہتے ہیں تو اس طریقہ سے کرسکتے ہیں کہ عوام کے مطالبات کو پورا کرنے کے لئے آگے بڑھیں اور اون جماعتوں سے ہاتھ ملائیں جو اب تک بھی اپنے راستہ پر چل رہی ہیں جنہوں نے اب تک موقع پرستی کا راستہ اختیار نہیں کیا بلکہ ایمانداری کے ساتھ عوام کی خدمت کر رہے ہیں کانگریس اون سے تعاون کر کے اوس منزل پر پہنچ سکتی ہے اور ساج میں خوش حالی پیدا کرسکتی ہے اب بھی موقع ہے۔ لیکن اس دو عملی اور یہ دو رخی کو جاری نہیں

رہنا چاہئے۔ کہا جاتا ہے کہ ہم زندگی کے ہر شعبہ میں ترقی کر رہے ہیں۔ ہم عوام کی خدمت کر رہے ہیں لیکن عملی طور پر جو کچھ سامنے آ رہا ہے اوس سے معلوم ہوتا ہے کہ کسی شعبہ میں بھی ترقی نہیں ہو رہی ہے۔ صنعتیں دن بدن بند ہوتی جا رہی ہیں۔ زرعی حالت خراب ہوتی جا رہی ہے۔ پروزگاری بڑھ رہی ہے بھوک اور افلاس بڑھ رہا ہے۔ پرکھیٹا آمدنی کم ہوتی جا رہی ہے۔ دیشمکھ صاحب نے جو حساب پیش کیا ہے وہ ایک بڑا دھوکہ ہے اگر صرف یہ دیکھا جائے کہ کسانوں۔ مزدوروں اور غریب طبقہ کی پرکھیٹا آمدنی دس سال پہلے کیا تھی اور آج اون کی آمدنی کا اوسط کیا ہے تو معلوم ہوگا کہ ان کی پرکھیٹا آمدنی کم ہوتی جا رہی ہے۔ آپ ادھر ادھر کے اعداد و شمار اور بلاؤں اور ٹائٹوں کی آمدنی کو اس میں شمار کر کے کہتے ہیں کہ آمدنی بڑھ رہی ہے۔ سو کروڑ روپیہ سالانہ برطانوی سامراج ہر سال سود اور منافع کی شکل میں ملک سے باہر لیجا رہا ہے خود ریزورٹک آف انڈیا کی رپورٹ کے اعداد و شمار دیکھیں تو اس کا ہتہ چلے گا کہ آج بھی کتنا روپیہ سالانہ منافع اور سود کی شکل میں باہر جاتا ہے اس کے علاوہ ایک دوسرا خطرناک دشمن ہمارے کارخانوں میں مدرسوں میں دفنوں اور بازاروں میں کھیتوں میں۔ گھس رہا ہے۔ اور وہ ہے امریکی سامراج۔ جو اپنے گندہ لٹریچر اور پرانے نا پاک منصوبوں کے ذریعہ پاکستان کو ہڑپ کرنے کے بعد ہندوستان کی جانب بڑھ رہا ہے۔ اور اوس پر دباؤ ڈال رہا ہے کہ ہندوستان بھی اس کے حلقے میں آجائے اس خطرے کا مقابلہ کرنے کیلئے عوام کی طاقت اور عوام کا اعتاد حاصل کرنا ضروری ہے۔ لیکن اس کے لئے سب سے ضروری ہے کہ عوام کو ریلیف دیا جائے۔ اون کی خوشحالی کے لئے پلان بنانا ہوگا۔ آپ جس طرح کے پلان بنا رہے ہیں ویسے پچاس پلان بنانے سے بھی کام نہیں چلے گا۔ بڑے بڑے پلان بنانے کے لئے کافی دولت صرف ہوگی لیکن فوری طور پر کسانوں۔ مزدوروں درمیانی طبقہ کے لوگوں۔ کلرکوں اور دوسرے محنت کش لوگوں کو جو اور پیشوں میں مصروف ہیں ریلیف دینا چاہیئے۔ اور ہم یہ ریلیف دے سکتے ہیں بشرطیکہ ہندوستان کی دولت اور اس کے قومی وسائل و ذرائع صحیح طور پر استعمال کئے جائیں۔ اس صورت میں ہی ہم عوام کا اعتاد حاصل کر سکتے ہیں۔ وہ اعتاد وہ طاقت ایسی ہو سکتی ہے۔ کہ اگر خدا نخواستہ ملک پر حملہ کا خطرہ ہو (جیسا کہ دنیا کے حالات بتا رہے ہیں بھیانک مستقبل ہمارے سامنے آ رہا ہے) تو اس کی روک تھام کے لئے وہ کام آ سکتا ہے۔ اس کے لئے کاغذی منصوبوں کو ایک طرف رکھ کر عملی منصوبوں کو سامنے لایا جانا ضروری ہے۔ جس کا ہندوستان کی جملہ لفٹسٹ جماعتیں مطالبہ کر رہی ہیں اور جو دیش کے ایک بڑے سکشن کی نمائندگی کرنے والی ہیں۔ میں مانتا ہوں کہ کانگریس کی جانب سے بھی یہ دعویٰ کیا جاسکتا ہے کہ ہم بھی عوام کے نمائندے ہیں۔ لیکن یہی حال رہا اور یہی پالیسیاں رہیں تو آئندہ دو تین سالوں میں یہی عوام کے چنے ہوئے لوگ عوام کے نمائندے عوام کا اعتاد قطعی حاصل نہیں کر سکیں گے۔ یہ دیکھنا ہوگا کہ اگلے الیکشن کے

وقت آن کا یہ دعویٰ کہاں تک صحیح ثابت ہو سکتا ہے۔ اس وقت الکشن کے لئے کیا آپ کو دوسرے ذرائع تو استعمال کرنا نہیں پڑینگے۔ آج ہندوستان کے انقلابی قوتیں نئے ساج کے علمبردار کے روپ میں سامنے آ رہے ہیں۔ ایک نیا انقلابی انسان پیدا ہو چکا ہے۔ اب ہمیں مسائل پر ٹھنڈے دل سے غور کرنا چاہیئے اس کے بعد ہی ہم اور آپ مل جل کر ایسی فضا پیدا کر سکتے ہیں۔ ایسا اتحاد اور ایسی یکجہتی پیدا کر سکتے ہیں کہ اگر باہر کی قوتیں ہماری آزادی کو غصب کرنا چاہیں تو اس کا مقابلہ کیا جاسکے۔ لفٹس پارٹیوں کی جانب سے اور خاص طور پر ہماری پارٹی کی جانب سے برابر یہ اعلان کیا جاتا رہا ہے کہ اگر ایسی صورت حال پیش آئے تو سب پارٹیوں کا مکمل اتحاد کانگریس پارٹی حاصل کر سکتی ہے۔ لیکن یہ حالات پیدا نہ ہوئے تو کیا ہو گا میں ان اندیشوں کا اظہار اس وقت نہیں کروں گا۔ کیونکہ اس وقت بجٹ پر ڈسکشن ہو رہا ہے۔

بجٹ کے موضوع پر آتے ہوئے میں یہ عرض کروں گا کہ ہمارے سامنے جو فوری مسائل ہیں یہ بجٹ ان کی طرف توجہ نہیں دیتا۔ اس لئے یہ بجٹ ایک ناکام بجٹ ہے۔ میں اگر یہ کہوں تو بیجا نہ سمجھا جائے کہ یہ بجٹ ایک بیمار آدمی کی طرح ہے جو قریب مرگ ہے۔ اس کے چہرے پر زردی چھائی ہوئی ہے۔ اس کی صحت کی اگر چیکہ توقع نظر نہیں آ رہی ہے۔ لیکن مشترکہ کوشش سے اگر اس کا علاج کیا جائے تو اس کو صحت یابی ہو سکتی ہے۔ اس کی صحت یابی کے لئے جو ٹانکس دینا چاہیئے ان کا اس میں ذکر نہیں ہے۔ اگر ذکر بھی آتا ہے تو سرسری طور پر نظر آتا ہے۔ میں آنریبل فنانس منسٹر۔ دوسرے ارباب مقتدر اور کانگریس پارٹی سے آخر میں یہ عرض کرنا چاہتا ہوں کہ ہمارے ان سوالات کو حل کرنے کے لئے بجٹ کا ڈھانچہ اس طرح سے بنانے کی کوشش کی جانی چاہیئے جس طرح کے عوام کے تقاضے اور ان کے مطالبات ہیں۔ بجٹ اسپینچ میں آنریبل فنانس منسٹر صاحب نے جن اندیشوں کا اظہار کیا یا جن توقعات کا اظہار کیا اور ان کو ایک طرف رکھتے ہوئے حقیقی حالات آبجکٹیو تجاویز کی جانب اشارہ کروں گا اور چند چھوٹی چھوٹی باتوں کی جانب توجہ دلاتے ہوئے میں اپنی تقریر ختم کرتا ہوں۔ بجٹ اسپینچ میں پیروز گاری کا ذکر کیا گیا ہے۔ پیروز گاری بھیانک طریقہ پر بڑھ رہی ہے۔ اسپلائمنٹ اکسپینچ کے اعداد و شمار دیکھنے کی ضرورت نہیں کیونکہ وہاں کتنے لوگ جا کر کارڈ حاصل کرتے ہیں کہنے کی ضرورت نہیں ہے۔ سرسری اندازے کے مطابق یہ کہا جاسکتا ہے کہ حیدرآباد ریاست میں تقریباً ڈھائی لاکھ آدمی ایسے ہیں جو بالکل پیروز گار ہیں یا ان کی ایک بڑی تعداد پیروز گار ہے۔ اور اس میں مسلسل اضافہ ہوتا جا رہا ہے۔ پچھلے چند مہینوں میں دس ہزار آدمی پیروز گار ہو گئے ہیں۔ پرانی مل اور رسد میں تخفیف کی وجہ سے جو لوگ بیکار یا پیروز گار ہو گئے ہیں اگر ان کے خاندان والوں کو بھی ملایا جائے تو یہ تعداد بڑھ جاتی ہے۔ ایک طرف تو پیروز گاری بڑھتی جا رہی ہے اور دوسری طرف دوسرے پہلو بھی ہیں یعنی ہمارا تعلیمی پہلو۔ ہمارا ثقافتی پہلو اور معاشی پہلو۔ ان سے بھی غفلت اور بے پروائی برتی جا رہی ہے۔ جس کا نتیجہ یہ ہے کہ ہمارے عوام ذہنی اور

معاشی بحران میں مبتلا ہو گئے ہیں۔ اگر کسی سلسلہ میں درخواستیں دیجاتی ہیں نمائندگان کی جاتی ہیں تو کوئی توجہ نہیں دی جاتی ہے۔ اس کے لئے عوام کو جانکر منسٹروں کے مکانوں کی دیواروں سے سرٹکرانا پڑتا ہے۔ اور چھوٹی چھوٹی باتیں منوانے کے لئے ان کی خوشامدیں کرنی پڑتی ہیں پھر بھی کوئی نتیجہ نہیں نکلتا میں اس سلسلہ میں ایک مثال دوں گا۔ مجھے معلوم نہیں کہ متعلقہ منسٹر موجود ہیں یا نہیں۔ حیدرآباد کے اندر سی۔ آئی۔ بی کے مکانات کا مسئلہ پچھلے سات آٹھ مہینوں سے حکومت کے سامنے آ رہا ہے۔ ان کے کرایوں میں اضافہ کیا گیا ہے اس کے لئے ربریزنٹیشن ہوا تو منسٹر صاحب نے کہا کہ ہمدردانہ غور کیا جائیگا۔ لیکن آج تک کوئی ہمدردانہ غور نہیں ہوا۔ ہمدردانہ غور بھول بھلیاں میں پڑ کر ختم ہو جاتا ہے۔ سی آئی۔ بی کے مکانوں میں رہنے والے پانچ ہزار لوگوں کا یہ مسئلہ ہے۔ میں مثال کے طور پر یہ چیز پیش کر رہا ہوں ورنہ ایسے ہزاروں مسائل ہیں جن کو اب تک حل نہیں کیا جاسکتا۔ حال ہی میں ان مکانات کے رہنے والے لوگوں سے کہدیا گیا ہے کہ آٹھ دن کے اندر مکانات خالی کردئے جائیں۔ متعلقہ منسٹر یہ بتائیں کہ کیا اس کے معنی یہ نہیں کہ ان مکانات میں رہنے والے ان کو چھوڑ کر چلے جائیں۔

جس طرح زمین سے کسانوں کو بیدخل کرنے کی کوشش کی جا رہی ہے اوسنی طرح مکانوں سے ان غریبوں کا تخلیہ کرانے کی سعی کی جا رہی ہے اور اس طرح انکو سر چھپانے کا جو آسرا ہے اوسکو ختم کرنے کی کوشش کی جا رہی ہے۔ اول سے تین مہینے کے پیشگی کرائے کا مطالبہ اوس بڑھائی ہوئی شرح کرایہ کے لحاظ سے کیا جا رہا ہے جو دو سو فیصد تک بڑھائی گئی ہے اور انکو یہ دھمکی دیا رہی ہے کہ اگر اسکی تکمیل نہ کی جائے تو ان مکانوں میں نہیں رہ سکتے مکانات چھوڑنا پڑیگا۔ ایک چھوٹا سا مسئلہ جو چند ہزار لوگوں سے متعلق ہے اطمینان بخش طریقہ پر حل نہیں کیا جا رہا ہے اور وہ غریب سخت پریشان ہیں۔ جب کوئی رپریرنٹیشن کیا جاتا ہے جب کوئی نمائندگی کی جاتی ہے یا ارباب اقتدار سے رجوع ہوتے ہیں تو اون سے ہمدردانہ غور کا وعدہ تو کیا جاتا ہے اسی طرح کا وعدہ تین چار مہینے پہلے بھی کیا گیا تھا لیکن اب تک ایفا نہیں کیا گیا جسکی وجہ سے ہم یہ سمجھنے پر اپنے آپ کو مجبور پاتے ہیں کہ اس طرح کے ہمدردانہ غور کے وعدے محض ٹال مٹول کی خاطر کئے جاتے ہیں۔ اگر حکومت کی اس ٹال مٹول کی پالیسی کے بارے میں مختلف گوشوں سے کچھ آوازیں بلند ہوتی ہیں یا یہ باتیں حکومت کے علم میں لائی جاتی ہیں اور اس طرف توجہ کرنے کے لئے کہا جاتا ہے تب بھی حکومت ان امور پر غور کرنے کے لئے تیار نہیں معلوم ہوتا۔ اسکے ساتھ ساتھ بہت سے شہری مسائل ہیں دیہاتی مسائل ہیں کسانوں کے مسائل ہیں اور صنعتی مسائل ہیں جن سے لاہروائی بڑی جا رہی ہے۔ ان سارے مسائل کا ایسا بوجھ ہے جسکو ہٹانے کے لئے محنت کش عوام اور درباری طبقے سے تعلق رکھنے والے افراد ہر حکومت کے دور میں دو ڈھائی سال سے مسلسل کوشش کر رہے ہیں لیکن اب تک وہ منزل تک نہیں پہنچ سکے۔ منزل تک پہنچنا جو ایک طرف

وہا نشان منزل بھی نہ پاسکے۔ جب کوئی راستہ اس طرف سے بتایا جاتا ہے تو یہی جواب ملتا ہے کہ روپیہ نہیں ہے۔ اس بارے میں ایک فارسی مقولہ میں عرض کرونگا (چیف منسٹر صاحب تشریف نہیں رکھتے ہیں وہ فارسی سے شغف رکھتے ہیں اور فلسفی بھی ہیں) مشہور ہے کہ ”تا تریاق از عراق آوردہ شود۔ مارگزیدہ مردہ شود، یعنی سانپ کے کاٹے کا علاج کے لئے عراق سے جب تک تریاق لایا جائیگا سانپ کا کاٹا ہوا شخص مر بھی جائیگا۔ یہاں کا محنت کش طبقہ کسان مزدور اور درمیانی طبقہ کا یہی حال ہے آج وہ مرنے کے قریب ہے پچھلے سال جب ملک میں مہنگائی زیادہ بڑھی اور کچھ علاقوں میں قلت کے آثار رونما ہوئے تو کئی لوگ فاقہ کشی سے مر گئے اور آج جو زندہ ہیں وہ بھی کسی طرح زندہ نہیں کیے جاسکتے بلکہ زندہ درگور بن گئے ہیں یہ حالات ہیں یہ مسائل ہیں ایسے چھوٹے چھوٹے مسائل ہیں کہ انکا حل کرنا ضرور ہے۔ جب ان امور کے متعلق کہا جاتا ہے تو حکومت کے ارباب اقتدار اس سے چشم پوشی کرتے ہیں۔ آج حالات ایسے ہیں کہ انسان اپنے چھوٹے موٹے معمولی گھریلو بجٹ کو متوازن کرنا چاہے تو نہیں کر سکتا۔ خود حکومت جو وسیع ذرائع آمدنی رکھتی ہے اپنے ملک کے بجٹ کو پیالنس نہ کر سکتی تو اس سے اندازہ کیا جاسکتا ہے کہ لاکھوں کروڑوں انسانوں کے گھریلو بجٹ کا کیا حال ہوگا وہ کس طرح چل رہے ہوں گے۔ کسان اور مزدور طبقے کو لیجئے۔ درمیانی طبقہ کو لیجئے۔ کرکس وغیرہ اور عام نیوپاریوں کو لیجئے۔ انکی آمدنیوں کے تناسب کا حکومت کے ذرائع آمدنی سے کیا تناسب ہے اسکا اندازہ کیجئے اور پھر غور کیجئے کہ ان کی آمدنیوں کا تناسب کتنا کم ہے۔ جو تنخواہ افسروں کو ملتی ہے اور جو منافع سرمایہ داروں کو حاصل ہو رہے ہیں اوس لحاظ سے چھوٹے طبقات کی آمدنی کا تناسب کیا ہے اور اسکے ساتھ ساتھ بھی غور کیجئے کہ گرانی کا تناسب کیا ہے۔ زمانہ گذشتہ سے حال کا تطابق کیجئے تو آپکو اندازہ ہوگا کہ گرانی کس درجہ زیادہ ہو گئی ہے۔ پھر اندازہ کیجئے کہ انکی زندگیاں کس طرح گزرتی ہونگی۔ کسی بھی گھر میں جائے اور دیکھئے کہ انکی زندگی کس انداز سے گزر رہی ہے۔ انکے کنبہ کے لوگ مختلف کام کرتے ہیں اسکے باوجود کم تنگ مالی غیرت و مصیبت سے الٹی گزر بسر ہوتی ہے۔ حیدرآباد کے بجٹ کا یہ ہے وہ معاشی اور صنعتی پہلو جس پر میں نے اپنے خیالات کا اظہار کیا ہے۔ اپنی جانب سے اور اپنی پارٹی کی جانب سے یقیناً بڑی خوشی کے ساتھ نہایت فراخ دل کے ساتھ مشورے دینے اور دست تعاون پڑھانے کے لئے ہم تیار ہیں لیکن اس ہاتھ سے کانگریس کے ہاتھ ملنے میں اور ملکر آگے بڑھنے میں جو دقیق ہیں وہ بنیادی دقیق ہیں۔ نظریات کا بنیادی فرق ہے۔ اس فرق کا موجودہ جو انداز ہے اس سے نہیں مٹایا جاسکتا جب تک کانگریس کم از کم کچھ لین دین کی پالیسی پر کار بند نہیں یہ مسائل حل نہیں ہو سکتے۔ جن حالات سے ہم گزر رہے ہیں وہ اسلئے باقی ہیں کہ ابھی تک سرمایہ دارانہ و جاگیر دارانہ مفادات باقی ہیں۔ مفادات حاصلہ کو باقی رکھنے کا تصور کار فرما ہے۔ مقصود یہ ہے کہ انکو فائدہ پہنچے۔ ان باتوں کے خلاف آواز اٹھائی جاتی ہے تو ایک آنریریل میمبر فرماتے ہیں کہ آپکے پیٹ

کبوں درد ہو رہا ہے۔ لیکن میں کہہونگا کہ یہ وہ حالات ہیں جنہیں دیکھکر پیٹ میں نہیں بلکہ دل میں درد ہوتا ہے۔ جو حقیقت شناس لوگ ہیں جو ایماندار لوگ ہیں ان کا ان حالات کو دیکھکر تڑپ اٹھنا ایک فطری امر ہے۔ انکے دل میں درد کا ہونا لازمی ہے۔ ہم دیکھتے ہیں کہ ایک طرف تو وہ ساہوکار اور زمیندار ہیں جو عیش و آرام کی زندگی بغیر کسی محنت کے تن آسانی کے ساتھ گزار رہے ہیں اور دوسری طرف لاکھوں کروڑوں محنت کش عوام ہیں درمیانی طبقے کے لوگ ہیں جو باوجود شبانہ روز کی محنت کے پیٹ بھر روزی نہیں پاسکتے اور دوسرے مفاد پرست طبقات برابر لوٹ کھسوٹ کی پالیسی پر کار بند ہیں۔ یہ وہ حالات ہیں جنہیں دیکھکر دل میں درد ہونا لازمی ہے۔ میری حکومت سے اور کانگریس پارٹی میں جو ایماندار اور سچائی پسند لوگ ہیں ان سے درد مندانہ اپیل ہے کہ ہماری صنعتی ترقی زرعی خوش حالی اور آمدنی کی فراوانی کے جو مسائل ہیں ان پر سنجیدگی کے ساتھ غور کیا جائے اور یہ سوچا جائے کہ ان مقاصد کو کس طرح سے حاصل کیا جاسکتا ہے۔ اور کون کونسی اسکیم بنائی جاسکتی ہیں جنکو روپعمل لاکر ہم منزل مقصود تک پہنچ سکیں اور پبلک سکٹر کو آگے بڑھانے کے لئے ہم کچھ کام کرسکیں۔ اگر ایسے حالات پیدا ہو جائیں اور ہمارے مالیہ کا بیشتر حصہ عوام کی بےبودی و ترقی پر صرف کیا جائے تو ہم کہہ سکتے ہیں کہ بجٹ خسارے کا ہوتا تو کوئی ہرج نہیں ہے۔ اگر محنت کش عوام پر بار ڈالے بغیر ٹیکسس عائد کئے جاتے ہوں تو کئے جائیں۔ اور پانچ کروڑ خسارے کا بجٹ بھی بنتا ہوتا بننے دیجئے یقیناً ہم اسکا خیر مقدم کرینگے۔ لیکن ہم اپنی منزل مقصود تک پوری طرح نہ بھی پہنچ سکیں تو کم از کم ہمیں یہ سمجھنے کی تو گنجائش ہوگی کہ ہم منزل کے قریب قریب پہنچ گئے ہیں۔ ان الفاظ کے ساتھ میں اپنی تقریر ختم کرتا ہوں۔

شری سری ہری - مسٹر اسپیکر - اس بجٹ کے بارے میں جو مباحث کل سے ہو رہے ہیں ان میں اپوزیشن کی جانب سے اس بجٹ کو کئی نام دئے گئے ہیں۔ بعض لوگوں نے کہا کہ جاگیر داری بجٹ ہے۔ بعضوں نے کہا کہ یہ نظام شاہی بجٹ ہے اور بعضوں نے کہا کہ یہ سامراجی بجٹ ہے اور کسی نے کہا کہ یہ دیوالیہ بجٹ ہے۔ اس طرح بجٹ کو کئی نام دئے گئے ہیں لیکن میں صرف اتنا کہہونگا کہ یہ سنہ ۱۹۵۳-۵۴ عید آباد اسٹیٹ کا بجٹ ہے۔ یہ بجٹ دیوالیہ بجٹ نہیں ہے۔ میں سمجھتا ہوں کہ اس کے سمجھنے میں کچھ تسامح ہوا ہے۔ بتایا گیا ہے کہ ۲۳ کروڑ کا قرضہ ہے۔ سو دو کروڑ سلک رو جائیگی۔ شاید ان ہندسوں کو دیکھکر مایوس ہو گئے ہیں لیکن یہ مایوسی کچھ ٹھیک نہیں۔ مایوسی کی کوئی وجہ نہیں ہے۔ اگر کسی کو یہ معلوم ہوتا کہ حکومت کو وصول شدہ رقومات کتنی ہیں تو اسکا اندازہ ہوتا کہ حکومت کی مالیت کتنی ہے ایسی صورت میں دیوالیہ بجٹ کہنے کی ضرورت پیش نہ آتی۔ اس کے ساتھ ساتھ سامراجی بجٹ بھی کہا گیا ہے۔ سامراجی بجٹ کے سلسلہ میں یہ دلیل پیش کی گئی

ہے کہ کانگریس نے سنہ ۱۹۴۷ء میں انگریزوں کے ہاتھ سے حکومت حاصل کی لیکن جس زمانے میں جس طرز پر انگریزوں کی حکومت میں کام چلا کرتا تھا اوسی نمونے پر آج بھی کام چل رہا ہے۔ وراثت میں وہ ساری چیزیں ملی ہیں۔ سامراجی بجٹ کہنے کے یہ وجوہات پتائے گئے ہیں۔ میں بتاؤنگا کہ واقعی طور پر حکومت کانگریس کے ہاتھ میں آنے کے بعد کونسی کونسی تبدیلیاں کی گئیں۔ خاص کر حیدرآباد اسٹیٹ کے متعلق اگر ہم غور کریں تو معلوم ہوگا کہ یہ ایک مطلق العنان حکومت تھی وہ ختم ہوچکی ہے۔ اسکے بعد سب سے بڑا جو کام کیا گیا وہ یہ ہے کہ حیدرآباد اسٹیٹ کے چالیس فیصد رقبے پر جاگیر داروں کا قبضہ تھا وہ برخاست کر دیا گیا۔ یعنی جاگیری عوام پر جو زیادتیاں ہوتی تھیں وہ ختم ہو گئیں اور جاگیری ایریاز پر جو ڈبل - ٹریبل (Double-Tribble) دھارے عائد کئے جاتے تھے وہ بند ہو گئے ہیں اس طرح جاگیر داری کو ختم کرتے ہی لینڈ ٹیننسی (Land tenancy) کا قانون پاس کیا گیا اسکی وجہ سے زمینداری بھی ختم ہو گئی۔ اس بجٹ کو پولیس بجٹ کا نام بھی دیا گیا ہے۔ اس بجٹ میں پولیس کے نام سے اخراجات شامل ہونے کی وجہ سے شاید اسکو پولیس بجٹ کا نام دیا گیا ہے۔ لیکن اس پر شاید غور نہیں کیا گیا کہ پہلے پولیس کے نام سے جو اخراجات بجٹ میں شامل تھے اوسکی بہ نسبت اس سال کمی ہو گئی ہے۔ سنہ ۵۲-۱۹۵۳ء میں ایکچوول ۳ کروڑ ۹۷ لاکھ ۹۰ ہزار یعنی تقریباً چار کروڑ روپیہ پولیس کی مد کے لئے رکھا گیا تھا اور اب سنہ ۱۹۵۴-۵۵ء کے لئے تین کروڑ ۲۴ لاکھ ۵۴ ہزار روپیہ رکھا گیا ہے۔ اس طرح گویا تقریباً ۷۰ لاکھ کی کمی ہو گئی ہے۔ اور یہ تو رقم بھی جو رکھی گئی ہے وہ پچھلی ہسٹری (History) کے لحاظ سے اگر دیکھا جائے تو ناوابجی نہیں ہے۔ حیدرآباد اسٹیٹ کے لئے پولیس کی ضرورت ہے۔ پچھلے واقعات اپنے سامنے رکھیں تو معلوم ہوگا کہ واقعی طور پر حیدرآباد میں پولیس کی ضرورت ہے۔ حیدرآباد کی آبادی کے لحاظ سے اگر ہم پولیس کے اخراجات کو تقسیم کریں تو فی کس دیڑھ روپیہ خرچہ آتا ہے۔ پولیس کا کام ساری آبادی کی جان مال عزت اور جائیداد کی حفاظت کرنا ہے۔ ان تمام چیزوں کی ذمہ داری پولیس پر ہے اور اسی سے عوام کو طمانیت ہوتی ہے۔ اسلئے میں کہوں گا کہ پولیس پر جو فی کس دیڑھ روپیہ خرچہ کیا جا رہا ہے وہ زیادہ نہیں ہے۔ مثال کے طور پر ہم دیکھیں تو معلوم ہوگا کہ اگر ہم جائیداد کی حفاظت کے لئے اور مکان کی حفاظت کے لئے کسی کو ملازم رکھیں تو اوس ملازم کی تنخواہ کا مالک مکان پر جو خرچہ عائد ہوتا ہے وہ اسکو برداشت کرنا ہی پڑتا ہے ورنہ جائیداد کی حفاظت نہیں ہو سکتی اس لحاظ سے دیکھیں تو معلوم ہوگا کہ اتنے بڑے اسٹیٹ اور اتنے بڑے پاپولیشن کی حفاظت و نگرانی کے لئے پولیس کا ہونا ضروری ہے اور یقیناً ضروری ہے۔ جو رقم رکھی گئی ہے وہ زیادہ نہیں ہے۔ صفحہ (۸۳) اگر ہم دیکھیں تو معلوم ہوگا کہ سال گذشتہ اور سال پیوستہ کے مقابلہ میں تعمیری کاموں پر زیادہ رقمیں رکھی گئی ہیں مثلاً ایجوکیشن ڈپارٹمنٹ پر زیادہ خرچہ ہو رہا ہے۔ سڈیکل ڈپارٹمنٹ کے لئے زیادہ رقم رکھی گئی ہے۔ پبلک ہیلتھ

اگر یکاچر ویٹرنری - سیول ورکس - وغیرہ ان مدات بر زیادہ رقومات خرچ کئے جارہے ہیں اگر ان زائد اخراجات کو ناجائز تصور کریں یا غیر ضروری تصور کریں تو ہم اس کو صحیح نہیں سمجھیں گے۔ وجہ یہ ہے کہ یہی محکمے ہیں جو ملک میں رہنے والوں کے معیار زندگی کو بڑھانے ہیں۔ ان محکمہ جات کے ذریعہ ہم عوام کے معیار زندگی کو بڑھاسکتے ہیں۔ میں سمجھتا ہوں کہ آنریبل ممبرس نے کیپٹل اکسپنڈیچر (Capital expenditure) پر نظر نہیں ڈالی ہے۔ اگر اسکو دیکھیں تو پنہ چلیگا کہ ۵۰-۵۵ میں کیا پیٹل اکسپنڈیچر کے نام سے حیدرآباد اسٹیٹ میں ۸ کروڑ ۸۴ لاکھ ۵۶ ہزار روپے کا خرچ پایا جاتا ہے۔ کیا پیٹل اکسپنڈیچر کے معنی یہی ہیں کہ یہی جائداد ہمارے ملک میں رہنے والی ہے۔ اور اس جائداد سے حکومت کو ہمیشہ استفادہ کا جفی رہیگا۔ اس سلسلے میں میں یہ کہوں گا کہ سال گزشتہ انعام برخاست کرنے کے بارے میں بل پیش نہیں ہوا ممکن ہے کہ وہ بل سال حال پیش ہو کر اسمبلی سے منظور ہو جائے۔ اس کی وجہ سے حکومت کو ۱۴ لاکھ روپے کا فائدہ ہوگا۔ اسی طریقہ سے منصبداری کو بھی برخاست کرنے کا بل پیش ہو کر منظور ہو جائے تو اس سے بھی کافی فائدہ ہوگا۔

اس موقع پر اکثر ارکان نے پالیسی کے بارے میں کہا۔ پالیسی کے بارے میں میں یہ عرض کروں گا کہ جو حکومت ڈیموکریسی کے اصول پر بنتی ہے جو ڈیموکریسی کے اصول کی بناء پر الکشن لڑ کر برسر اقتدار آتی ہے اسی الکشن میں ہر ایک پارٹی اپنا مینی فیسٹو (Manifesto) پیش کر کے یہ بتلا دیتی ہے کہ اس جماعت کی پالیسی کیا رہیگی۔ میں یہ کہوں گا کہ کانگریس میں الکشن میں حصہ لیتے ہوئے عوام کو اپنے مینی فیسٹو کے ذریعہ یہ بتلا دیا کہ کانگریس کی پالیسی کیا رہیگی۔ بہت ممکن ہے اس پالیسی کو عمل میں لانے میں کچھ دیری واقع ہو رہی ہو۔ لیکن اس دیری کا نا جائز فائدہ اٹھاتے ہوئے اس پالیسی کے نتیجوں کا کریڈٹ (Credit) دوسری پارٹیاں نہیں حاصل کرسکتیں۔ مجھے یہ بھی کہنا ہے کہ آنریبل ممبرس نے بجٹ اور راج پرمکھ کے اڈریس کے موقع پر تقریریں کیں۔ لیکن بجٹ پر وہی تقریریں دہرائی گئیں جو راج پرمکھ کے اڈریس کے موقع پر کی گئی تھیں۔ حالانکہ دونوں تقریریں الگ الگ نوعیت کی ہونی چاہئیں۔ بجٹ کے موقع پر ملک کے اکنامک (Economic) فینانس اور اڈمنسٹریشن کے بارے میں بحث ہونی چاہئے۔ اور راج پرمکھ کے اڈریس کے موقع پر حکومت کی پالیسی کے بارے میں تقریر ہونی چاہئے۔ لیکن بدقسمتی یہ ہے کہ ہمارے ہاؤس میں اب بھی وہی تقریریں سننے میں آئیں جو پہلے ہو چکی ہیں۔

میں آنریبل فینانس منسٹر سے دریافت کرنا چاہتا ہوں کہ حیدرآباد کے محکمہ جات مال آبکاری اور جنگلات میں واقعی طور پر کس قدر بقایا جات ہیں۔ اگر یہ معلوم ہوتو صحیح





खतम करना चाहिये यह मेरी मांग है। करोड़गिरी के बारे में जो कहा गया है वह कोबी नबी बात नहीं है। जिस वक्त हम सरंजामशाही के खिलाफ आंदोलन करते थे, स्वराज्य की मांग करते थे उस वक्त से हमारी यह मांग रही है। देहात के लोग स्वराज्य के माने नहीं समझते थे लेकिन करोड़गिरी खतम करने के नारे लगाकर ही हमने लोगों में जोश पैदा किया और स्वराज्य प्राप्त करने के लिये उनको अंक जगह लाकर लड़ने को हिम्मत उन में पैदा की है। आज हमारे हैदराबाद स्टेट के १६ जिलों के देहातियों की मांग है कि करोड़गिरी को खतम कर देना चाहिये, यह सिर्फ हम लोगों की मांग नहीं है बल्कि गरीब मजदूर और काश्तकारों की भी यह मांग है। जिस लिये मैं जिस साल कस्टम के लिये कोबी प्रोवीजन रखना बिल्कुल नामुनासिब समझता हूँ। स्वराज्य के आंदोलन में हमने करोड़गिरी के नाम पर हजारों लोगों को अंकड़ा किया है। जब रजाकार सताते थे तो अपनी मां बहनों की रक्षा के लिये उनके पास उस वक्त कोबी हतियार नहीं रहते थे। उस वक्त उन्होंने पत्थर और गोफन से रजाकारों की गोलियों का मुकाबला किया था। टाकली गांव में रजाकारों ने धूम मचायी थी। उसका मुकाबला करने के लिये हजारों की तादाद में गरीब किसान और मजदूर जमा हो गये थे। उस वक्त हरिभाऊ जगताप नामी अंक किसान रजाकारों का गोफन से मुकाबला करते हुआ गेली का शिकार हुआ था। उसी वक्त अंक काश्तकार इसी तरह से बेलपुरी गांव में भी रजाकारों के मुकाबले में मारा गया था। मुझे अब याद आता है और दुःख भी होता है कि जब उसकी लाश पंचनामे के लिये लायी गयी तो अंक रजाकार ने लाश को लाथ मारी। उस वक्त हम कहते थे कि हमारी सरकार स्थापित होगी तो सब से पहले हम करोड़गिरी को खतम करेंगे। उस वक्त कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष की तरफ से भी हमको सक्थूलर भेजे जाते थे कि इसी नारे को लेकर लोगों में जागृति पैदा करो। मुझे तारीख वगैरा बराबर याद नहीं लेकिन शायद उस वक्त हमारे आज के मिनिस्टर फॉर होम यहां की कांग्रेस के अध्यक्ष थे। इसी तरह लोनी गांव में भी अंक काश्तकार मारा गया था। हमारे तालुके के अंदर रजाकारों ने कभी बार जिस आंदोलन को करनेवालों के खिलाफ गोलियां चलायीं और उसमें अपने मां, बहनों, बाल-बच्चों की परवाह न करते हुए लोगों को कुर्बानियां कीं। मैं यह कहूंगा कि अगर इसी साल हम करोड़गिरी को बंद नहीं कर सकते तो जिस हाबुस में कोबी ताकत नहीं है।

[ SHRIMATI MASUMA BEGUM (CHAIRMAN) IN THE CHAIR ]

पुलिस अक्शन के बाद करोड़गिरी को खतम करने के बारे में आग्रह किया था, लेकिन उस वक्त बताया गया कि अंक साल अनुभव होने के बाद हम उसके बारे में कुछ करेंगे। दूसरे महत्वपूर्ण सवाल को पहले हमें हल करना होगा। बाद में वेलेडी साहब की मिनिस्ट्री आयी। उसमें हमारे यहां के चार लोग थे। उनसे भी हमने दरखास्त की, तो हमें बताया गया कि जब हमारी पूरी मिनिस्ट्री हो जायगी, लोगों की मिनिस्ट्री आ जायगी तब हम करोड़गिरी को निकाल देंगे। कभी साल बीत गये और बाद में यह भी आश्वासन दिया गया कि १९५४ के आखिर तक हम करोड़गिरी को खतम कर देंगे, लेकिन मैंने अभी सुना है कि सेंट्रल गवर्नमेंट से बिजाजत लेकर अंक साल के लिये जिसको और जारी रखा जानेवाला है। मैं जिसके बिल्कुल खिलाफ हूँ। हम करोड़गिरी को बंद नहीं कर रहे हैं, जिसका बहुत बुरा असर देहात के लोगों पर हो रहा है। मैं टाकली गांव में गया था जहां के काश्तकारों ने करोड़गिरी बंद करने के आंदोलन में अपना खून बहाया था.....

شری جے وینکٹیشم (حضور آباد - محفوظ) - پوائنٹ آف آرڈر - آنریبل ممبر جوابات  
 کر رہے ہیں انکے الفاظ کلیں نہیں نکل رہے ہیں - انکو دانت نہ ہونے کی وجہ سے شائد ..

श्री रुखमाजी घोंडीबा पाटील :—यह मेरी गलती नहीं है। दांत लगानेवाले और तोड़ने-वाले की गलती है। मैं अर्ज कर रहा था कि जब मैं अुस गांव में गया तो सौ दो सौ लोग मेरा भाषण सुनने के लिये जमा हुये। मैंने उनसे कहा कि अब हमारी सरकार आजी है, शांति प्रस्थापित हो गयी है, आयंदा साल करोडगिरी भी बंद हो जायगी। लोगोंने मूझ से कहा कि आप अपनी जबान बंद करो और यहां से चले जाओ। आजादी के बाद लोगों की अिस तरह की बात सुनकर मेरा दिल ठंडा हो गया है। मुझे शर्म के मारे सर झुकाकर अुस गांव से निकल जाना पडा। लोगों ने कहा कि अपनी मां-बहनों की अिज्जत संभालने के लिये हमने अपना खून बहाया है और अब आप नाकेदारी सम्हालने के लिये और उनका साथ देने के लिये कहते हैं। १९५४ साल शुरू हो गया है, मैं सरकारसे पूछूंगा कि आप करोडगिरी कब बंद करनेवाले हैं? अिस तरह से जिंदा रहकर भी मुर्दे की तरह अिस हाअूसमें बैठना हमारे लिये शोभा नहीं देता। मैं यह कहूंगा कि करोडगिरी खतम होने से जो आमदनी कम होगी वह सेल्स टैक्स से हम पूरी करवा सकते हैं, लेकिन आज सेल्स टैक्स डिपार्टमेंट के आफीसर बदनीयती से काम करते हैं। सेल्स टैक्स से जो करोडों रुपया वसूल होना चाहिये वह आज नहीं हो रहा है। हमारे राज्य के कारोबार सेल्स टैक्स की आमदनी पर निर्भर हैं। अिसी डिपार्टमेंट के भरोसे पर हम अपने पूरे मसायल तय करनेवाले हैं। आबकारी खाता भी हमको बंद करना होगा, अुसकी भी मांग बहुत जोर की है। फिर अितना रुपया हम कहां से लायेंगे? हम और हमारे मिनिस्टर अिस सेल्स टैक्स की तरफ अच्छी तरह से नहीं देख रहे हैं। दूसरे डिपार्टमेंट्स में भी करप्शन बढ रहा है, लेकिन खामोश बैठकर हम अिन बातों को अब चलने नहीं देंगे। हमारे पूरे हाअुस के लोग अगर अिसकी तरफ ख्याल देंगे तो मुझे विश्वास है, यह बात अब नहीं हो सकती। हर मेंबर का यह फर्ज कि वह सेल्स टैक्स की तरफ अच्छी तरह से ख्याल दें। करोडगिरी टैक्स मेहनत करनेवाले काश्तकार और मजदूर देते हैं। सेल्स टैक्स अच्छी तरह से वसूल किया जाय तो वह पूरी जनता पर आयद होता है। अिसलिये असी सीधीसादी और मामूली मांग को पूरा करने के लिये मैं फायनान्स मिनिस्टर साहब और पूरे कॅबिनेट से अिस्तुदुआ करूंगा कि अिसीसाल में करोडगिरीको खतम करनेकी आप कोशिश करें। अगर नहीं होगा तो जो अिस तरह का बजट बडे बडे अफसरों के अिश्चारे पर बनाया गया है अुसको हमें आखिर आपके कहने पर पास तो करना ही पडेगा लेकिन वह हमारी पूरी गलती होगी। मैंने पूरी सरहद के आनरेबल मेंबरों से अेक दरखास्त पर दस्तखत लेकर वह दरखास्त हुकमत के पास पेश की है। अुसके बारे में ज्यादा बहस करना मैं हाअुस में मुनासिब नहीं समझता, लेकिन मैं अर्ज करूंगा कि कस्टम का मसला हमारी अिज्जत कम करनेवाला मसला हो गया है। अिस पाप्यूलर गवर्नमेंट ने अितने बडे बडे काम किये हैं तो क्या वह अिस मामूली काम को नहीं कर सकती? जागीरदार, जमीनदार, रूसुमदार, अिनामदार और साथ साथ निजाम साहब के हुक को कम करने की ताकत रखनेवाली गवर्नमेंट अगर अिस मामूली कस्टम को खतम करने के बारे में नहीं सोच सकती तो बडे ताज्जुब की बात है। ब्रंबजी और दूसरे प्रांतों में यह करोडगिरी नहीं है। लेकिन हमारे यहां अेक काश्तकार को अपने माल पर ४० या ५० रुपये कस्टम के लिये देने पडते हैं। लोग कहते हैं कि यह भी गलतबा है। अब अिस मोमलाजी की काली लकीर, अिस काले सांप की दुम



اکسائز - جنگلات وغیرہ - اون ہی سے ہماری آمدنی کا زیادہ حصہ حاصل کیا جاتا ہے اور اس کو جس طرح خرچ کیا جاتا ہے وہ تو صاف ظاہر ہے - اس کو دھرانے کی ضرورت نہیں - یہ خرچہ یا تو منصبداروں - جاگیرداروں اور نظام کو معاوضہ دینے پر خرچ کیا جاتا ہے یا اڈمنسٹریشن پر خرچ کیا جاتا - پراڈکٹیو نیچریا نیشن کنسٹرکشن کے مددات پر یہ رقم خرچ نہیں کی جاتی - دراصل دیکھا جائے تو آمدنی کے جو ذرائع ہیں یعنی اگریکلچر وغیرہ (جن کا میں نے ذکر کیا ہے) وہ انسگنیفیکینٹ نیچر (Insignificant nature) کے ہونا چاہئے اور اصل آمدنی تو انڈسٹریز کے ذریعہ ہونی چاہئے - اس قسم کے جو سورس رہنے چاہئیں وہ یہاں نہیں ہیں - اس قسم کے سورس کیپٹلسٹ کنٹریز (Capitalist countries) مثلاً انگلینڈ - امریکہ - کینیڈا وغیرہ میں ہیں - یہاں صرف زراعت پر ہی بھروسہ کیا جائے تو آمدنی کم ہوگی - ایک آنریبل ممبر نے ابھی ابھی کہا تھا کہ کانگریس نے تمام وہ باتیں جو اوس نے اپنے مینی فسٹو (Manifesto) میں لکھی ہیں اون پر عمل کر رہی ہے - میں کہوں گا کہ آپ کے مینیفسٹو میں یہ نہیں تھا کہ جاگیر داروں کو معاوضہ کے نام پر رقم دی جائیگی - اگر نہ دینے کے متعلق کوئی کہیں تو کانسیٹی ٹیوشن کی آڑ لی جائیگی اور کہا جائیگا کہ کسی پراپرٹی کو بلا معاوضہ نہیں لیا جاسکتا - ہم نظام کو صرف خاص کا معاوضہ دینگے کیونکہ سنٹرل گورنمنٹ اور نظام سے معاہدات ہیں - اس قسم کی باتیں اس میں نہیں تھیں پولیس کے سلسلہ میں یہ کہا گیا ہے کہ پہلے کچھ ایسے نا خوشگوار حالات تھے اوسکے پیش نظر ہم آئندہ احتیاط کرنا چاہتے ہیں اس لئے پولیس کے مد میں خرچ کیا جا رہا ہے - واقعہ ایسا نہیں ہے - کمیونسٹ پارٹی نے صاف صاف اپنی پالیسی کا اعلان کر دیا - الکشن کے سلسلہ میں اوس نے سنجیدگی سے اپنا لائحہ عمل عوام کے سامنے رکھا - وہ اس قسم کے اکتیویٹیز (Activities) نہیں کر رہی ہے - بلکہ جمہوری طریقہ سے آگے بڑھ رہی ہے اور جمہوریت کو فروغ دینا چاہتی ہے - لیکن چونکہ خود آپ کو اپنے پر بھروسہ نہیں اس لئے آپ کہتے ہیں کہ کمیونسٹ پارٹی یا سوشلسٹ پارٹی اس قسم کے اکتیویٹیز کر رہی ہے - عوام کے مسائل کو حل کرنے کی ہمت آپ میں نہیں ہے - آپ یہ جانتے ہیں کہ عوامی قوتیں آج ابھر رہی ہیں - بیروزگاری اور انڈسٹریز بند ہونے کی وجہ سے ہڑتالیں ہو رہی ہیں دیہاتوں میں جو لیبرس ان امپلائڈ ہو گئے ہیں وہ سٹی میں آ رہے ہیں - وہ لوگ بیروزگاری سے پریشان ہو کر اپنے جائز مطالبات کے لئے آپ سے لڑنا چاہتے ہیں - اون کو دبانے کے لئے پولیس کی ضرورت ہے - اسی فکر سے آپ پولیس پر کافی روپیہ خرچ کر رہے ہیں - کہتے ہیں کہ عوام میں ایسی چیزیں نہیں لیکن دوسری پارٹیاں اون کو بھٹکا کر ریویلیوشنری ایکشن کروانا چاہتے ہیں - لیکن اس سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ آپ کو عوام سے خطرہ ہے اور آپ اون کے مسائل حل نہیں کر سکتے - یہ صاف بات ہے - ان امپلائمنٹ کی جو بھانک ضرورت پورے ہندوستان اور حیدرآباد میں آپ دیکھتے ہیں اوس کا مقابلہ کرنے کے لئے آپ نے ایسے طریقہ اختیار نہیں کئے کہ ایک

دو سال میں اوس کا انسداد ہر سکے - ایک طرف تو اسکلڈ ان امپلائمنٹ ہے اور دوسری طرف غیر فنی لوگ یعنی لیبرس وغیرہ کو امپلائمنٹ نہیں مل رہا ہے حکومت کا یہ کہنا کہ روزگار حاصل کرنے کے لئے اتنے لوگوں نے درخواستیں دی ہیں اور اتنے لوگوں کو ہم نے روزگار دیا یہ صحیح نہیں ہے - ہزاروں لوگ ایسے ہیں جنہوں نے آپ کے پاس درخواستیں نہیں دی ہیں - واقعات ہمارے سامنے صاف ظاہر ہیں - عوام کی پرچیزنگ کیپاسٹی بڑھانے کے لئے ہم لازمی طور پر دیش کو انڈسٹریلائز (Industrialise) کرنا چاہئے - انڈسٹریز بڑھانا چاہئے تاکہ بیروزگاری کا مسئلہ حل ہو سکے - اگر انڈسٹریز کو ترقی دی جائیگی تو ایجوکیشن اور غیر تعلیم یافتہ بیروزگاروں دونوں کی ایک حد تک اس میں کھپت ہو سکتی ہے اور ہماری قومی دولت میں اضافہ ہو سکتا ہے - ممکن ہے ٹریژری بنچس کے آنریبل ممبرس یہ کہیں کہ بجٹ سے لینڈ کا مسئلہ حل نہیں ہوگا - بلکہ اس کے لئے تو ہم نے قانون لایا ہے - لیکن میں کہوں گا کہ آپ کے اوس قانون سے بھی مسئلہ حل نہیں ہو سکتا - ہزاروں لاکھوں ایکڑ زمین لوگوں نے آپس میں تقسیم کر لی ہے - بہت سے لوگوں نے اپنی زمینات کو بیچ کر ہزاروں روپیہ اپنے پاس رکھ لئے ہیں - یہ چیز آپ بھی جانتے ہیں ہم بھی جانتے ہیں - امید نہیں کی جاسکتی کہ لینڈ اکیویزیشن سے دوسرے لوگوں کو زمین ملیگی - یہ البتہ ہو سکتا ہے کہ جن لوگوں نے زمینات بیچی ہیں ان کو اپنا روپیہ انڈسٹریز میں لگانے کے لئے ترغیب دی جائے - اس سے قومی دولت میں تھوڑا بہت اضافہ ہو سکتا ہے - اور ان امپلائمنٹ بھی دور ہو سکتا ہے - اس سے قوت خرید بھی بڑھیں گی - ہمارے پلاننگ کے تحت پرائیویٹ کپٹل کو بھی انڈسٹریز میں لگانے کی ترغیب دی جانی چاہئے زمینداروں نے اپنی اراضیات بیچ کر ہزاروں روپیہ پیدا کر لئے ہیں - جاگیر دار وغیرہ کے پاس بھی دوسرے طریقوں سے جمع کیا ہوا روپیہ ہے - اس کو انڈسٹریز میں لگانے کی ترغیب دینا چاہئے - ہماری پارٹی نے یہ صاف صاف کہہ دیا ہے پرائیویٹ کپٹل کو ایک دم ضبط کر کے نیشنلائزیشن کے لئے پلان نہیں بنایا جاسکتا ہم کو رفتہ رفتہ اور تدریجی طور پر آگے بڑھنا چاہئے - پرائیویٹ سکٹر کو مدد دیتے ہوئے جس طرح کہ جاپان میں ہوا آگے بڑھنا چاہئے - اس وقت جو انڈسٹریز ہیں وہ بدیشی لوگوں کے ہاتھ میں ہیں ہٹی گولڈ مائنس اور سنگارینی کالیریز کا مینیجمنٹ انگریزوں کے ہاتھ میں ہے - سرسلک کے متعلق آپ کی جانب سے یہ کہا گیا کہ ہم نے بولا کو اس لئے دیا ہے کہ وہ اچھی طرح چل سکے - ممکن ہے پٹیل یا پنڈت جی کی سفارش لائے ہونگے حالانکہ مقامی لوگ اوس کو لینے کے لئے تیار تھے - اون سے اس کے متعلق تصفیہ نہیں کیا گیا - اون کو اس سے استفادہ کا موقع نہیں دیا گیا - بلکہ بولا صاحب کو جو ہندوستان کے ایک بہت بڑے کیپٹلسٹ ہیں اون کو موقع دیا گیا ہے - اسی طرح چار میٹار فیکٹری آئی - ال - ڈی - ڈی کے سپرد کی گئی ہے - اس وقت کوئی انڈسٹری ایسی نہیں جو یہاں کے پبلک انٹرپرائزز کے تحت ہو - چند انڈسٹریز ایسی بھی ہیں جن میں ہاف

مینیمم ہمارا اور ہاف مینیمم دوسرے لوگوں کا ہے یا اون کے سپرویزن میں ہے۔ میری معلومات کی حد تک میں کہہ سکتا ہوں کہ بہت کم انٹرنریز ایسی ہیں جو پرائیویٹ سکٹر سے تعلق رکھتی ہیں۔ اگر یہی صورت حال رہے تو انٹرنریزیشن ہو سکتا ہے اور نہ ملک آگے بڑھ سکتا ہے۔

میں خاص طور پر بیسک ایجوکیشن ( Basic Eduaction ) کی جو گورنمنٹ پالیسی ہے اس پر تبصرہ کرنا چاہتا ہوں۔ عوام کو یہ طریقہ بتایا گیا ہے ہم اسٹوڈنٹس ( Students ) کو ہاف ٹائم ( Half time ) پڑھائینگے اور ہاف ٹائم مختلف پیشوں مثلاً بڑھئی، درزی، لوہار، کمہار جولائی وغیرہ کی تعایم دیں گے۔ گویا کم سن بچوں کو جن کی عمریں ۱۰-۱۱ سال کی ہیں اس کی تعلیم دلانا مقصود ہے میں پوچھنا چاہتا ہوں کہ کیا اس نمونہ پر تعایم دیجائے تو کوئی صنعتی ترقی ملک میں ہو سکتی ہے۔ اس طرح کی ترغیب دیکر آپ کس قسم کا سماج تیار کرنا چاہتے ہیں۔ کیا اس کے بعد سلف سفیشیٹ ( Self-sufficient ) ہو سکیں گے اگر آپ کا خیال یہ ہے کہ وہ سلف سفیشنٹ ہوں گے جیسا کہ کہا جا رہا ہے تو میں کہوں گا کہ یہ ساری باتیں کہنے اور سننے کی ہیں۔ عام فہم آدمی کو تو یہ باتیں اچھی معلوم ہوں گی لیکن اس کے نتائج برے نکلیں گے۔ یہ کوئی سائنٹیفک ( Scientific ) طریقہ نہیں ہے کہ محض لیبر کی تعداد کو بڑھایا جائے۔ ایسے بچے جو نکلیں گے وہ چائلڈ لیبر میں آئیں گے جن کی جسمانی حالت بھی اچھی نہ ہوگی اور وہ کسی فن میں بھی تیار نہ ہو سکیں گے۔ اور اگر کوئی اپنے خاندانی پیشے سے سیکھنا چاہے تو وہ خود اپنے گھر میں سیکھ سکتا ہے۔ لیکن آپ ٹریننگ دیں گے تو ان کی صحت دن بدن گرتی جائیگی۔ جن پیشوں کی ترغیب دی جا رہی ہے آخر وہ کونسے پیشے ہیں۔ اس کے کیا اثرات ہوں گے اس پر غور کرنا ضروری ہے۔ سلف اکائی ( Self economy ) پالیسی جو پہلے زمانے میں تھی کیا آج ہم دستی مشاغل سے آج کی ضروریات کی تکمیل اسی طرح کر سکتے ہیں۔ آج جبکہ ساری دنیا ایک ملک کے مانند ہے ایک گھر کے مانند ہے۔ حمل و نقل کے ذرائع بڑھ گئے ہیں۔ آمد و رفت کی سہولتیں بڑھ گئی ہیں ایسی صورت میں ایسے زمانے میں کیا ان باتوں سے کوئی فائدہ ہو سکتا ہے۔ اس سے محض یہ ہوگا کہ کامپیٹیشن ( Competition ) میں ہم ایک اور اضافہ کر سکتے ہیں۔ لوگوں کو ہم بیک ورڈ ( Backward ) یعنی رجعت پسندی کی طرف لے جا رہے ہیں۔

آپ نے اپنے اصولوں کو گاندھین تھیری ( Gandhian Theory ) وغیرہ وغیرہ کتنے پیارے پیارے نام دئے ہیں لیکن اس کا خیال نہیں کیا جاتا کہ اگر ہم ان اصولوں پر آج ان حالات میں عمل کریں تو ہماری حالت اور بدتر ہو جائیگی۔ اس لئے میں عرض کروں گا کہ مجھے ایجوکیشن کی اس پالیسی سے بالکل اختلاف ہے جو آئندہ تمام اضلاع میں پھیلائی جانے والی ہے۔ مجھے اس میں بھی شبہ ہے کہ یہ سرسبز ہوگی۔

میں سمجھتا ہوں کہ یہ اسکیم سر سبز نہیں ہوسکتی ۔ بجائے اس کے کہ میکانائز طریقہ پر اپنی افیشینسی کو بڑھائیں ہم پیچھے کی طرف جارہے ہیں۔ اس سے ہماری خوش حالی نہیں بڑھ سکتی ۔ دوسری چیز یہ ہے کہ وہاں شفٹ سسٹم ( Shift system ) نافذ کیا جا رہا ہے یعنی دو شفٹ میں تعلیم دی جائیگی ۔ صبح میں ایک بیاچ ( Batch ) اور دوپہر میں دوسرا بیاچ ۔ اس طرح گورنمنٹ کا ارادہ ہے کہ کم از کم خرچ میں زیادہ سے زیادہ لوگ تعلیم حاصل کرسکیں اور ساتھ ساتھ پیشہ ورانہ تربیت بھی ہو جائے لیکن کیا اس طرح عمل کیا جائے تو ٹیچرس پر بہت زیادہ بار نہیں ہوگا ۔ ایک بیاچ کو صبح سے شام تک پڑھانے اور ایک بیاچ کو صبح میں اور دوسرے بیاچ کو شام میں اس طرح دو بیاچس کو صبح سے شام تک پڑھانے میں بہت بڑا فرق ہے ۔ یہ کوئی سیکل نہیں ہے کہ صبح سے شام تک میں سوار رہا اور شام میں زید کو دیدیا یہ مشنری ( Machinery ) نہیں ہے ٹیچر کا دماغ ہے ۔ اتنا زائد بار کیا وہ برداشت کرسکے گا ۔ میں سمجھتا ہوں کہ یہ اس کی قوت برداشت سے باہر ہے ۔ انسان کے ساتھ مشین کا سا سلوک کرنا کچھ ٹھیک بات نہیں ہے ۔ میرا پرہوزل یہ ہے کہ اگر آپ کو تعلیم دینا ہے تو ٹکنیکل ایجوکیشن دیجئے جیسے اگریکلچر ۔ ویٹرنری ۔ مڈیکل وغیرہ ایسے لڑکوں کو اس میں شریک کیجئے جو دسویں کلاس تک پڑھے ہوں ۔ ان کو ان سبجکٹس ( Subjects ) میں تعلیم دلا کر ڈپلوما ( Diploma ) دیا جاسکتا ہے ۔ انٹر ( Inter ) کے بعد کسی کورس ( Course ) کو لینے کے بجائے میٹرک کے بعد ان کو ان مضامین کی تعلیم کے لئے داخلہ ملنا چاہیئے ۔ ایم ۔ بی ۔ بی ۔ ایس بننے کے لئے ۲۴ - ۲۵ سال تک انتظار نہیں کیا جاسکتا ملک کے حالات کے لحاظ سے یہ کہا جاسکتا ہے کہ میٹرک کے بعد تین سال کا کورس رکھ کر بی ۔ اے کی ڈگری دیدی جائے تاکہ ہم کم وقت میں زیادہ سے زیادہ ٹکنیشن ( Technicians ) پیدا کرسکیں اور اپنے ضروریات زندگی کو پورا کرسکیں ایسی صورت میں ٹکنیکل ایجوکیشن کو فروغ دینے میں دنیا کے ساتھ ہم بھی آگے بڑھ سکیں گے ۔ ورنہ زمانہ تو آگے بڑھ جائیگا اور ہم گاندھین فلاسفی ( Gandhian Philosophy ) کو لیکر چلیں تو اس سے نقصان ہوگا ۔ اور بیاک ورڈ ہو جائیں گے ۔

The bell was rung.

میں سمجھتا ہوں کہ میں نے زیادہ وقت نہیں لیا ہے ۔ پانچ منٹ میں ختم کردونگا ۔ اسکے بعد میں لوکل باڈیز کے تعلق سے گورنمنٹ کی جو پالیسی ہے اس پر تبصرہ کرونگا ۔ میونسپالٹیز ( Municipalities ) میں ٹاؤن کمیٹیوں کے نامینیشنس ( Nominations ) کے بارے میں احتجاج کیا گیا اور ریپریزنٹیشن ( Representation ) کئے گئے تو یہ یقین دیا گیا کہ اسپر ہمدردانہ غور کیا جائیگا ۔ دیشپانڈے صاحب ۔ راجہ رام صاحب اور دوسرے آفریل میں چھپے



سابقہ منسٹر صاحب سے ملے تھے تو انہوں نے چیف منسٹر صاحب سے مشورہ کے بعد یہ وشواس دلایا تھا اور یہ وعدہ کیا تھا کہ آئندہ جب نامینیشنس ہونگے تو اتنی احتیاط برقی جائیگی کہ جو پارٹی میجاریٹی (Majority) میں ہے اسکو میناریٹی (Minority) میں لانے کی کوشش نہ کی جائیگی۔ اور دوسری بات یہ بتائی گئی تھی کہ نامینیشنس میں جو گورنمنٹ آفیسرس ہیں وہ غیر جانب دار رہینگے۔ اس کا وشواس دلایا گیا تھا۔ لیکن آج جب واقعات کو سامنے رکھا جاتا ہے کہ کس طرح وشواس دلا کر اوس سے پھر گئے ہیں اور جب اس طرف توجہ دلائی جاتی ہے تو اس پر کوئی توجہ نہیں کی جاتی۔ ہم آج دیکھ رہے ہیں کہ نامینیشن میں ایسے لوگوں کو لیا جا رہا ہے جو کانگریس کے پٹھو ہیں اسکا نتیجہ یہ ہے کہ حال حال میں ویملواڑہ میں جو الکشنس ہوئے وہاں پی۔ ڈی۔ ایف نے نشستیں حاصل کیں۔ اور دو نشستیں کانگریس کو ملیں اسکے باوجود ایک آدمی کو کسی طرح بھٹکا کر اپنے میں ملا لیا گیا۔ جہاں کہیں کانگریس نے نامینیشن کیا وہ پورے گورنمنٹ کے نمائندہ تھے اور ان لوگوں نے اپنی وفاداری کا ثبوت دیا۔ اسی طرح بھونگیر وغیرہ کی مثالیں گذشتہ سیشن میں دی گئی ہیں۔ میں اس مسئلہ کو اسلئے دہرا رہا ہوں کہ وشواس دلانے کے بعد بھی یہ سلوک کیا گیا ہے۔ کورٹلہ تعلقہ جگتیاں میں ایسے لوگوں کو نامینیشن میں لیا گیا ہے جو زمینات بیچ کر کورٹلہ آئے ہیں اور مستاجر آبکاری ہیں جگتیاں کے یہ صاحب کانگریس پریسیڈنٹ کے عزیز ہیں اسلئے انکو نامینٹ (Nominate) کرایا گیا ہے۔ نہ صرف یہ بلکہ انکے گھاتے کو بھی نامینٹ کیا گیا ہے۔ حالانکہ مقامی اعتبار سے انکو کوئی تعلق نہیں ہے۔ بڑے مستاجر کو نمائندگی دی گئی تو انکے گھاتے کو بھی نمائندگی دی گئی۔ کیا اس گاؤں میں کوئی پبلک نمائندگی کرنے والے اوس گاؤں کے آدمی نہیں تھے۔ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ وہاں کے کانگریس آرگنائیزرس نے جس طرح کا مشورہ دیا اس پر عمل کیا گیا۔ تعاون عمل کا یقین دلانے کے باوجود اس طرح کا عمل کیا گیا ہے۔ وڑپلی میں نامینیشن ہوا۔ وہاں یہ کیا گیا کہ ایک پولیس سب انسپکٹر کو نامینیشن میں لیا گیا۔ کیا یہی پبلک کی نمائندگی ہے۔ وشواس دلانے کے باوجود میونسپالٹی میں پولیس سب انسپکٹر کو نمائندگی دی گئی ہے۔ کیا یہ طریقہ صحیح ہو سکتا ہے۔

مینسٹر فار فائنانس، کسٹمز، سٹاڈیسٹیکس، کامرس اینڈ ڈیڈسٹریز. (شری. وی. کے. کورڈکار) :—جس شخص کے بارے میں آپ بتا رہے ہیں وہ ابھی کام پر رخصت ہے کیا؟ یا اس نے پنشن لے لیا ہے؟

شری جے آنند رائے: میں تو اسکا امتیاز نہ کر سکا کہ وہ برسر خدمت ہیں یا کیا۔

چیف منسٹر (شری بی۔ رام کشن رائے) وہ رٹائر (Retire) ہونگے۔

شری جے آنند رائے: جی ہاں۔ میں سوچتا ہوں ایسی صورت میں جمہوریت کو کس طرح فروغ ہو سکتا ہے۔ پبلک کے نمائندوں کو اپنے کی جو پالیسی حکومت کی

ہونی چاہئے وہ نہیں ہے۔ ایسی صورت میں اپوزیشن کا تعاون کس طرح حاصل کیا جاسکتا ہے۔ میں حکومت سے کہوں گا کہ وہ اس بارے میں توجہ دے۔ کیونکہ یقین دے جانے کے باوجود یہ چیزیں نہیں ہو رہی ہیں۔ کمیٹی کے ڈسیشن کی برابر تعمیل نہیں ہو رہی ہے۔ اس جانب توجہ دینا ضروری ہے۔ اتنا کہتے ہوئے میں اپنی تقریر ختم کرتا ہوں۔

\* شری جی۔ سری راملو (منتہنی) میڈم سپریم۔ آج ایوان کے سامنے ۵۵-۵۴ ع کا بجٹ پیش ہے۔ اس پر تقریر کرتے ہوئے ابھی ابھی اس جانب کے ایک آنریبل ممبر نے یہ اعتراض کیا کہ بجٹ پر جو تقریریں ہو رہی ہیں وہ وہی پرانی رٹ ہے بہتر ہوتا اس کا ایک ریکارڈ تیار کر لیا جا کر وقتاً فوقتاً پچایا جاتا۔ میڈیم اسپیکر سر۔ اس سلسلے میں میں یہ عرض کر دینا چاہتا ہوں کہ ہمارے سامنے راج پرمکھ کا اڈریس آیا۔ اس کے بعد سپلیمنٹری ڈیمانڈس آئے۔ اس کے بعد بجٹ اسپیکر ہوئی۔ اس کے بعد یہ بجٹ ہمارے سامنے آیا۔ ان چاروں میں بھی ہمیں وہی باتیں نظر آئیں جن سے معلوم ہوتا ہے کہ کانگریس کس رخ چل رہی ہے۔ ان چاروں میں بھی تقریباً وہی چیزیں ہیں۔ اس لئے اس پر بحث کے دوران میں وہی باتوں کا ذکر کرنا کوئی تعجب کی بات نہیں کیونکہ کوئی شخص کتنی بھی معلومات رکھنے والا ہو اس کو اس دائرہ میں آنا پڑتا ہے۔ اس سلسلے میں میں پنڈت جواہر لال نہرو کا کوٹیشن کوٹ کرتا ہوں۔ انہوں نے ریسرچ لیبارٹری (Research Laboratory) کا افتتاح کرتے ہوئے فرمایا کہ میں بمبئی سے آ رہا ہوں۔ اور آتے ہوئے تین چار میٹنگس میں مجھے سائنس اور سائنس کے کاموں پر بھی اظہار خیال کرنا پڑا۔ تو یہ کوئی اچنبہ کی بات نہیں اگر وہی معلومات اور سنسنس کا یہاں اعادہ کروں۔ یہ اپالوجی (Apology) پیش کرتے ہوئے انہوں نے تقریریں کی۔ یہاں چیف منسٹر ہوں یا کوئی اور جب اسمبلی میں کوئی مسئلہ اسی رنگ میں آتا ہے تو ان ہی باتوں کا اعادہ کرنا پڑتا ہے۔ اس کا یہ مطلب نہیں کہ پورے کے پورے پیرا گرافس (Paragraphs) دہرائے جائیں۔ میرا یہ منشاء نہیں ہے۔ میں یہ رزرویشن رکھ رہا ہوں۔ آنریبل ممبر کے اعتراض کا یہ جواب دیتے ہوئے میں آگے بڑھتا ہوں۔

مجھے اس بجٹ کو سراہنے میں کوئی شک نہیں ہے۔ میں آنریبل فنانس منسٹر کی بہت عزت کرتا ہوں۔ وہ تیاگی ہیں۔ دیش کے لئے انہوں نے بہت کام کیا ہے۔ وہ عوام کے کشٹ کو دور کرنے کے خیالات رکھتے ہیں۔ مجھے آنریبل فنانس منسٹر کو دھنیاواد دینے میں کوئی ہچکچاہٹ محسوس نہیں ہوتی۔ مگر اس بجٹ کے تعلق سے ان کا تیاگ ان کا کشٹ کہاں تک بجٹ پر اثر کر سکتا ہے میں اس کو سمجھ نہ سکا۔ شخصی طور پر میں ہر روز ان کے گھر جا کر بھیٹ کر سکتا ہوں۔ لیکن بجٹ کو وہ کہاں تک بدل سکے ہیں مجھے یہ پوچھنا ہے۔ ابھی ابھی اس جانب سے ایک عمر رسیدہ آنریبل ممبر نے بڑے جذبہ کے ساتھ تقریر کی اور انہوں نے ہم سے زیادہ کانگریس پر کیچڑ اچھالا۔ انہوں نے کانگریس سے متعلق ہم سے زیادہ کہا۔ یہ حقیقت ہے کہ کانگریس کے خلاف

کشٹ ہو رہا ہے۔ ایسا نہونا چاہئے تھا۔ آخر میں انہوں نے دھنیواد دیا۔ اس جانب کے آرٹیل ممبرس میں یہی بات ہے کہ کبھی گرم ہو جاتے ہیں اور کبھی نرم ہو جاتے ہیں اس کے برخلاف ہم صرف حقیقت کو جانتے ہیں اور حقیقت ہی کو کہنا چاہتے ہیں۔ اسی پر چلنا چاہتے ہیں۔ اس میں سائیڈ ٹراک کرنے کی ضرورت ہم محسوس نہیں کرتے۔ جو کچھ ہے صاف سیدھا بولتے ہیں۔ یہاں ۱۰ کی میجاری سے آپ جو حکومت کر رہے ہیں جس کی وجہ سے اپوزیشن کی بات کو ایک آنہ بھی نہیں مانتے خیر یہی آپ کی ڈیموکریسی ہے۔ لیکن جب ٹراونکور یا آندھرا میں کچھ کشٹ سامنے آتا ہے تو اس وقت آپ اپوزیشن سے ملنا چاہتے ہیں۔ اس وقت اپوزیشن کا خیال آتا ہے۔ اس وقت ملکر کام کرنے کا جذبہ پیدا ہوتا ہے۔ کیا ہی اچھا ہوتا اگر یہی ملکر کام کرنے کا جذبہ اس وقت بھی آپ میں رہتا جب کہ آپ میجاری میں ہوں۔ کیا ہی اچھا ہوتا اگر آپ ملے جلے خیالات کے ساتھ اپنا مینی فسٹو بناتے۔ اس لئے کہ ہم تو کامن میان (Common man) اور اس شخص کو فائدہ پہنچانے کی کوشش کرتے ہیں جو جھونپڑی میں بیٹھا ہوا ہے۔ نازک وقت پر تو آپ کو اپوزیشن سے سہیوگ حاصل کرنیکا خیال آتا ہے۔ لیکن اگر میجاری میں رہکر آپ اسی سہیوگ کے جذبہ سے کام کرتے تو ہم آپ کو ضرور سراہتے۔ میں اس بجٹ کو کس زبان سے سراہوں۔ میں کئی دنوں تک اس بارے میں چھان بین کرتا رہا۔ لیکن مجھے ایسی کوئی چیز نظر نہیں آئی جس سے یہ بجٹ عوامی بجٹ معلوم ہو سکے۔ یہ بات تو نہیں ہے کہ مجھے سراہنے کی بات نہیں آتی۔ لیکن اس میں خود کوئی ایسی بات نظر نہیں آتی جس کی وجہ سے اس کو سراہا جاسکے۔ اس سال ریونیو اسٹس (Revenue Assets) ۲۸ کروڑ ہیں۔ اس میں سے نیشن بلڈنگ کے کاموں پر ۱۳۷۰ فیصد ہیں تو میں کس منہ سے اس کی تعریف کروں۔ آدھے سے زیادہ رقم تو اسٹامپ ڈیوٹی اور اسٹامپ بلشمنٹ پر خرچ ہو رہی ہے۔ ایسی صورت میں اس کو کس طرح عوامی بجٹ کہا جاسکتا ہے۔ آج کے بڑھتے ہوئے مسائل کے لحاظ سے آپ نے نیشن بلڈنگ کے کاموں کو کتنی اہمیت دی ہے اس کا اندازہ نہیں ہو جاتا ہے۔ اہم مسئلہ کو پہلے ترجیح دینا چاہیے اور جو دوسرا اہم مسئلہ ہے اس کو بعد میں ترجیح دینا چاہیے۔

First things must be given the first place and second things second.

لیکن یہ اصول بجٹ کے تیار کرنے میں ملحوظ نہیں رکھا گیا ہے۔ بجٹ تو ہر سال تیار ہوتا ہے۔ مگر نظم کے تحت یہی تیار ہوتا تھا اب بھی تیار ہوتا ہے۔ لیکن یہ آپ کے مینی فسٹو یا آئیڈیالوجی (Ideology) کے لحاظ سے نہیں ہے۔ کیونکہ اس کو کیسٹ کے تحت نہیں بنایا ہے۔ وہی کو جڑی جو سیکریٹریٹ سے پک کر آئی اس کو جالیا گیا اور اس کا ذائقہ لے رہے ہیں۔ آپ کے مینی فسٹو میں کیا تھا آپ کی ان سہیو میں کیا تھا۔ یہ سہیو نہیں دے رہے تھے۔

کے سامنے کی تھیں۔ کیا وہ باتیں بھول گئے۔ اگر ان باتوں کو ملحوظ رکھ کر انہیں بجٹ میں نچوڑا جاتا تو اس سے عوامی مشکلات دور ہوتیں۔ لیکن اس کے برعکس ہم آج بجٹ میں دیکھ رہے ہیں وہی اسٹیبلشمنٹ چار جس میں وہی

Pay of officers, Travelling Allowances, House rent Allowances, Menial staff etc.

ہے۔ ہر ایٹم میں ہم یہی دیکھ رہے ہیں۔ لیکن عوام کی ترقی پر کیا خرچ ہو رہا ہے یہ بات کہیں نظر نہیں آتی۔ یہاں سے وہاں اسٹیبلشمنٹ ہی اسٹیبلشمنٹ پر خرچہ ہو رہا ہے۔ مثال کے طور پر میں وہیکلس ٹیکس (Vehicles Tax) کے بارے میں عرض کرونگا کہ اس سے آمدنی ایک لاکھ ۱۶ ہزار بتائی گئی ہے۔ اور اس کے لئے برابر اتنی ہی رقم خرچ کی جاتی ہے ایسی صورت میں میں پوچھتا ہوں کہ اتنی رقم صرف کر کے اتنی ہی رقم وصول کرنا کہانتک مناسب ہے۔ بلا وجہ وصول کرنے کی درد سری کیوں مول لی جائے۔ اسی طرح دوا خانوں کا اسٹیبلشمنٹ ہے۔ دوا خانوں کے اسٹاف پر تقسیم کی جانے والی دواؤں کی قیمت سے زیادہ خرچ کیا جاتا ہے۔ یہ اندھیری کوٹھری میں کیا ہو رہا ہے۔ جس طرح راج پرمکھ نظام کے دور حکومت میں لوگوں کو فائدہ پہنچانے کے لئے من مانے خرچ کیا جاتا تھا اسی طرح اب بھی آنکھ بند کر کے اندھیری کوٹھری میں عمل ہو رہا ہے۔ آپ کے دلوں میں جو جذبہ ہے اس کے تحت آپ اپنا مینیفیسٹو تیار کرتے ہیں۔ لیکن بجٹ اور راج پرمکھ کے اڈریس کی جانب دیکھیں تو وہ جذبہ ہمیں نظر نہیں آتا۔ سکرٹریٹس کے لئے اتنا خرچ ہوتا ہے بے آف منسٹرس پر اتنا خرچ ہوتا ہے۔ گو تین منسٹرس نکال دئے گئے ہیں لیکن ایک نیا ڈپارٹمنٹ ڈائریکٹوریٹ آف انسپکشن اینڈ اکونٹس کھولا گیا ہے۔ اس کے لئے ۵ لاکھ روپے رکھے گئے ہیں۔ ٹینسی کمیشن کے لئے ۱۰ لاکھ کا ایک نیا مد آگیا ہے۔ میں یہ نہیں کہتا کہ یہ نہیں ہونا چاہئے تھا۔ اگر عزم ہو تو سب کچھ ہو سکتا ہے۔ جو باتیں ہوتی ہیں تو وہ ہو کر ہی رہینگی۔ اگر نہیں ہوگی تو آپ کے بقا کا سوال بھی پیدا نہیں ہوتا۔ جو کچھ کیا جاتا ہے وہ سمجھ بوجھ کر ہی کیا جاتا ہے۔ آئریبل ممبر نے کہا کہ مینی فیسٹو ہمارے سامنے ہے۔ لیکن ۲۲ ہزار دیہاتوں میں جو کسان اور ان کے بیل تکالیف میں مبتلا ہیں زمین کی پیداوار کی حالت گھٹ رہی ہے انہیں فروغ دینا آپ کے مینی فیسٹو میں ہے۔ ایک آئریبل ممبر نے کہا کہ ہمارا بجٹ بالکل اسی نمونے پر بنا ہے۔ تو کیا میں یہ سمجھوں کہ آپ کا مینیفیسٹو یہی ہے۔ جس کا آئینہ یہ بجٹ ہے۔ کیا آپ وہی نظام کی اندھیری کوٹھری میں رہنا چاہتے ہیں جس کے خلاف آپ اور ہم لڑے ہیں۔ اسی زمانے کے بجٹ کو آپ نے اپنے مینی فیسٹو سے جوڑ دیا۔ اس طرح سے کہ پولیس ایکشن سے پہلے کا راج اور یہ بجٹ دونوں برابر ہیں اس سے تو یہی ثابت ہونا ہے۔ اسلئے میں کہوں گا کہ بجٹ مینی فیسٹو کے مطابق ہے کہنا زمین اور آسمان کو ملانا ہے۔ آپ یہاں صرف ۴۱ فیصد نیشن بلڈنگ پر خرچ کر رہے ہیں تقریباً دو تہائی حصہ اپنے اڈمنسٹریشن اور پولیس وغیرہ پر خرچ کر رہے ہیں۔ کیا یہ وہی ڈھانچہ نہیں ہے۔ کیا اسی کے

آپ نے الکشن لڑا تھا ۔ خواہ وہ جائز طریقوں سے ہوا ہو یا ناجائز طریقوں سے اس کا جو مینیفیسٹو تھا کیا یہی تھا ۔ اس سے تو معلوم ہوتا ہے کہ ہماری حکومت لرز رہی ہے اور کسی نہ کسی دن ٹوٹ کر رہیگی ۔ ہم دیکھتے ہیں کہ ۵۲-۵۱ میں ریونیو انکم ۲۹۸۷۴۹۰۰۰ ہے ۵۲-۵۳ میں ۲۶۶۳۹۴۰۰۰ ریونیو انکم ہوتی ہے ۔ ۵۴-۵۳ ع میں ۲۵۹۲۵۰۰۰۰ ریونیو انکم ہوتی ہے ۔ اسکے بعد ۵۵-۵۴ ع کا اسٹیمپس ہمارے سامنے پیش ہوتا ہے ۔ اسٹیمپس کے بارے میں مجھے یہ کہنا ہے کہ گو اسٹیمپس بنانے والے بڑے بڑے ڈگری ہولڈرس بڑے تجربہ کار ہوتے ہیں لیکن اسٹیمپس کبھی درست نہیں ہوتے ۔ اگر کسی پھٹانے بیچنے والے کے سامنے پیش کریں تو وہ بھی یہی کہیگا کہ یہ کس طرح کا اسٹیمپ ہے ۔ اتنے بڑے بڑے ایٹمس دئے گئے ہیں ۔ بڑے بڑے ہیڈنگس ( Headings ) دئے گئے ہیں ۔ جلد بندی کی گئی ہے ۔ لیکن اسٹیمپ اور ریوائٹڈ اسٹیمپ میں زمین آسمان کا فرق ہو جاتا ہے ۔ وہ بھی کہیگا کہ صحیح اعداد معلوم کرنے کی تمیز ہی نہیں ۔ اس میں شک نہیں کہ اسٹیمپ میں کچھ کمی زیادتی کی گنجائش ہوسکتی ہے ۔ لیکن اسٹیمپ اور حقیقی خرچ میں زمین آسمان کا فرق ہو جاتا ہے ۔ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ حالات کا صحیح جائزہ نہیں لیا جاتا ۔ تنگبھدرا پراجکٹ کے پاس کوئیریز ( Quarries ) کا اسٹیمپ بنایا جاتا ہے تو اگر سافٹ سوائیل ( Soft soil ) کی جگہ ہارڈ سوائیل ( Hard soil ) رکھ دیا جائے تو اس ایک لفظ کے اندازے کی غلطی سے لاکھوں کا فرق آ جاتا ہے ۔ کیونکہ وہاں جا کر تو نہیں دیکھا جاتا یہیں بیٹھے بیٹھے اندازہ لگایا جاتا ہے جس کے نتیجہ کے طور پر لاکھوں کے فرق سے اسٹیمپ بنایا جاتا ہے ۔

*The House then adjourned till Half Past Two of the Clock on Wednesday, the 10th March, 1954.*

